UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180837

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 H28U Accession No. G.H. 2911

Author हरिकृष्ण 'प्रेमी'

Title उद्धार १९५६

This book should be returned on or before the date last marked below.

उ द्धा र

हमारा अन्य नाट्य-साहित्य

विष-पान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२)
स्वप्न-भंग	"	१॥)
उद्धार	"	१॥)
छाया	"	१)
शपथ	"	२॥)
शतरंज के खिलाड़ी	"	१॥)
शक-विजय	उदयशंकर भट्ट	३)
अ-पूर्व बंगाल	बी० वी० वरेरकर	१।)
आधुनिक एकांकी	विजय चौहान	२)
समर्पण	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'	१।॥)
वितस्ता की लहरें	लक्ष्मीनारायण मिश्र	१।)
मानव प्रताप	देवराज 'दिनेश'	१॥)
यशस्वी भोज	देवराज 'दिनेश'	१॥)
हर्षवर्द्धन	बैकुण्ठनाथ दुग्गल	१।)
उर्मिला	पृथ्वीनाथ शर्मा	१)
सुभद्रा-परिणय	वीरेन्द्रकुमार गुप्त	२)
पग-ध्वनि	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	१॥)
शक्ति-पूजा	वी० मुखर्जी 'गुंजन'	१।)
शान्ति-दूत	देवदत्त 'अटल'	१।)
समाज के स्तम्भ (इब्सन)	सीताचरण दीक्षित	२)
आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२)
बादलों के पार	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३)
आदिम-युग	उदयशंकर भट्ट	४)
विश्वामित्र और दो भाव-नाट्य	उदयशंकर भट्ट	३)
मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२॥)
एकांकी-समुच्चय	जयनाथ 'नलिन'	३)
सफर की साथिन	रामशरण शर्मा	१।॥)
रेलगाड़ी के डिब्बे	अरुण, एम ए.	२)
ऐतिहासिक दृश्य (सचित्र)	श्यामलाल	१॥)
बूढ़े बच्चे (सचित्र)	रामचन्द्र तिवारी	१।)
गधे	हबीब तनवीर	१।)
गार्गी के बाल-नाटक	परितोष गार्गी	१।)

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

उद्धार

[ऐतिहासिक नाटक]

लेखक
हरिकृष्ण 'प्रेमी'

चतुर्थ संस्करण

१९५६
आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

मूल्य एक रुपया आठ आना

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

लेखक की अन्य रचनाएँ

नाटक

छाया	(सामाजिक)	
बंधन	(सामाजिक)	१)
विष-पान	(ऐतिहासिक)	१॥)
उद्धार	(ऐतिहासिक)	१॥)
स्वप्न-भंग	(ऐतिहासिक)	१॥)
शपथ	(ऐतिहासिक)	२॥)
रक्षाबंधन	(ऐतिहासिक)	१=)
शिवा-साधना	(ऐतिहासिक)	२)
प्रतिशोध	(ऐतिहासिक)	२)
आहुति	(ऐतिहासिक)	१)
प्रकाश-स्तम्भ	(ऐतिहासिक)	२)
बादलों के पार	(एकांकी नाटक)	३)

कविता

रूप-दर्शन (सचित्र)	६)
वन्दना के बोल	२)
आँखों में	२॥)

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

मुद्रक
उग्रसैन दिगम्बर
इण्डिया प्रिन्टर्स
एस्प्लेनेड रोड, दिल्ली-६

प्रिय विश्व और जीवन को--

है तुम्हारे पास आँखें, चाहिए फिर भी उजाला।
मार्ग में जग के पड़ेगा कण्टकों से नित्य पाला॥
मैं जलाता जा रहा हूँ अक्षरों की दीप-माला।
देखना, होने न देना, देश का आकाश काला॥

मैं पिता हूँ—किन्तु तुम
इस देश की संतान हो।
जिन्दगी ऐसी जियो
जो देश का अभिमान हो॥

हरिकृष्ण 'प्रेमी'

सरस्वती के मन्दिर में

एक सुदीर्घ बिछोह के पश्चात् फिर 'प्रेमी' एक पुष्प लेकर सरस्वती के मन्दिर में आया है। 'प्रेमी' की हृदय-वाटिका में जब वसंत का आशीर्वाद था, अनेक कलियाँ सुमन बनी थीं और चयन करके थाल सजाकर देवी के चरणों में चढ़ाने वह आ ही रहा था कि भयानक आँधी आई और उस आँधी में वे पुष्प उड़ गए।

पंजाब की खूनी तूफ़ानी घड़ियों में मुझे भी अपने कार्य-क्षेत्र पंजाब को छोड़ना पड़ा और मेरी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति अप्रकाशित पुस्तकों की पांडुलिपियाँ भी वहीं रह गईं। मेरा कवि और लेखक तन से मूर्छित-सा पड़ा हुआ था। सूखी हुई हृदय-वाटिका को फिर से 'नयन-नीर' से सींचकर हरा किया है। इसका पहला पुष्प यह 'उद्धार' है।

'उद्धार' ऐतिहासिक नाटक है। मनुष्य की लम्पटता और स्वार्थपरता ने चित्तौड़-दुर्ग का विध्वंस किया, अपनी आन-रक्षा के लिए राजपूत वीरों ने केसरिया बाना पहनकर रण-भूमि में प्राण दिये और वीरांगना पद्मिनी ने अन्य वीरांगनाओं सहित जौहर की ज्वाला में प्रवेश किया! इस अमर साके में सिसौदिया राज-वंश के सभी प्राणी काम आ गए--शेष रहे महाराणा लाखा के द्वितीय पुत्र अजयसिंह, जिन्हें मेवाड़ का पुनः उद्धार करने के लिए जीवित रहने दिया गया था और युवराज अरिसिंह का नवजात शिशु 'हमीर', जो एक झोंपड़ी में अपनी

माँ की गोद में पल रहा था। यही हमीर 'उद्धार' का नायक है। किस प्रकार हमीर ने 'जननायक' बनकर मेवाड़ को 'स्वाधीन' बनाया यही इस नाटक का विषय है।

'उद्धार' की घटनाएँ ऐतिहासिक हैं—किन्तु वर्तमान राजनीति और समाजनीति की अनेक उलझनों का समाधान इसमें है। मेरा देश स्वतन्त्र हो गया; किन्तु देशवासियों ने अभी तक राष्ट्रीयता के महत्त्व को समझा नहीं, इसलिए राष्ट्रीयता की भावनाओं को उत्साहित करने वाले साहित्य की आज आवश्यकता है। इस नाटक का इस युग में भी उपयोग है ऐसा मैं समझता हूँ।

यह पुष्प सरस्वती के मन्दिर में चढ़ाते समय निरंतर नवीन पुष्पों सहित आते रहने की अभिलाषा रखता हूँ। आशा है, मेरी यह अभिलाषा पूरी होगी।

हरिकृष्ण 'प्रेमी'

पात्र-सूची

पुरुष-पात्र

हमीर	:	महाराणा अजयसिंह के बड़े भाई स्वर्गीय अरिसिंह का पुत्र।
अजयसिंह	:	मेवाड़ के महाराणा।
सुजानसिंह	:	अजयसिंह का पुत्र।
मालदेव		दिल्ली के बादशाह द्वारा नियुक्त मेवाड़ का महाराव।
मुञ्जबलीचा	:	मालदेव का समर्थक एक सामन्त।
भूपति	:	मालदेव का समर्थक एक सामन्त।
दलपति	:	हमीर का सखा।
जाल	:	मेवाड़ का प्राचीन राज-कर्मचारी।
गंभीरसिंह	:	मेवाड़ का एक सामन्त।

स्त्री-पात्र

कमला	:	मालदेव की पुत्री।
सुधीरा	:	हमीर की माँ।
दुर्गा	:	दलपति की माँ।

उद्धार

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—मेवाड़ के पहाड़ी प्रदेश के गाँव का एक खेत।

समय—सन्ध्या।

[सुधीरा खड़ी है और सामने देख रही है। उसकी वेश-भूषा स्वच्छ, सुरुचिपूर्ण किन्तु आडम्बर-हीन है। सुहाग के चिन्ह नहीं हैं, फिर भी व्यक्तित्व में विरक्ति, उदासीनता अथवा क्लांति का आभास नहीं है। शरीर लम्बा, सुगठित और बलवान है। विशाल और तेजस्वी आँखें महान् आत्मा की द्योतक हैं। अस्तंगत सूर्य की किरणों ने आनन की दीप्ति को बढ़ा दिया है। वह इस प्रकार निश्चल खड़ी है मानो स्वप्न के संसार में खो गई है। दुर्गा का प्रवेश।]

दुर्गा—(हाथ जोड़कर) नमस्कार !

[सुधीरा खोई हुई-सी खड़ी रहती है।]

दुर्गा—महारानी जी, गरीबों का नमस्कार भी स्वीकार नहीं करेंगी ?

सुधीरा—(चौंककर) हें, कौन, दुर्गा ! क्षमा करो बहन, में स्वप्न में खो गई थी।

दुर्गा—स्वप्न ! जागते हुए ?

सुधीरा—सुप्तावस्था के स्वप्न वास्तविकता के प्रकाश में जी नहीं

पाते और जागृति के स्वप्न कभी सत्य बनकर अपूर्व आलोक से संसार को चकित कर देते हैं।

दुर्गा—यह नासमझ भीलनी महारानी जी की गूढ़ बातों को कैसे समझ सकती है ?

सुधीरा—(प्यार भरे उलाहने से) फिर तुमने महारानी कहा मुझे ?

दुर्गा—इसमें आपको आपत्ति क्या है ?

सुधीरा—महारानी शब्द ही स्नेहियों से विच्छेद कराने वाली दीवार है । तुम तो जानती हो, मैंने मेवाड़ के राजमहलों की सुमन-शैयाओं का प्रलोभन छोड़कर गाँवों की कड़ी भूमि को अपनाया था। कितना स्नेह-भरा, स्निग्ध और ममतामय वातावरण है यहाँ का ?

दुर्गा—निस्सन्देह यहाँ प्रकृति-माता का मुक्त प्यार मानव को मिलता है; किन्तु एक बात पूछूँ बहन ?

सुधीरा—पूछो !

दुर्गा—तुम जन्म-स्थान को छोड़कर यहाँ क्यों आ बसीं ?

सुधीरा—वहाँ हमीर से यह बात छिपाई नहीं जा सकती थी कि वह मेवाड़ के सिसौदिया-राज-वंश का अंश है।

दुर्गा—वीरता, साहस, त्याग और बलिदानों की गौरव-गाथाओं से परिपूर्ण मेवाड़-राज-वंश के वंशज होने का ज्ञान हमीर को क्या हानि पहुँचाता ?

सुधीरा—राजकुमारत्व का भान हमीर में उच्चता की भावना भर देता और उसे प्रत्येक देहाती स्त्री-पुरुष को आत्मीय मानना कठिन हो जाता। वह राजकुमार बनकर बाल-बन्धुओं का हृदय-सम्राट् न बन पाता।

दुर्गा—बाप्पा रावल, खुमार जी, समरसिंह जी और लखन जी जैसे वीर प्रतापी महाराणाओं के वंशज का अनादर कोई क्यों करता ?

सुधीरा—निस्सन्देह राज-वंश के प्रति मेवाड़ियों के हृदय में अत्यन्त आदर का भाव है, किन्तु आदर और आत्मीयता में बहुत अन्तर है

दुर्गा ! मेवाड़ के महाराणाओं में केवल बाप्पा रावल ऐसे थे जो अभावों और कष्टों के पालने में पले, गरीब जनता के दुख के साझी रहे, राजा बन जाने पर भी बाल-बन्धुओं को भूले नहीं, इसीलिए उनकी वाणी में सम्पूर्ण मेवाड़ का सामूहिक नाद था। मेरा हमीर उसी आदर्श पर चले, मेवाड़ की खोई स्वाधीनता का उद्धार करे, राजा और प्रजा का भेद-भाव मिटाकर मेवाड़ को गृह-कलह से बचाकर भारत की ढाल बनाए।

दुर्गा—अच्छा तो यही स्वप्न तुम अभी देख रही थीं।

सुधीरा—हाँ, मैं एक बलवान और पराक्रमी व्यक्तित्व के दर्शन कर रही थी, जो पश्चिम-क्षितिज की अन्तिम रक्तिम किरणों को पूर्व-क्षितिज के उदीयमान दिवाकर की सतेज किरणों में परिवर्तित कर देगा, जो तीक्ष्ण तलवार से मेवाड़ की काली दुर्भाग्य-रेखाओं को मिटाकर सौभाग्य की स्वर्ण-लिपि में लिख देगा।

[हमीरसिंह का प्रवेश। हमीर एक १८ वर्ष का किशोर है। व्यक्तित्व में अप्रतिम प्रतिभा और तेज है, सुगठित और स्फूर्तिमय शरीर है। वह आते ही सुधीरा के चरणों में अपनी तलवार रख देता है।]

हमीर—इस तलवार को सदा के लिए विदा दे रहा हूँ, माँ!

[सुधीरा साश्चर्य हमीर को देखती है।]

दुर्गा—(व्यंग्य-भरे स्वर में) ओ हो! खून के प्यासे सिंह को अचानक वैराग्य का मंत्र किस ऋषि ने पढ़ा दिया है?

हमीर—तुम्हारे सुपुत्र दलपति ने।

दुर्गा—दलपति ने? क्या कहा, उसने?

हमीर—साहस, शक्ति, वीरता और विक्रम भी राजपूतों में तुम्हें आदर का पात्र नहीं बना सकेगा।

सुधीरा—कारण ?

हमीर—मैं अपने पिता का नाम भी नहीं जानता—संसार मुझे
ादा शंका और घृणा-भरी दृष्टि से देखेगा।

दुर्गा—ऐसी बात कहते हुए उसकी जबान जल नहीं गई । मैं उसे
ःकर आती हूँ। तुम अपने हाथ से दण्ड देना उसे !

[**दुर्गा का सवेग प्रस्थान।**]

हमीर—माँ, इस गाँव को छोड़ चलो न !

सुधीरा—तुम्हें गाँव बुरा लगता है ?

हमीर—गाँव ! यह स्वर्ग का टुकड़ा, इसकी मिट्टी में बैठकर
ुम्हारी वात्सल्यमयी गोद का सुख पाता हूँ माँ !

सुधीरा—तब बात क्या है ?

हमीर—प्रकृति तो प्यार करती है; किन्तु मानव की दृष्टि सन्देह,
यंग और उपेक्षा के बाण मेरे हृदय पर मारती है।

सुधीरा—हमीर, बलवान हृदय उपेक्षा, व्यंग और सन्देह के वाणों
ा पराजित नहीं होते । तुम्हारी नसों में तो वैसा ही पवित्र और
ाजस्वी क्षत्रिय रक्त प्रवाहित है जैसा मेवाड़ के पराक्रमी महाराणाओं
ी नसों में।

हमीर—मेरे पिता जी .....

सुधीरा—(**भावाभिभूत होकर**) तुम्हारे पिता ! वह तो देवदूत थे।
ुम देवता के आशीर्वाद हो। जिस दिन बादल दूर होंगे संसार तुम में
ूर्यलोक देखेगा—ऐसा आलोक, जिससे आकाश के नक्षत्र भी आँखें न
मला सकेंगे। मेरा हमीर मेवाड़ का महाराणा होगा।

हमीर—तुम भी व्यंग करती हो माँ ! क्या तुम्हें झोंपड़ी छोड़कर
ाजमहल में रहने की आकांक्षा है ?

सुधीरा—राजमहल ! राजमहल तो हमारी झोंपड़ी के कोने में पड़ा
हा है। राज-वैभव की लालसा से नहीं, बल्कि मेवाड़ की स्वाधीनता को
वदेशियों के पंजे से छुड़ाने के लिए तुम्हें राजमहल में जाना पड़ेगा।

हमीर—किन्तु राजमहल से मेरा सम्बन्ध ही क्या ?

सुधीरा—राजा का राजमहल से सम्बन्ध होता ही है ।

हमीर—मैं राजा हूँ । हः हः हः, माँ ! आज तक तुमने कभी कोई नशा नहीं किया है । आज ·····

सुधीरा—भूलते हो हमीर ! तुम्हारी माँ आठों पहर नशे में रहती है । वह रात-दिन अपने ही हमीर को जन-नायक, सेना-नायक, छत्रपति के रूप में देखती है, जो अपने चुने हुए मृत्युञ्जय साथियों के साथ अरावली की उपत्यकाओं में स्वाधीनता-संग्राम का नेतृत्व कर रहा है । क्या तेरी पगली, मतवाली माँ का स्वप्न पूरा न होगा ?

हमीर—मेवाड़ के महाराणा अजयसिंह जी केलवाड़ा में मेवाड़ के उद्धार के हित साधना कर रहे है, क्या मै उनके मार्ग का कंटक बनूँगा।

सुधीरा—कंटक नही, तुम उनके हाथ की तलवार बनोगे—वह अपने हाथ से तुम्हारे मस्तक पर राज-मुकुट रखेगे ।

हमीर—माँ, मैं सिसौदियों के स्वत्व पर अधिकार क्यों करूंगा ?

सुधीरा—जो तुम्हारा है वही तुम पाओगे हमीर ! मेवाड़ का उद्धार और उसकी स्वाधीनता करने की रक्षा करने में वही व्यक्ति समर्थ हो सकता है जो राजमहलों की सुमन-शैया पर नहीं, बल्कि अभावों की ज्वाला पर सोने का अभ्यस्त रहा है; जो केवल अविवेकपूर्ण हिंसा की वीरता का अभिमानी नहीं, बल्कि पृथ्वी-माता की भाँति सहनशील भी है; जो गरीबों में रहा है और उन्हें अपना समझने में गौरव समझता है ।

हमीर—माँ, तुम्हारी बातें रहस्यपूर्ण हैं ।

सुधीरा—समय स्वयं रहस्य का उद्घाटन करेगा । अपने मन से ग्लानि और उत्तेजना दूर करो । चलो, अब घर चलें ।

[हमीर तलवार उठाता है । दोनों का प्रस्थान ।]

[पट-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

स्थान—चित्तौड़-गढ़ में राज-वाटिका ।

समय—प्रभात ।

[कमला सुमन-चयन में निमग्न है । कमला का शारीरिक सौन्दर्य और सात्विक वेश-भूषा उसके स्वच्छ हृदय को प्रतिभासित करती है । चेहरे पर और आँखों में विषाद की छाया-सी जान पड़ती है, जिसने उसे अधिक कोमल, मधुर और आकर्षक बना दिया है । फूल तोड़ते-तोड़ते वह एक हरियाले स्थान पर बैठ जाती है और फूल-पत्तों पर पड़ने वाली बाल-रवि-रश्मियों का नर्तन देखने लगती है, फिर उच्छ्वसित होकर गा उठती है ।]

कमला—(गीत)

ज्योति जगमग है जगत् में
किन्तु मेरा जग अँधेरा ।

भूमि पर आकाश से आ
रश्मियाँ करतीं उजाला,
फूल अलियों को पिलाते
प्रेम-मधु-परिपूर्ण प्याला,

कह रहा उत्साह जग का
आ गया स्वर्णिम सवेरा
ज्योति जगमग है जगत् में
किन्तु मेरा जग अँधेरा ।

कर रही हूँ सुमन-संचय
शून्यता को भेंट करने,
दे रहे हैं अर्घ्य मेरे
लोचनों के अमर झरने ।

कौन है संसार में जो
भर सकेगा घाव मेरा।
ज्योति जगमग है जगत् में
किन्तु मेरा जग अँधेरा।

पान मधु की प्यालियाँ कर
गा रहे मधु-गीत मधुकर,
राग-रस के बह रहे हैं
रास से भरपूर निर्झर,

किन्तु मेरे मन-निलय में
वेदना का है बसेरा।
ज्योति जगमग है जगत् में
किन्तु मेरा जग अँधेरा।

[मालदेव का प्रवेश। पोशाक राजसी, सबल शरीर, आँखों में कठोरता, मूछों में तनाव।]

मालदेव—कमला !

[कमला चौंककर खड़ी हो जाती है।]

कमला—ओह, आप हैं पिता जी !

मालदेव—पगली, निर्जीव फूलों से मन बहलाती है।

कमला—निर्जीव ! (एक नव-स्फुटित गुलाब को हाथ में लेकर) यह निर्जीव नहीं है, यह बोलता भी है, मुसकराता भी है, आँख से संकेत भी करता है, हाथ से बुलाता भी है।

मालदेव—(उपेक्षापूर्ण हँसी के साथ) हः हः हः, फूलों के आँखें हैं, ओष्ठ हैं, हाथ हैं !

कमला—मानव कल्पना और अनुभूति को आँखों से देखे तो उसे सब-कुछ दिखाई दे।

मालदेव—इस छोटे-से फूल में ?

कमला—जितना दिखाई देता है उससे कहीं अधिक व्यापक-वस्तु का विस्तार होता है। जहाँ तक इस फूल के सौरभ का विस्तार है वहाँ तक इसके स्वरूप का समावेश है। यह कठोर शरीर के प्राचीर को चीरकर प्राणों में तीर की तरह प्रवेश करता है।

मालदेव—मेरे प्राणों में कभी सुमन-सौरभ-शर ने प्रवेश नहीं किया।

कमला—स्वार्थ और दम्भ ने प्रेम और सहानुभूति-जैसी सुरभित और कोमल भावनाओं के लिए वहाँ स्थान छोड़ा ही नहीं है।

मालदेव—यह तू क्या कहती है बेटी ! क्या मैं सर्वथा प्रेम-शून्य हूँ ? क्या मैं तुझे भी प्यार नहीं करता ?

कमला—आपने अन्धकार के समुद्र में मेरी अभिलाषाओं को विसर्जित कर दिया है, चिरन्तन ज्वाला में झुलसने के लिए मुझे जीवित रख छोड़ा है।

मालदेव—मुझे इसका कम दुख नहीं है बेटी ! हम राजपूत हैं—तिस पर चौहान—नहीं तो तुझे सुखी बनाने के लिए तेरा पुनर्विवाह···

कमला—अब तो यमराज से ही मैं विवाह करूँगी ! प्रत्येक साँस नरक की वेदना का अनुभव करते हुए भी मैं जी रही हूँ; सो क्यों ? जानते हो पिता जी !

मालदेव—किस लिए बेटी ?

कमला—पिता के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए।

मालदेव—**(कठोर स्वर में)** मेरा पाप ?

कमला—आपने धन और प्रभुता की लालसा के वशीभूत होकर अपने स्वामी मेवाड़ के महाराणा से विश्वासघात किया, अपना देश विदेशियों के हाथ बेच दिया।

मालदेव—कमला, तेरी जबान अपनी मर्यादा के बाहर जा रही है।

कमला—आपकी स्वार्थ-परता मनुष्यता की सीमा को पार कर गई है।

मालदेव—(क्रोधपूर्वक) कमला, मैं तेरी ज़बान काट डालूंगा।

कमला—आप में कमला की ज़बान काट डालने की शक्ति है लेकिन इतिहास-लेखक की कलम को रोकने की नहीं।

मालदेव—मालदेव ने मनुष्यता या क्षत्रियत्व के विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया। सिसौदियों के पूर्वज बाप्पा रावल ने मोरिवंश से मेवाड़ का राज्य छीना था—मैंने उनसे छीन लिया।

कमला—बाप्पा रावल ने निरंकुश और अत्याचारी राजा से मेवाड़ की प्रजा को मुक्त करने के लिए राज-सत्ता अपने हाथ में ली थी और आपने व्यक्तिगत लालसा की पूर्ति के लिए देश की स्वाधीनता को विदेशियों के हाथ बेच दिया है। आश्चर्य यह है कि दिल्ली के विदेशी शासक के हाथों की कठपुतली अपने आपको राजा मानता है।

मालदेव—यह तो राजनीति है कमला! मालदेव केवल चित्तौड़ का शासक बनकर ही शान्त नही होगा, अवसर पाकर वह दिल्ली के गढ़ पर भी चौहानों की ध्वजा फहरायगा।

कमला—यह भारत का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि यहाँ का प्रत्येक राज-वश अपनी पृथक् ध्वजा फहराने के लिए लालायित है। पिता जी, सिसौदिया, चौहान, राठौर आदि सभी राजपूत, बल्कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति जन्म-भूमि का पुत्र है। उसकी कोई व्यक्तिगत सत्ता या स्वार्थ नहीं है। भारत की स्वाधीनता सबका ही लक्ष्य है। आप पथ भूल गए हैं पिता जी!

मालदेव—सिसौदियों ने हमारे राव रणधवल जी का जो अपमान किया था क्या उसका बदला न लूँ—उनका नामलेवा होकर शान्त बैठा रहूँ? रक्त का बदला रक्त है।

कमला—जिन सिसौदियों से आज आप बदला ले रहे हैं उन्हीं के पूर्वज समरसिंह जी ने हमारे पूर्वज पृथ्वीराज चौहान की मान-रक्षा के लिए अपनी ही नहीं अपने हजारों सगोत्रियों के प्राणों की आहुति दी थी, इसे आप क्यों भूलते हैं? और मैं आपसे पूछती हूँ कि वे गोरा-

बादल मूर्ख थे जिन्होंने चौहान होकर भी सिसौदियों के लिए प्राण चढ़ा दिए। वे पद्मिनी जी भी चौहान-वंश की बेटी थीं जिन्होंने मेवाड़ की इज्ज़त रखने के लिए हजारों वीर बालाओं के साथ जौहर की ज्वाला मे प्रवेश किया था।

मालदेव—मैं तुझसे उपदेश नही सुनना चाहता कमला !

कमला—न सुनिए, लेकिन एक दिन आपको पछताना पड़ेगा।

[**कमला का प्रस्थान।**]

मालदेव—सम्भवतः कमला का कथन सत्य हो, किन्तु इतने आगे बढ़ आने के पश्चात् क्या मैं वापिस लौट सकता हूँ। मेरे जीवन का स्वप्न चौहान-साम्राज्य है—मैं उसे पूरा करने का प्रयत्न नहीं छोड़ूँगा।

[**मालदेव का प्रस्थान।**]

[**पट-परिवर्तन**]

तीसरा दृश्य

स्थान—केलवाड़ा के राजमहल में सुजानसिंह का कक्ष।

समय—रात्रि।

[कक्ष सुसज्जित और विलास-सामग्रियों से परिपूर्ण है, एक ओर सुन्दर तिपाई पर सुराही और मदिरा-पान के उपादान रखे हुए हैं। दीवारों पर जहाँ-तहाँ शस्त्र भी टँगे हुए हैं, लेकिन उन पर धूल जम गई है। बाप्पा रावल की तसवीर दीवार के बीचों-बीच टँगी हुई है जिस पर एक सूखी-सी माला पड़ी हुई है। राजकुमार सुजानसिंह भूपति के साथ आते हैं। राजकुमार में वंशानुगत भव्यता के साथ परिधान की शान ने विशिष्टता पैदा करदी है। भूपति की पोशाक में भी पर्याप्त बनावट है। सुजान आकर अनायास ही धूलि-धूसरित शस्त्रों को देखने लगता है। भूपति मदिरा की सुराही के पास जाता है और दो पात्रों में डालता है।]

सुजान—तुम्हें विश्राम करना पसन्द नहीं। तुम्हें नींद लेना नहीं भाता। तुम जागना चाहते हो, स्नान करना चाहते हो रक्त-सागर में—तुम प्यासे हो, पीना चाहते हो···

भूपति—तुम प्यासे हो, पीना चाहते हो तो आओ यह प्याला प्रतीक्षा कर रहा है।

सुजान—मैं अपने ओष्ठों की प्यास की बात नहीं कह रहा था भूपति, मैं तो तलवार की धार की प्यास की बात कर रहा था।

भूपति—(सुजानसिंह के पास आकर उसका हाथ पकड़कर बैठने के स्थान की तरफ ले जाते हुए) छोड़िए भी इन निर्दय, निर्मम और नीरस शस्त्रों को—चलो उधर !

सुजान—तुम मुझे कहाँ घसीटे लिये जा रहे हो—पतन के पाताल में···

भूपति—**(मसनद के सहारे बिठाते हुए)** जी नहीं, सौन्दर्य, यौवन और आनन्द के स्वर्ग में **(सुजानसिंह के हाथ में भरा हुआ मदिरा-पात्र देकर)** कभी-कभी आप वास्तविक ससार को छोड़कर कल्पना-लोक में पहुँच जाते हो राजकुमार ! पियो, यह संसार की कठोरता में अन्तर्निहित रस-निर्झर को भी पत्थर का उर चीरकर बाहर ले आती है।

मालती—**(मदिरा-पात्र को नीचे रखकर)** मुझे जान पड़ता है कि मेवाड़ पर बलि होने वाले पूर्वजों का रक्त इसमें भरा हुआ है।

भूपति—यह निरी भावुकता है युवराज !

सुजान—नहीं, यही तो वह अमर नशा है जो मुर्दा प्राणों में जवानी का संचार करता है। हमारे जीवन का कोई लक्ष्य चाहिए; प्रत्येक साँस में जिसे प्राप्त करने की लगन चाहिए।

भूपति—आप किस लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहते हैं ?

सुजान—स्वाधीनता की प्राप्ति की ओर। विदेशी शासकों की सत्ता को मेवाड़-प्रदेश से निर्मूल करना हमारा कर्त्तव्य है।

भूपति—इस विषय में मैं आप से सहमत हूँ, किन्तु युवराज जीवन का श्मशान बना लेने से ही तो लक्ष्य सिद्ध नहीं होता। संयम की नीरसता जीवन-शक्ति का ह्रास करती है। उत्साह और उल्लास को स्थिर रखने के लिए मनोरंजन आवश्यक है। जैसे धूप में चलते जाने वाले पथिक को प्यास लगती है उसी प्रकार जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी ऊँची-नीची भयानक जंगलों के समान उलझनों से भरी राह पर चलने वाले को भी प्यास लगती है। जीवन में ताज़गी लाने के लिए **(मदिरा का घूंट भरते हुए)** इसी अमृत की आवश्यकता है। उठाओ युवराज, पात्र उठाओ।

[सुजानसिंह फिर भी पात्र उठाता नहीं है। इसी समय पायलों की मधुर झनकार के साथ नर्तकी प्रवेश करती है, साथ में वाद्यकार भी हैं।

नर्तकी रूप, यौवन और आकर्षण का आगार है। सुजानसिंह उसे अपलक निहारता रहता है। नर्तकी उस की ओर देखती, मुसकाती और नमस्कार करती है। सुजानसिंह स्तब्ध रहता है।]

भूपति—बैठो मालती !

[मालती बैठती है।]

भूपति—(सुजानसिंह से) मैंने इसे विशेष रूप से दिल्ली से बुलवाया है युवराज ! इनकी वाणी पर स्वयं सरस्वती विस्मित होती है, इनके चरण-कमलों पर राज-मुकुट भी झुकते हैं।

सुजान—वास्तव में यह मन्दिर में प्रस्थापित करने योग्य स्फटिक शिला की प्रतिमा है।

मालती—धन्य है आपकी सराहना-शक्ति ! निर्जीव, हृदय-हीन पत्थर ही समझा आपने मुझे !

सुजान—हाँ, पत्थर, जो कठोर कोमलता से जीवन की गम्भीरता को तरंगित कर देता है।

मालती—अपनी इस शक्ति पर इस शिला-खंड को अभिमान नहीं है। मैं हृदय को तरंगित करती हूँ, नशा देती हूँ, किन्तु उतनी ही बेबस हूँ जितनी आपके सामने रखी हुई मदिरा।

भूपति—नर्तकी, तुम यहाँ दर्शन-शास्त्र पढ़ने आई हो ?

मालती—(आह भरकर) हलाहल में चन्दन की सुगन्धि स्वाभाविक नहीं जान पड़ती; किन्तु क्या करूँ, कभी-कभी पुराने संस्कार जाग पड़ते हैं ! अप्रतिम वीर पुरुषों की लीला-भूमि मेवाड़ में आकर तो जैसे मेरे जीवन की कालिमा अंतर्धान हो गई है।

सुजान—तुम विदुषी और गुणी हो मालती ! फिर किस लिए तुच्छ नर्तकी बनी हो।

मालती—समाज का न्याय माँ-बाप के अपराध का दण्ड सन्तान को देता है।

सुजान—तुम अपने जीवन से घृणा करती हो नर्तकी !

मालती—(हँसकर) घृणा! किस लिए ? कला अपने-आप में निर्दोष है, इसे जिस प्रकार के हृदय-प्याले में रखोगे वैसी ही यह दिखाई देगी। मैं कला की साधना करती हूँ, इसमें लज्जा की क्या बात है।

भूपति—तो युवराज को भी कलामृत-पान कराओ न।

[मालती वादकों की ओर देखती है। वे स्वर ठीक करते हैं। नर्तकी के व्यक्तित्व से भूपति भी इतना अभिभूत है कि मदिरा-पात्र नीचे रखकर पीना भूल गया है। मालती नाचती और गाती है।]

मालती—प्राण-धन, बंधन तुम्हारे
ले रहे हैं प्राण मेरे !
रश्मियाँ स्वर्णिम सबेरे
चूमती हैं पलक मेरे।
पर नयन जब खोलती हूँ
अश्रु पड़ते छलक मेरे ॥
देखती हूँ मैं उजड़ते
स्वप्न के उद्यान मेरे।
प्राण-धन, बंधन तुम्हारे
ले रहे हैं प्राण मेरे !
सींखचों में बन्द रहकर
देखती अवकाश हूँ मैं।
पक्षियों को देख उड़ता
छोड़ती उच्छ्वास हूँ मैं ॥

मैं उड़ूं कैसे, हुए जब
पंख जड़ अनजान मेरे।
प्राण-धन, बंधन तुम्हारे
ले रहे हैं प्राण मेरे !

मैं चली थी इस जगत् में
जग नया अपना बनाने।
जो युगों से है अधूरा
पूर्ण वह सपना बनाने॥

किन्तु सपने हो गए हैं
आज सब अरमान मेरे।
प्राण-धन, बंधन तुम्हारे
ले रहे हैं प्राण मेरे !

[घायल स्थिति में अजयसिंह का प्रवेश। उनके मस्तक से रक्त बह रहा है। सुजानसिंह और भूपति स्तंभित होकर खड़े हो जाते हैं। मालती और वादक असमंजस में पड़ जाते हैं।]

सुजान—पिता जी, आपको घायल किसने किया ?

अजय—तूने, ओ नादान युवक तूने !

सुजान—मैंने ?

अजय—तलवार का घाव खाना तो राजपूत की नित्य की खुराक है, लेकिन (**नर्तकी की ओर इङ्गित करके**) तूने इस ज़हरीली छुरी से मेरे कलेजे को बींध दिया है—क्या यह घाव कभी भर सकेगा ?

सुजान—पिता जी, मुझे क्षमा कीजिये !

अजय—तूने मेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। (**बाप्पा रावल**

के चित्र की ओर इङ्गित करके) तूने पुण्यात्मा बाप्पा रावल के चित्र की छाया में बैठकर विलास के प्याले पिये हैं नरक के कुत्ते !

भूपति—महाराणा जी, यह नर्तकी पतितात्मा नहीं है । हम तो केवल कला···

अजय—कला को तो कोई अधिकार नहीं कि वह स्वाधीनता-संग्राम के सैनिकों को एक क्षण के लिए भी लक्ष्य से विमुख करे । सुजान, तुम्हारे-जैसे प्रमादी, विलासी और कापुरुष व्यक्ति से मेवाड़ का उद्धार नहीं होगा । तुमने मुझे निराशा के अन्धकार में विलीन कर दिया है । मैं तुम्हारा मुंह नहीं देखना चाहता ।

[**अजयसिंह का प्रस्थान ।**]

सुजान—(अजयसिंह के पीछे जाते हुए) पिता जी, निस्सन्देह मुझसे भूल हुई है, किन्तु क्या मुझे ऊपर उठने का एक भी अवसर नहीं देंगे ? क्या मुझे क्षमा नहीं करेंगे ?

[**सुजानसिंह का प्रस्थान ।**]

भूपति—(हँसते हुए) हः हः हः, जिस आदर्श के संसार में क्षमा शब्द का अस्तित्व ही नहीं है उसके पीछे क्यों भागते हो युवराज ?

[**भूपति का प्रस्थान ।**]

मालती—आदर्श की एक आँख अगर बन्द न होती तो संसार स्वर्ग बन जाता ।

[**वादकों से उठकर प्रस्थान करने का इङ्गित करती है । मालती सहित सभी का प्रस्थान ।**]

[**पट-परिवर्तन**]

चौथा दृश्य

स्थान—चित्तौड़ की राज-वाटिका।

समय—सन्ध्या।

[कमला और जाल घूम रहे हैं। जाल वृद्ध-पुरुष हैं, चेहरे पर चतुराई चित्रित है।]

कमला—मेरे शब्द समाप्त हो गए हैं, किन्तु पिताजी का दुराग्रह समाप्त नहीं हुआ।

जाल—प्रभुता का मोह विवेक की हत्या कर देता है बेटी!

कमला—सुनती हूँ मेवाड़ की जनता पर दिल्ली के विदेशी पदाधिकारी और सैनिक मनमाने अत्याचार करते हैं।

जाल—मेवाड़ के महाराव और दिल्ली के बादशाह, चक्की के इन दोनों पाटों के मध्य मेवाड़ी पिसे जा रहे हैं। कहीं महाराव स्वतन्त्र होने का प्रयत्न न करें इसलिए दिल्ली की पर्याप्त विदेशी सेना यहाँ शान्ति स्थापित करने के बहाने रखी गई है और उसका व्यय देना पड़ता है मेवाड़ियों को। युद्ध से जर्जर हुई जनता का रक्त चूसा जा रहा है। तिस पर ये विदेशी अतिथि यहाँ के नैतिक जीवन को विषाक्त कर रहे हैं। किसी सुन्दरी युवती का घर से बाहर निकलना असम्भव हो गया है।

कमला— फिर भी मेवाड़ की जनता विद्रोह नहीं करती।

जाल—विद्रोह की चिनगारियाँ अधिकांश मेवाड़ियों के हृदय में सुलग रही है। आवश्यकता है केवल ऐसे नेता की, जो इन चिनगारियों को एकत्रित करके महा ज्वाला में बदल दे।

कमला—इस कार्य के लिए महाराणा अजयसिंह तो हैं।

जाल—निस्सन्देह वह मेवाड़ के गये हुए राज्य को प्राप्त करने के लिए पागल रहते हैं, लेकिन वह महाराणा हैं, भगवान् रामचन्द्र के वंशज

हैं, वीरता उनका जातीय गुण है, ये ही धारणाएँ उन्हें जनता से घुलने-मिलने नहीं देंगी। वे उद्योग करेंगे सिसौदियों का राज्य पुनः हस्तगत करने का न कि मेवाड़ के सर्व-साधारण के स्वत्वों को प्राप्त करने का। मुझे विश्वास नहीं कि वह कभी मनोरथ सिद्ध कर पायँगे।

कमला—लगन, साहस और पराक्रम का तो उनमें अभाव नहीं है।

जाल—निस्सन्देह उनमें सब-कुछ है, किन्तु उनमें वह जादू नहीं है कि उनके आह्वान पर मेवाड़ के प्रत्येक आबाल-वृद्ध के हृदय में स्वाधीनता-संग्राम के लिए बलि देने की इच्छा जाग्रत हो जाय। वह अपने झण्डे के नीचे कुछ सजातीय क्षत्रिय सामंतों को ही एकत्रित कर सकते हैं, जिन्हें शत्रु अधिक जागीर और मान देकर कभी भी अपने पक्ष में कर सकता है।

कमला—तब क्या यह प्रदेश नृशंस विदेशियों के पदाघात सहता ही रहेगा।

जाल—नहीं, ऐसा नहीं होगा। मेवाड़ के गरीब, साधन-हीन व्यक्तियों में से ही कोई महान् व्यक्ति, कोई तेज-पुञ्ज प्रकट होगा जिसके इङ्गित पर मेवाड़ की झोपड़ियाँ और हवेलियाँ सभी एक स्वर से रण-नाद कर उठेंगी। सम्पूर्ण मेवाड़ का एक स्वर होगा, एक गति होगी और एक लक्ष्य होगा।

[किसी ओर से पद-चाप सुनाई देती है।]

कमला—कदाचित् पिता जी आ रहे हैं। हमें यहाँ से हट जाना चाहिए।

जाल—साथ में मुंज बलीचा भी है। धूर्तराज, अवश्य किसी गुप्त अभिसन्धि के लिए आया है। हमें छुपकर इनकी बातें सुननी चाहिएँ।

[कमला और जाल का प्रस्थान। मालदेव और मुंज का प्रवेश। मुंज की आँखों और आकृति से क्रूरता तथा हिंस्रता प्रकट होती है।]

मालदेव——आपने महाराणा अजयसिंह पर आघात करके सोते सिंह को जगा दिया। जरा उतावली कर बैठे हो मुंज !

मुंज—उतावली नहीं, महाराज ! यही समय है कि महाराणा की टूटी-फूटी शक्ति को सदा के लिए समाप्त कर दिया जाय। राजनीति नहीं कहती कि उन्हें सैन्य-संगठन और साधन-संग्रह के लिए समय दिया जाय।

मालदेव—जिन दुर्गम घाटियों में महाराणा ने अपना निवास रखा है वहाँ जन-बल भी तो काम नहीं देता । वह बड़ी सरलता से अपनी रक्षा कर सकता है।

मुंज—जान पर खेलने वाले पराक्रमी सैनिक उन दुर्गम घाटियों में भी मार्ग बना सकते हैं ?

मालदेव—ठीक है, लेकिन हमारे सैनिक हैं किराये के टट्टू। गरीबी ने, पेट की ज्वाला ने उन्हें सैनिक बनाया है, न कि किसी लगन ने, या किसी आदर्श की प्रेरणा ने। मेवाड़ के रण-प्रिय राजपूत तो महाराजा के विरुद्ध शस्त्र उठाने को तैयार भी नहीं होते।

मुंज—और आपकी विदेशी सेना क्या करती है ?

मालदेव—वह तमाशा देखती है। दिल्ली के शासक नहीं चाहते कि सिसोदिया-शक्ति सर्वथा निर्मूल हो जाय । वह चाहते हे चौहान और सिसोदिया परस्पर लड़ते ही रहें और दोनों में से कोई भी दिल्ली के शासन से भिड़ने योग्य न बन सके।

मुंज—इसी भेद-नीति के बल पर वह इस देश के शासक बन सके हैं, किन्तु हमें हाथ-पर-हाथ रखकर तो नहीं बैठना चाहिए।

मालदेव—तब किया क्या जाय ?

मुंज—साम, दाम, दण्ड, भेद सभी नीतियों का प्रयोग। मैंने तो अपना जाल फैलाना प्रारम्भ भी कर दिया है । अपने निकटतम साथी भूपति को राजकुमार सुजानसिंह का सखा बना दिया है, जो उसे विलास के पथ पर ले जायगा। इससे पिता-पुत्र में कलह होगा। सर्व-साधारण

में सिसौदिया राज-वंश के प्रति अनादर की भावना बढ़ेगी । म आपके मार्ग के काँटे दूर कर दूंगा; किन्तु इसका उचित पुरस्कार मुझे मिलना चाहिए ।

मालदेव—निश्चय ही तुम मुंह-मांगा पुरस्कार पाओगे । बोलो, क्या चाहते हो ?

मुंज—मै चाहता हूँ कमला को ।

मालदेव—छिः कैसी बात करते हो मुज ! वह विधवा है और राजपूतों में विधवा का विवाह नहीं होता ।

मुंज—कमला के विवाह की बात जानता ही कौन महाराव ! और अगर कोई जानने वाला प्रकट भी हुआ तो मे उसे स्वर्ग-धाम पहुंचा दूंगा ।

मालदेव—किन्तु कमला कोई खिलौना तो है नहीं कि मै उठाकर चाहे जिसके हाथ में दे दूं । वह बिना प्रभतिवाद किये चली जायगी ?

मुंज—उसे सहमत होना ही चाहिए, नहीं तो कल से मुंज महाराणा अजयसिंह के साथ होगा । अच्छा महाराज, अब में विदा लेता हूँ । जय एकलिग जी की !

[महाराव केवल मस्तक हिला देते हैं । मुंज चला जाता है । मालदेव भी विचारों में डूबा हुआ चला जाता है । दूसरी ओर से कमला और जाल आते हैं ।]

जाल—तो हमारी कमला रानी बनेगी ।

कमला—काकाजी, आप भी व्यंग्य-बाण छोड़ते हैं मुझ पर ! ऐसे नराधम राक्षस के अंक में बैठने के लिए कमला जीवित नहीं रहेगी ।

जाल—भगवान् के निर्माल्य की भाँति पवित्र और अछूता तुम्हारा रूप, सौन्दर्य और यौवन क्या मृत्यु का ग्रास बनने के लिए ही है ?

कमला—निश्चय ही मेरा रूप-यौवन मेरे जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है । (कटार निकालकर) मेरी कटार जीवन के साथ इस

अभिशाप से भी मुझे मुक्त कर देगी।

जाल—पगली कहीं की—यह कटार शत्रु के कलेजे को चीरने के लिए है। मैं तो हिसाबी महाजन हूँ। मैं तो मौत की भी कीमत वसूल करना पसन्द करता हूँ। यदि जान देनी ही है तो पहले किसी देश-द्रोही को मौत के घाट उतार! आत्म-हत्या तो पाप है, बेटी!

कमला—मैं तो जीना चाहती हूँ—अपने तन, मन, और आत्मा को देश को स्वाधीन करने के महायज्ञ में लगाने के लिए; लेकिन मनुष्य की लालसा की सर्व-ग्रासी कठोरता नित्य ही कितनी भोली-भाली कलियों को तोड़कर मसलकर फेंक देती है, पैरों से रौंदकर चली जाती है, आकाश की आँखों में जरा भी पश्चात्ताप नहीं दिखाई देता।

जाल—यह बात नहीं है कमला! आकाश से किसी दिन वज्र गिरकर आततायी के मस्तक को चूर करता ही है। कंस को समाप्त करने वाला कोई कृष्ण किसी झोपड़ी में उचित समय की प्रतीक्षा कर रहा है। हमें उसकी सेना में शामिल होने के लिए तैयार रहना चाहिए। निराश होकर कभी आत्म-हत्या करने का प्रयास न करना बेटी, यही इस बूढ़े जाल काका की सीख है। अच्छा अब मैं जाता हूँ।

[जाल का प्रस्थान।]

कमला—कौन है वह महामानव जो कि मेवाड़ को विदेशियों की अधीनता से मुक्त करेगा और क्या मुझे भी इस महायज्ञ में उसकी संगिनी बनने का सौभाग्य मिलेगा?

[सोचते हुए कमला का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—सुधीरा की झोंपड़ी ।

समय—प्रभात ।

[सुधीरा प्रसन्न मन से थाली में रोली, चावल, नारियल आदि रख रही है । दुर्गा एक केले के पत्ते में फूल और फूल-माला लेकर आती है ।]

दुर्गा—यह लो बहन !

[सुधीरा फूल और माला लेकर थाली में रख देती है ।]

दुर्गा—आज के फूलों में कुछ नई-सी मुसकान थी—मानो वे इशारा करके मुझे बुला रहे थे—मानो सभी हमीर के गले का हार बनने के लिए लालायित थे ।

सुधीरा—प्रकृति तो मन का दर्पण है । मानव अपनी मनोभावनाओं को प्रकृति में चित्रित पाता है । आज प्रभात की स्वर्ण-रश्मियों ने मुझे नव-जागरण के लोक में पहुँचा दिया है । जिस सत्य को मैं रहस्य की सघन घटाओं में छिपाए रही हूँ वह आज प्रकट होने को आतुर हो उठा है ।

दुर्गा—सूर्य के प्रकाश को कब तक छिपाया जा सकता है । हमीर साहस और पराक्रम से आस-पास के ग्रामों के युवकों के लिए स्फूर्ति का स्रोत बन गए हैं ।

सुधीरा—दो-चार गाँवों के युवकों के हृदय की स्फूर्ति बनना हमीर की आकांक्षा की परिधि नहीं है । स्वाधीन, स्वतन्त्र, सुखी और सम्पन्न मेवाड़ मेरे जीवन का स्वप्न है और इस स्वप्न को सत्य करने वाली शक्ति है मेरा हमीर ।

दुर्गा—महाराणा अजयसिंह भी तो वर्षों से इसी साधना में रहते हैं, किन्तु विदेशी शक्ति की चट्टान से उनके जोश की तरंगें टकराकर

रह जाती हैं । और आप समझती हैं कि हमीर उनसे अधिक साधन पा सकेंगे ?

सुधीरा—निश्चय ही ! महाराणा अजयसिंह केवल स्वजातीय सामन्तों के बल पर शत्रु से संघर्ष करते रहे हैं; किन्तु इन स्वार्थी सामन्तों का क्या विश्वास ? ये तो अपने विशेष स्वत्वों और अधिकारों की सुरक्षा के लिए सदा चढ़ते हुए सूर्य को नमस्कार करते हैं । जिस मालदेव के पूर्वज सदा हरावल में आगे रहते रहे हैं—जो मेवाड़ की सुदृढ़ ढाल थे—वही मेवाड़ की स्वाधीनता के काल बन गए हैं ।

दुर्गा—कदाचित् वह भारत-सम्राट् बनना चाहते हैं । पृथ्वीराज चौहान के गत गौरव को प्राप्त करना चाहते हैं ।

सुधीरा—किन्तु उन्होंने गलत मार्ग पकड़ा है । नवजीवन की अभिलाषा में आत्म-हत्या कर ली है और सच पूछो तो मैं कहूँगी कि वंशाभिमान राष्ट्रीयता के मार्ग में बड़ी बाधा है । उच्च वंश के अभिमान में मद-मस्त रहने वाले दूसरों को अपनी अपेक्षा नीच मानते हैं । प्रकृति के समस्त उपहारों पर केवल अपना ही जन्म-सिद्ध अधिकार समझते हैं—और सब लोगों को उनसे वंचित रखना चाहते हैं ।

दुर्गा—किन्तु यह तो मानना पड़ेगा कि वंश-गौरव ही उनसे बड़े साहसपूर्ण कार्य करा लेता है ।

सुधीरा—धिक्कार है उस साहस और पराक्रम को जो किसी भी क्षण देश और मानवता के दुर्भाग्य का कारण बन सकता है । मैं चाहती हूँ कि मेरे हमीर में साहस, वीरता और पुरुषार्थ के साथ विवेक भी हो ।

[हमीर का रक्त-रंजित तलवार लिये हुए प्रवेश ।]

सुधीरा—पगले तलवार को लाल कैसे कर लाया ?

हमीर—नर-रक्त से, माँ !

दुर्गा—नर-रक्त से ?

हमीर—हाँ, मैं क्या करता अपने गाँव की लड़की रधिया चमारिन को दो विदेशी सैनिक जबर्दस्ती लिये जा रहे थे। वह सहायता के लिए चिल्ला रही थी। मुझसे नहीं देखा गया। मैंने उन दोनों राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया।

दुर्गा—एक चमारिन छोकरी के लिए तुम दो विदेशी सैनिकों से भिड़ गए।

हमीर—वह हमारे गाँव की बेटी है—चमारिन है तो क्या, है तो मेरी बहन ही।

सुधीरा—निश्चय ही हमीर! तेरी तलवार निर्बलों की रक्षा की लिए है। आज तेरे जीवन के बीसवें वर्ष का प्रथम दिन शुभ और साहस-पूर्ण कार्य से प्रारम्भ हुआ है! बेटा, अब मैं तुम्हें जीवन के वास्तविक कार्य-क्षेत्र में भेजूंगी। मैं तुम्हें उस संसार में भेजूंगी जहाँ मनुष्य के रूप में विषधर बस्ती में घुस आए हैं। उनमें से अनेक प्रत्यक्ष नहीं आते। अंधकार में छिपे-छिपे रेंगते-रेंगते आते हैं और जहरीले दाँतों से काट लेते हैं।

हमीर—माँ, तुम मुझे मानव से घृणा करना सिखाती हो।

सुवीरा—नहीं बेटा, मैं तुम्हारा भोलापन दूर कर देना चाहती हूँ। तुम्हें मनुष्य की पहचान कराने के लिए ही तो मैंने तुम्हें राजमहलों से बरबस दूर रखा और अपनी इच्छा से अरावली की चट्टानों पर तुम्हें सुलाया ताकि तुम संसार को वास्तविक रूप में देखो, वैभव और प्रभुता के बन्दी सत्ताधारियों की भाँति कृत्रिम जीवन के आदी न बनो।

हमीर—मुझे आपके विवेक पर विश्वास है, आप मुझे ज्वालामुखी के मुख में कूद पड़ने को कहेंगी तो संकोच नहीं करूँगा।

सुधीरा—तुम मेरी आशा-विश्वास हो। **(पट्टा बिछाकर)** बैठो हमीर, तुम्हारा टीका कर दूं।

[हमीर बैठता है। सुधीरा हमीर का टीका करती है। महाराणा अजय-

सिंह का प्रवेश । उनके मस्तक पर घाव है । हमीर आश्चर्य से देखता है ।]

सुधीरा—काका जी के पैर छुओ, बेटा !

[हमीर स्तब्ध रहता है ।]

सुधीरा—हाँ, मेवाड़ के महाराणा अजयसिंह जी तुम्हारे काका हैं ।

[हमीर अजयसिंह के पैर छूता है ।]

अजय—प्रसन्न रहो बेटा, मेवाड़ की आशा, मेवाड़ के युवराज ! युवराज उस राज्य के जो आज शत्रु के अधिकार में है, जिसे पुनः प्राप्त करने के लिए खून की होली खेलनी पड़ेगी ।

हमीर—खून की होली में अवश्य खेलूंगा काका जी, और जन्म-भूमि को पराधीनता-पाश से मुक्त करने के लिए आठों पहर जूझूंगा; किन्तु युवराज या महाराणा बनाने की लालसा से नहीं ।

दुर्गा—तुम्हारी बीसवीं वर्षगाँठ पर महाराणा जी ने युवराज का पद तुम्हें उपहार-स्वरूप प्रदान किया । तुम्हें यह स्वीकार करना पड़ेगा ।

सुधीरा—वर्षगाँठ के उपहार का अनादर करना उचित तो नहीं है, हमीर अपने भाई सुजानसिंह के स्वप्न को भंग नहीं करेगा । अनायास एक अज्ञात युवक उनके मनोरथ के महल को धराशायी कर देगा तो उनका मन विद्रोह कर उठेगा । जिसका परिणाम गृह-युद्ध होगा, जिसका अन्तिम परिणाम देश की दासता की शृंखलाओं का दृढ़ होना होगा । मेवाड़ का सर्वनाश ।

अजय—नहीं भाभी, सुजान मेवाड़ की भँवर-ग्रस्त नौका का खेवट नहीं बन सकता—वह कायर, विलासी, आलसी और निर्लज्ज है । इसके अतिरिक्त मैं पिता जी की आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकता ।

चित्तौड़ के साके के समय पिता जी चाहते थे बड़े भैया—युवराज—जीवित रहें और मैं अपने अन्य ग्यारह भाइयों की भाँति युद्ध करते हुए प्राण विसर्जित करूँ; किन्तु बड़े भैया राज-बलि में सम्मिलित होने की हठ कर बैठे। उनकी हठ के आगे महाराणा जी को और मुझे भी हार माननी पड़ी और मेवाड़ वंश का स्वत्व करने के लिए सतत अलख जगाने के लिए मुझे जीवित रहना पड़ा।

दुर्गा—आपने आज तक अपनी आन को निभाया है।

अजय—मैं भैया के त्याग का अपमान नहीं सह सकता था इसलिए मैंने पिता जी से कहा—"अपने बाद भैया के पुत्र को मेवाड़ का अधिपति बनाने की अनुमति यदि आप मुझे दें तो मैं राज-बलि से विरत रहने को प्रस्तुत हूँ।" इसलिए बेटा हमीर, आज तक मैं तुम्हारी धरोहर का पहरेदार बनकर रहा—पहरेदार भी ऐसा, जो उसे लुटेरों से बचा नहीं पाया। अब तो सूचनावाहक के रूप में आया हूँ। अपना माल तुम्हें अपने ही बाहु-बल से प्राप्त करना है।

सुधीरा—ये बातें तो होती रहेंगी—यह तो बताओ मस्तक पर यह चोट कैसे लगी ?

अजय—स्वाधीनता-संग्राम के सैनिक को ऐसे पुरस्कार मिलते ही रहते हैं।

हमीर—किसने की है यह चोट आप पर ?

अजय—मुंज बलीचा का नाम तो सुना होगा तुमने हमीर, उसी की करतूत है यह। यह घाव जितना बाहर है उससे ज्यादा भीतर है। इसी का मरहम लेने तो आया हूँ हमीर के पास।

हमीर—(सुधीरा के पैर छूकर) मुझे आशीर्वाद दो माँ! मैं काका जी के घाव का मरहम लेने जाता हूँ।

[हमीर चल पड़ता है।]

अजय—कहाँ जा रहे हो? सुनो तो!

[अजय हमीर के पीछे जाने लगता है। सुधीरा रोकती है।]

सुधीरा—उसे मत रोको अजय! उसे पहली बार परीक्षा देने का अवसर मिला है। चलो, अन्दर चलकर भोजन करो।

[अजय और सुधीरा का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

छठा दृश्य

स्थान—एक पहाड़ी की तलहटी।

समय—रात्रि।

[हमीर और दलपति का प्रवेश]

हमीर—एक ही क्षण में मेरा संसार बदल गया। माता जी आए दिन कहती थीं कि मैं हमीर को मेवाड़ के राजसिंहासन पर देखूंगी—मैं इसे उनकी बहन समझता था—उनकी बात पर मुझे आश्चर्य भी होता था और क्रोध भी आता था।

दलपति—माता जी भी विचित्र हैं, अभी तक इतना बड़ा रहस्य छिपाये रहीं।

हमीर—यह तो बहुत अच्छा हुआ। बचपन से ही युवराजत्व का मान मुझे होता तो तुम्हारे-जैसे बन्धुओं के स्नेह से मुझे वंचित रहना पड़ता। गाँवों के स्वच्छन्द और निर्द्वन्द्व वायु-मण्डल में मुक्ति की साँस लेने को भी न मिलती।

दलपति—तुम्हारे परिचय को गुप्त रखने में मुझे तो माता जी की राजनीतिक चाल भी जान पड़ती है। भगवान् कृष्ण को भी तो नन्दलाल बनकर गोकुल-वृन्दावन में रहना पड़ा था।

हमीर—कहाँ कृष्ण, कहाँ अकिंचन हमीर।

दलपति—तुम्हें भी तो मालदेव जैसे दैत्यों का संहार करना है।

हमीर—तो क्या तुम भी बलराम जी की भाँति मेरा साथ निभाने को तैयार हो?

दलपति—अगर बड़प्पन के अभिमान में अपने महल और हृदय के द्वार अपने बाल-सखाओं के लिए बन्द न करो तो दलपति तुम्हारी छाया बनकर ही नहीं, बल्कि तुम्हारा दाहिना हाथ बनकर रहेगा।

हमीर—क्या तुम मुझे इतना नीच समझते हो कि अपने बचपन के साथियों को मैं भूल जाऊँगी।

दलपति—भूल जाना असम्भव तो नहीं है, बन्धु! प्रभुता और वभव पाकर मानव को अभिमान हो ही जाता है।

हमीर—तो मैं मानवता की हत्या करने वाली प्रभुता को ठोकर मार दूंगा। तुम लोगों के हृदय पर राज्य करना ही मुझे तो स्वर्ग-साम्राज्य का उपभोग करना है।

दलपति—कितने ऊँचे विचार हैं हमीर, तुम्हारे! क्षत्रिय जाति के दम्भ और अभिमान ने उन्हें सर्व-साधारण में भय की वस्तु बना दिया है, स्नेह और ममता का पात्र नहीं। तुम अब नई परम्परा चलाओगे जिसकी इस विपद-ग्रस्त समय में देश को बहुत आवश्यकता है।

हमीर—आज मुझ पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ पड़ा है, दलपति!

दलपति—वास्तविक रूप में मेवाड़ का महाराणा बनने का?

हमीर—नहीं, बल्कि देश को विदेशी सत्ता से स्वतन्त्र करने का।

दलपति—यह भार तो हमारे कधों पर सदा रहा है। माता जी बचपन से ही हमें देश-भक्ति की कहानियाँ सुनाती रही हैं—सदा ही विदेशियों से लोहा लेने की प्रेरणा हमारे प्राणों में भरती रही हैं। तुम राजवंश में पैदा न होते तब भी तो स्वाधीनता-संग्राम में तुम्हें हमारा नेतृत्व करना पड़ता।

हमीर—तो तुम्हें यही समझना चाहिए कि राजवंश से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। हम सब समान हैं, एक हैं, और एक रहकर मेवाड़ की मुक्ति के महायज्ञ में सम्मिलित होंगे।

[कुछ युवकों का प्रवेश।]

युवकदल—जय एकलिंग जी का!

हमीर—जय एकलिंग जी की!

एक युवक—हाँ कहिये, आज सिंह का शिकार करना है या शूकर का !

हमीर—दोनों में से किसी का नहीं।

दूसरा युवक—अर्थात् भगवान् बुद्ध बन गये हो।

हमीर—यह बात नहीं है लेकिन में सिंह और जंगली सूअर से भी भयानक जानवर का शिकार करना चाहता हूँ।

तीसरा—इनसे भी भयानक कौन है भैया ?

हमीर—मनुष्य ! में तुम्हें मनुष्य के शिकार पर ले चलूँगा। बोलो दोगे साथ मेरा।

पहला—आज तुम विचित्र बात कर रहे हो।

दलपति—आज विचित्र बात तो करेंगे ही—अब ये युवराज हो गए हैं।

दूसरा—युवराज ! हः हः हः, ऐसे ही होते हैं युवराज ! न चमकदार रेशमी अँगरखा, न रत्न-खचित स्वर्ण का राजमुकुट, न सोने की मूठ वाली तलवार ! हः हः हः।

दलपति—हँसो नहीं, हमीर सचमुच मेवाड़ के युवराज हैं।

तीसरा—कदाचित् मालदेव ने गोद ले लिया है।

दूसरा—नहीं, अपना जमाई बना लिया है—सुनते हैं उसकी पुत्री उर्वशी से भी अधिक सुन्दर है।

दलपति—लो, बोलो, तुम्हें विश्वास ही नहीं होता। आज ही यह रहस्य ज्ञात हुआ है कि यह सिसोदिया-वंश-गौरव स्वर्गीय अभयसिंह जी के पुत्र हैं और महाराणा अजयसिंह आज ही इन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाकर गए हैं।

पहला—(हमीर से) तब तो मिठाई खिलाओ।

दूसरा—मिठाई की बात छोड़ो, अब तो ये हम से बात करना भी पसन्द नहीं करेंगे।

हमीर—अब तो मुझे तुम लोगों की और भी ज्यादा जरूरत है।

तीसरा—किस लिए ? पीकदान उठाने के लिए ?

हमीर—नहीं, मेवाड़-भूमि को खून से लाल करने के लिए।

पहला—तुम तो सदा खून-ही-खून की माँग करते हो—बहुत प्यासे हो खून के।

हमीर—स्वाधीनता देवी का पोत रक्त-पारावार में से ही आता है इसीलिए मैं मेवाड़ में रक्त की वर्षा चाहता हूँ।

दलपति—मेवाड़ के विदेशी और देश-द्रोही स्वदेशी शत्रुओं का संहार करने में हमें हमीर का साथ देना होगा।

पहला—इसमें हम पीछे हटने वाले नहीं।

दूसरा—गाँव-गाँव से दल-के-दल युवक स्वाधीनता के मतवाले सैनिक बनकर निकल पड़ेंगे।

हमीर—हाँ, हमें ग्राम-ग्राम में विद्रोह-ज्वाला धधका देनी होगी। देश के प्रश्न पर जो हमारे साथ न होगा वह हमारा शत्रु होगा। ऐसे देश-द्रोहियों के भार से पृथ्वी को मुक्त करने में हम संकोच नहीं करेंगे।

दलपति—विदेशियों की सत्ता को मेवाड़ में दृढ़ करने वाला एक भी व्यक्ति यहाँ साँस नहीं लेने पायगा।

सब युवक—ऐसा ही होगा।

हमीर—तो आज ही इस महायज्ञ का आरम्भ होगा। इस यज्ञ की पहली हवि मैंने एक नर-मुण्ड चुना है। उस मुण्ड को धड़ से काटकर लाना साधारण साहस और पराक्रम का कार्य नहीं है। हमें मौत के मुँह में खेलना पड़ेगा।

पहला युवक—कोई चिन्ता नहीं, हम मौत के मुँह में खेलेंगे।

दूसरा—जल्दी बताओ, वह भयानक जन्तु कौन है ?

हमीर—मेरा अनुगमन करो। मैं मार्ग में सब-कुछ बता दूंगा।

तीसरा—हाँ, हाँ, चलो !

दलपति—जय एकलिंग जी की !

सब—जय एकलिंग जी की !

[**सब का प्रस्थान।**]

[**पट-परिवर्तन**]

सातवाँ दृश्य

स्थान—केलवाड़ा का राज-दरबार।

समय—दोपहर।

[महाराणा राजगद्दी पर आसीन हैं। मन्त्री, सेनापति, सुजानसिंह आदि यथा-स्थान बैठे हुए हैं।]

महाराणा—मेवाड़ के वीर पुरुषो, आज अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आपको बुलाया गया है। आशा है, आप मेरी प्रार्थना सदा की भाँति स्वीकार करेंगे।

मन्त्री—महाराणा जी की आज्ञा मेवाड़-निवासियों के लिए ईश्वरीय आदेश के समान है।

सेनापति—अनुशासन ही तो मेवाड़ की सर्वोपरि शक्ति है।

महाराणा—मैं बूढ़ा हो गया हूँ—किसी भी दिन मैं जीवन-तरु से टूटकर मृत्यु-धरा पर गिर पड़ूँगा।

मन्त्री—महाराणा जी, ऐसी अशुभ आशंका मन से निकाल दें।

महाराणा—यह आशंका नहीं, यह नग्न सत्य है। संघर्षों से मेरा शरीर जर्जर श्रान्त हो गया है। अब मैं चिर-शान्ति की कामना करता हूँ।

एक नवयुवक सरदार—शान्ति, महाराणा जी, आप यह क्या कह रहे हैं? महाराणा लाखा जी के वीर पुत्र के मुँह में शान्ति शब्द शोभा नहीं देता। मेवाड़ में जब तक एक भी आततायी बिदेशी का अस्तित्व है तब तक मेवाड़ियों को शान्ति कहाँ।

महाराणा—मैं तुम्हारे उत्साह से प्रसन्न हूँ। मैं शान्ति चाहता हूँ तो इसका यह तात्पर्य यह नहीं कि मैं मेवाड़ की जीवन-शक्ति की मृत्यु चाहता हूँ।

सेनापति—अनवरत संघर्ष जिनके जीवन की साँस है उनसे किसी कायरतापूर्ण निर्णय की हमें आशा ही नहीं है।

महाराणा—आपका मुझ पर जो विश्वास है उसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ किन्तु यह बात आप मानेंगे कि स्वर्गीय पिताजी ने मेवाड़ के उद्धार का जो भार मुझ पर डाला था उसे मैं निभा न सका।

मन्त्री—इसमें निराश होने की कोई बात नहीं। स्वाधीनता-संग्राम का निष्कर्ष एक-दो लड़ाइयों से नहीं निकलता। कभी-कभी तो पीढ़ियों तक संघर्ष करना पड़ता है। यदि प्रत्येक पराजय नवीन संघर्ष के निश्चय को दृढ़ करे तो पराजय भी विजय है।

सेनापति—हाँ, महाराणा जी, मेवाड़ को पराधीनता-पाश से मुक्त करना हमारा एकमात्र लक्ष्य है। संसार की कोई भी शक्ति अधिक काल तक चित्तौड़-दुर्ग पर अपनी पताका नहीं फहराने पायगी—उस पर एकमात्र बाप्पा रावल के वंशजों ही का अधिकार है, क्योंकि सहस्रों सिसौदियों ने उसे अपना तप्त रक्त पिलाया है।

महाराणा—निश्चय ही बलिदान व्यर्थ नहीं जाते। मुझे मेवाड़ के उज्ज्वल भविष्य पर पूर्ण विश्वास है, किन्तु मेरी धारणा है कि किसी पद-दलित देश के उत्थान के लिए ऐसे नेता की आवश्यकता होती है जिसकी भुजाओं में बल हो, आत्मा में विश्वास हो, मन में धैर्य हो, हृदय में उत्साह हो, आँखों में तेज और मस्तिष्क में विवेक हो। मैं किसी ऐसे ही महापुरुष को अपने मस्तक का मुकुट देना चाहता हूँ।

सेनापति—बाप्पा रावल के वंशज के अतिरिक्त इस मुकुट को कौन धारण कर सकता है?

महाराणा—नहीं सेनापति, अन्धविश्वास से देश का भला नहीं होगा। मेवाड़ की गद्दी पर उस व्यक्ति को बैठाना चाहिए जो सदा राजमहल के बन्दीगृह में ही न रहा हो; बल्कि जो गरीब देशवासियों के सुख-दुःख का साझीदार भी रहा हो—जो जननी-जन्मभूमि की पीड़ा से परिचित हो, जिसके साहस को जनता के विश्वास का सहारा हो।

[मुंज का कटा हुआ मस्तक हाथ में लटकाए हुए हमीर का प्रवेश।]

हमीर—मेवाड़ के महाराणा जी को हमीर प्रणाम करता है। **(मुंज का मस्तक महाराणा के चरणों में रखकर)** पहचानिये, क्या यही है वह कापुरुष, जिसने आपके कपाल पर आघात किया था।

महाराणा—**(सिंहासन से उतरकर हमीर को गले लगाते हुए)** धन्य हो हमीर! तुमने मेरे कलेजे का घाव भर दिया, अपनी धीर वीर माता के दूध को कृतार्थ कर दिया। आज तुम्हारे स्वर्गीय पिता तुम्हारे अनुपम साहस से पुलकित हो रहे होंगे। **(दरबारियों से)** मेवाड़ के उद्धार के लिए जिस महान् नेता की हमें आवश्यकता है उसे हमने प्राप्त कर लिया है। हमीर ही बाप्पा रावल की गद्दी का स्वामी होगा।

सेनापति—महाराणा जी सिसौदिया-वंशज आपके इस निर्णय के विरुद्ध विद्रोह कर देंगे। बाप्पा रावल के वंशज ही इस गद्दी पर आसीन हो सकते हैं।

महाराणा—हमें देश का हित देखना है!

मन्त्री—आप में नेता और राजा होने के सभी गुण हैं—आपके पश्चात् राजकुमार सुजानसिंह स्वाभाविक उत्तराधिकारी हैं।

महाराणा—तुम्हारी क्या सम्मति है, सुजान!

सुजान—मैं अपने प्रमोद और अकर्मण्यता का प्रायश्चित्त करने के लिए इस गद्दी का अधिकार छोड़ता हूँ।

महाराणा—धन्य हो, सुजान! सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाय तो वह भूला हुआ नहीं कहाता। मेवाड़ के हित के लिए तुम्हारा त्याग भी चिर-स्मरणीय रहेगा।

मन्त्री—किन्तु मेवाड़ के सामन्तों की आपत्ति का निराकरण होना चाहिए। सिसौदिया भगवान् राम के वंशज हैं, वे अपने से छोटी जाति वाले व्यक्ति को अपना प्रभु स्वीकार नहीं करेंगे।

महाराणा—ऊँच-नीच की भावना मेवाड़ के ही नहीं, सम्पूर्ण भारत

के सर्वनाश का कारण है। मैं इस भावना का अन्त चाहता हूँ। मैं हमीर को आज्ञा देता हूँ कि वह सिंहासन पर विराजमान हो।

हमीर—नहीं काकाजी, आपके रहते मैं यह धृष्टता नहीं करूँगा। एकलिंगजी आपको दीर्घायु करें और दीर्घ काल तक मुझे आपकी सेवा करने का अवसर मिले।

मन्त्री—युवक, महाराणा जी तुम्हारे काका हैं?

महाराणा—हाँ, ये स्वर्गीय अरिसिंह जी के पुत्र हैं। जिस समय चित्तौड़ में जौहर हुआ था उस समय भाभी गाँव में थी और हमीर गर्भ में। पूज्य पिता जी की आज्ञा थी कि भाभी पुत्र को जन्म दे तो वही मेवाड़ का महाराणा हो। बैठो, हमीर गद्दी पर।

हमीर—नहीं काकाजी, यह नहीं होगा।

महाराणा—अच्छी बात है, तो मैं **(मुंज के सिर से बहते हुए खून से हमीर का टीका करते हुए)** शत्रु-रक्त से तुम्हारा टीका करके तुम्हें युवराज घोषित करता हूँ।

सुजान—युवराज हमीर की जय!

सब—युवराज हमीर की जय!

[पटाक्षेप]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—चित्तौड़ के राजमहल में कमला का कक्ष।

[कमला खिड़की के पास खड़ी हुई गा रही है।]

कमला—(गीत)

दिल में दीपक कौन जलाता?
नभ में घोर घटा छा जाती,
अँधियारी जब जाल बिछाती,
भय से कम्पित होती छाती,
तब आ, धीरज कौन बँधाता?
दिल में दीपक कौन जलाता?
तूफानों में तरणी पड़ती,
लहरों से अविराम झगड़ती,
मृत्यु ग्रास करने को बढ़ती,
तब उस पार कौन पहुँचाता?
दिल में दीपक कौन जलाता?
टूट चुके हैं तार हृदय के,
चुभे प्राण में बाण प्रलय के,
फिर भी गाकर गीत प्रणय के,
कौन मुझे है पास बुलाता?
दिल में दीपक कौन जलाता?

[जाल का प्रवेश]

जाल—आज तो तू बहुत प्रसन्न है और बात है भी प्रसन्न होने की।

कमला—कौनसी बात, काकाजी!

जाल—पहले मुंह मीठा करा, पीछे बताऊंगा।

कमला—ऊँ हूँ—पहले बात बताइए।

जाल—ऊँ हूँ, पहले मुंह मीठा करा।

कमला—मीठा खाने से पेट में कीड़े पड़ जाते हैं।

जाल—मीठी बात सुनने से हँस-हँसकर पेट फट जाता है।

[कमला और जाल दोनों हँस पड़ते हैं]

जाल—आज तू फिर विधवा हो गई है।

कमला—मैं फिर सुहागिन कब हुई थी जो विधवा होती ?

जाल—जिसके साथ ब्याह होने वाला हो यदि वह संसार से कूच कर जाय तो होने वाली सुहागिन आधी विधवा तो हो ही जाती है।

कमला—आपके बाल सफेद हो गए, लेकिन हँसी करने की आदत नहीं गई।

जाल—अच्छा बताओ, हँसी का रंग कैसा है ?

कमला—उज्ज्वल, श्वेत, दूध-जैसा, चाँदनी की तरह।

जाल—तब बस ठीक है, ज्यों-ज्यों बाल सफेद होते हैं त्यों-त्यों हँसी की मात्रा बढ़ती है।

कमला—लेकिन कई श्वेत केशधारी शोक की प्रतिमा बने रहते हैं।

जाल—उनका हृदय काला होता है।

कमला—मूल बात को तो आपने हवा में ही उड़ा दिया।

जाल—मूल समाचार यह है कि मुंज बलीचा का मस्तक एक साहसी नवयुवक ने काट डाला है।

कमला—सचमुच उसने पुरस्कार पाने योग्य काम किया है !

जाल—दोगी पुरस्कार उसे ?

कमला—अवश्य।

जाल—अगर उसने तुम्हें ही पुरस्कार-स्वरूप मांगा तो···

कमला—काकाजी, बार-बार हृदय के घाव को हरा क्यों करते हो ?

जाल—पगली, मैं तो हँसी की दो बातें करके तेरा जी बहलाना चाहता हूँ। ये बातें तुझे दुखी करती हैं तो फिर ऐसी हँसी नहीं करूँगा।

कमला—वह पराक्रमी नवयुवक कौन है जिसने उस नराधम के भार से पृथ्वी को मुक्त कर दिया।

जाल— उसका नाम है हमीर !

कमला—सर्वथा अनजाना नाम है।

जाल—हाँ, उसकी चतुर, धैर्यवान, वीर और दूरदर्शी जननी ने सिसौदिया-कुल-दिवाकर को राहुओं की दृष्टि से बचाने के लिए उसे छद्म परिचय के बादलों में छिपाकर रखा था।

कमला—सिसौदिया-कुल से उसका क्या सम्बन्ध ?

जाल—वह मेवाड़ का वास्तविक स्वामी है !

कमला—और महाराणा अजयसिंह ?

जाल—उनसे पहले हमीर मेवाड़ के सिंहासन का अधिकारी है। वह स्वर्गीय महाराणा लाखा जी के ज्येष्ठ स्वर्गीय अरिसिंह का पुत्र है।

कमला—विचित्र रहस्य है यह ! चित्तौड़ के साके में अजयसिंह जी के अतिरिक्त और कौन शेष रहा था ? पुरुष तो क्या, क्षत्राणियों ने भी महारानी पद्मिनी के साथ जाज्वल्यमान जौहर की ज्वाला में जीवन की आहुति दे दी थी।

जाल—लेकिन युवराज अरिसिंह की सबसे प्रिय, सूर्य-समान तेजस्विनी, भवानी दुर्गा के समान शक्तिशालिनी अर्धाङ्गिनी सुधीरा अपने पिता की झोंपड़ी थी।

कमला—झोंपड़ी में ?

जाल—हाँ, वह गरीब राजपूत की बेटी थी। राजमहल का वैभव किसान-कन्या का तिरस्कार करेगा इस आशंका से उसने सदा झोंपड़ी में ही रहना पसन्द किया।

कमला—अरिसिंह जी ने किसान-कन्या से विवाह क्यों किया ? क्या वह बहुत रूपवती थी ?

जाल—युवराज उसके रूप नहीं, साहस और शक्ति पर मुग्ध हुए थे। उस दिन मैं भी युवराज के साथ आखेट के लिए गया था जब उस निर्भीक किसान-कन्या ने सबको स्तंभित कर दिया था। अहा, दिव्य था वह दृश्य !

कमला—आपने तो मेरी उत्सुकता बढ़ा दी है। मुझे भी सुनाइए न वह घटना।

जाल—वे युवराज अरिसिंह की जवानी के दिन थे। वे मित्रों सहित शिकार खेलने गए थे। एक जंगली सूअर का हम लोगों ने पीछा किया जो एक खेत में घुस गया। सुधीरा खेत की रखवाली कर रही थी। युवराज के साथी सूअर को खोजने घोड़ों पर चढ़े हुए खेत में घुसने लगे तो वह बाला सामने आकर बोली—"खेत बर्बाद न करो, मैं तुम्हारा शिकार तुम्हारे सामने उपस्थित किये देती हूँ।" इतना कहकर वह बिजली की तरह खेत में घुस गई और उस सूअर को खदेड़ती हुई बाहर ले आई।

कमला—अद्भुत निर्भीक बालिका थी वह !

जाल—सचमुच अद्भुत। अंग-अंग साँचे में ढला हुआ। सुदृढ़। युवराज के हृदय पर उसके रूप से ज्यादा साहस की छाप पड़ी थी। जिस समय हम लोग वापिस चित्तौड़ लौट रहे थे तो रास्ते में देखा—वही अल्हड़ बालिका दोनों बगलों में एक-एक भैंस का बच्चा दबाए और सिर पर दूध का घड़ा रखे जा रही है।

कमला—अद्भुत !

जाल—सचमुच अद्भुत ! युवराज को दिल्लगी सूझी और उन्होंने उसके पास घोड़ा ले जाकर दूध का घड़ा गिराना चाहा—लेकिन लड़की भाँप गई। उसने भैंस के बच्चे को राजकुमार के घोड़े की टाँगों में डाल दिया। घोड़ा लड़खड़ाकर गिर पड़ा, राजकुमार भी धूल चाटने लगे और लड़की खिलखिलाकर हँस पड़ी।

कमला—अद्भुत !

लाज—सचमुच अद्भुत ! राजकुमार के हृदय में उसने घर कर लिया। उसी अद्भुत किसान का अद्भुत पुत्र है हमीर; जो सैकड़ों लोगों के बीच भरे दरबार में से मुंज का सिर काटकर ले गया।

कमला—ऐसा ही व्यक्ति मेवाड़ को स्वाधीन कर सकता है।

जाल—निश्चय ही यदि तुम्हारे-जैसी वीर बाला उसके साथ हो।

कमला—मैं उनके साथ ?

जाल—दोनों के जीवन की मंजिल एक है ! अच्छा बेटी, अब मैं जाता हूँ।

कमला—चलिए, मैं भी द्वार तक आपको पहुँचा आऊँ।

[दोनों का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

स्थान—केलवाड़ा की राज-वाटिका ।

समय—सन्ध्या ।

[सुजानसिंह और भूपति घूम रहे हैं]

भूपति—सुना तुमने राजकुमार, युवराज हमीरसिंह जी ने आज्ञा दी है कि मेवाड़ की पताका की छाया में विदेशियों से युद्ध करने के इच्छुक व्यक्ति, चाहे वे किसी भी जाति या किसी भी वर्ग के हों, कल प्रात:काल भवानी के मन्दिर के सामने के मैदान में उपस्थित हों ।

सुजान—ठीक तो है, हमीर ने मेवाड़ी सेना का संगठन प्रारम्भ कर दिया है ।

भूपति—सेना का संगठन या अपनी शक्ति और सत्ता का दृढ़ीकरण ?

सुजान—उनकी सत्ता तो सुदृढ़ है ही, क्योंकि पिताजी ने उन्हें युवराज घोषित कर ही दिया है ।

भूपति—साधारण किसान की पुत्री की सन्तान को मेवाड़ के राजपूत सरदार राजा मानने को कभी तैयार नहीं होंगे ?

सुजान—क्या वे महाराणा जी की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह करेंगे ?

भूपति—सम्भव है महाराणा जी के जीवन-काल में वे शान्त रहें किन्तु उनके पश्चात् ऐसा बवंडर उठेगा कि हमीर उसमें पत्ते की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे ।

सुजान—वे राज-मुकुट किसे पहनायेंगे ?

भूपति—सभी सामन्तों की आप पर आस्था है । महाराणा जी ने आपके प्रति अन्याय किया है—एक दिन इस अन्याय का निराकरण तो होगा ही ।

सुजान—किन्तु मैं तो राज-सिंहासन के लिए लालायित नहीं हूँ। इस प्रतिस्पर्धा में मैं नहीं पड़ूँगा।

भूपति—आपकी सहनशीलता, नम्रता, शालीनता और भोलेपन ने उनका उत्तरदायित्व बढ़ा दिया है। आपकी माताजी राजकुल की थीं—आप राज-महलों में पले हैं, राजसी रीतियों—परिपाटियों से परिचित हैं। किसान की झोंपड़ी में जन्म लेने वाला, देहातियों की दुनिया में जीवन यापन करने वाला हमीर तो महलों को भी झोंपड़ी बना देगा।

सुजान—राजा-प्रजा का अन्तर जितना कम होगा मेवाड़ की शक्ति उतनी ही बढ़ेगी।

भूपति—मेवाड़ के सभी सेठ-साहूकार, सामन्त-जमींदार और जागीरदार विरुद्ध हो जायँगे। मेवाड़ की शक्ति छिन्न-भिन्न हो जायगी। धनाभाव में सेना और अस्त्र-शस्त्र का संग्रह भी असम्भव हो जायगा।

सुजान—केवल वेतन के लोभ से लड़ने वाले सैनिकों की हमीर को आवश्यकता भी न होगी। ये किराये के टट्टू कभी प्राणों की बाजी लगाकर स्वाधीनता-संग्राम में जूझेंगे नहीं। हमीर की सेना तो उन दीवाने देश-प्रमियों की होगी जो जननी-जन्म-भूमि के बन्धन काटने के लिए प्राण चढ़ाने में होड़ लगायेंगे।

भूपति—बड़े भोले हो सुजान! कंचन की शक्ति को आप समझते नहीं हो। जिस समय इन देश के दीवानों को कंचन दिखाया जायगा इनकी देश-भक्ति पानी हो जायगी। ये भी उसी सेना के सैनिक होंगे जो इन्हें कंचन देगा। फिर जिसका ये नमक खायँगे उसी के हित में संग्राम करेंगे।

सुजान—हमीर को अपने पक्ष में कोई भी नहीं मिलेगा, यह मैं नहीं मानता।

भूपति—मिलेंगे क्यों नहीं? उन्हें मिलेंगे कुछ भील, मीना-जैसे असभ्य और जंगली लोग, या ऐसी नीच जाति वाले, जिन्हें ऊँची जाति वालों से द्वेष है। परिणाम होगा सारे मेवाड़ में गृह-युद्ध! जिस देश में

गृह-युद्ध छिड़ जाय वह क्या कभी स्वतन्त्र हो सकता है ! इस गृह-युद्ध को रोकने के लिए भी हमीर को बाप्पा रावल के पवित्र राज-सिंहासन पर आसीन नहीं होने देना चाहिए।

सुजान—तब तुम मुझे क्या करने को कहते हो ?

भूपति—मैं तुम्हें जीवित देखना चाहता हूँ। जिस व्यक्ति में महत्त्वाकांक्षा नहीं है, वह मुर्दा है। संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, प्रभुता-प्राप्ति की इच्छा ही तो जीवन के चिह्न हैं। आपसे तो वह मालदेव अधिक आदर का पात्र है जो चौहानों के गत गौरव को प्राप्त करने के लिए संलग्न है।

सुजान—विदेशियों के हाथ की कठपुतली उस देश-द्रोही की तुम प्रशंसा करते हो ?

भूपति—उतनी ही दूर तक, जहाँ तक वह शासक बनने के लिए संघर्ष करते हैं। शासक वंश की सन्तान में राजा बनने की इच्छा रहती है। यही इच्छा मैं आप में देखना चाहता हूँ।

सुजान—तुम चाहते हो शासक बनने के लिए मैं अपने भाई से लड़ूँ।

भूपति—मैं हमीर को आप के स्वत्व पर छापा मारते हुए नहीं देख सकता—और मेरे साथ मेवाड़ के अधिकांश सामन्त हैं।

सुजान—किन्तु पिताजी को हमीर की वीरता और शक्ति पर विश्वास है। वह समझते हैं कि हमीर चित्तौड़ पर फिर सिसौदिया का झण्डा फहरा सकेंगे।

भूपति—यह भी उनका भ्रम है। खुली लड़ाई में सिसौदिया चौहानों से नहीं जीतेंगे—उनकी पीठ पर दिल्लीश्वर की शक्ति है। मेवाड़ के उद्धार के लिए हमें अन्य उपाय काम में लाना पड़ेगा।

सुजान—अन्य उपाय क्या ?

भूपति—छल।

सुजान—छल करना कायरता है।

भूपति—कायरता नहीं, यह राजनीति है। चन्द्रगुप्त मौर्य को चाणक्य-जैसा छल-प्रपंच-प्रवीण राजनीतिज्ञ न मिला होता तो क्या वह

भारत-सम्राट् बन पाता ?

सुजान—तो तुम मेरे चाणक्य बनना चाहते हो ?

भूपति—हाँ, यदि आप चन्द्रगुप्त बनने को उत्सुक हों ?

सुजान—यदि मेवाड़ के उद्धार का कोई मार्ग निकलता हो तो मैं प्रस्तुत हूँ।

भूपति—इसके लिए आपको महाराणा जी से विद्रोह करना पड़ेगा।

सुजान—ऐसी नीचता मैं नहीं करूँगा।

भूपति—महाराणा से न सही, हमीर से तो विद्रोह कर सकोगे। महाराणा जी का क्या वह तो कुछ दिनों के मेहमान हैं।

सुजान—क्या तुम ज्योतिषी हो ?

भूपति—निश्चय ही। मनुष्य चाहे तो नक्षत्रों की गति बदल सकता है। आप आज्ञा तो दें, मैं मेवाड़ के भाग्य-चक्र को इस तरह घुमाऊँ कि संसार चकित हो जाय। बाप्पा रावल का राज-मुकुट हमीर के मस्तक पर न होकर सुजानसिंह के मस्तक पर हो।

सुजान—मुझे राज-मुकुट की लालसा नहीं है—हाँ चित्तौड़-दुर्ग पर सिसोदिया-पताका मैं देखना चाहता हूँ।

भूपति—हमीर की उद्दंडता तो सिसौदिया राज-वंश के अवशेष राज्य को भी समाप्त करा देगी। इसकी रक्षा करने के लिए आप मालदेव से मिलिये—कुछ दिनों के लिए उसकी अधीनता स्वीकार कीजिये। उसकी सहायता से हमीर का अन्त कीजिये और अवसर पाकर मालदेव का भी।

सुजान—इस भयंकर दुश्चक्र में मैं नहीं पड़ूँगा।

भूपति—ओ हो, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। मेरे साथ मेरे घर चलिये, मैं आपको सारी योजना बताऊँगा।

[**दोनों का प्रस्थान।**]

[**पट-परिवर्तन**]

तोसरा दृश्य

स्थान—मेवाड़ का एक जंगल ।

समय—रात्रि ।

[मालदेव, भूपति और जाल चले जा रहे हैं । सभी शस्त्रधारी हैं ।]

माल—जाल जी, आप बूढ़े तो हो गए हैं लेकिन शिकार का शौक आपका अभी तक जवान है ।

जाल—स्वर्गीय अरिसिंह जी मुझे भाई के समान मानते थे और वह तो शिकार के पीछे दीवाने थे । उन्होंने ही यह रोग मुझे लगा दिया ।

माल—उन्हीं अरिसिंह का पुत्र हमीर अब मेवाड़ का युवराज बना है । कहीं ऐसा न हो कि आपके हृदय में पुरानी मित्रता प्रबल हो उठे और आप हमारे ही विरुद्ध षड्यन्त्र कर बैठें ।

जाल—आप भी क्या कहते हैं—बनिया-बुद्धि तो हिसाबी होती है । हमीर का साथ देने में मेरा क्या लाभ है । बीस वर्ष से आपका नमक खा रहा हूँ—भला आपको धोखा दूंगा ।

भूपति--आपने अपने जाति-धर्म को धोखा दिया है । महाराव को दें, तो आश्चर्य क्या ?

जाल—जाति-धर्म को क्या धोखा दिया है मैंने ?

भूपति—बनिया होकर इतनी लम्बी तलवार बाँधी है ।

जाल—हः हः हः! अरे भाई, मै तो हिसाबी हूँ—वही कहता हूँ जो नीति-संगत और लाभ-प्रद हो । आज की दुनिया का सिद्धान्त है—जिसकी लाठी उसकी भैंस । बनिये के पास जितनी भैंसें होती हैं उतनी और किसी के पास नहीं; इसलिए लाठी क्या, तलवार की भी जरूरत है।

भूपति—अजी हम तो मौजूद हैं आपकी भैंसों की रखवाली करने के लिए ।

जाल—अजी कभी-कभी रक्षक ही भक्षक बनने लगते हैं; उस समय अपने हाथ की लाठी काम आती है।

माल—आपके कहने का तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति क्षत्रिय बन जाय और अपनी रक्षा स्वयं करे।

जाल—जिस दिन ऐसा हो जायगा उस दिन को मैं तो शुभ समझूंगा। जब सभी सबल और सशस्त्र और स्वाभिमानी होंगे तो कोई किसी पर प्रभुत्व स्थापित करने का साहस नहीं करेगा। संसार को निःशस्त्र बनाकर शान्ति स्थापित करना तो मृत्यु का आवाहन करना है। चोर-लुटेरों को मनमानी करने की स्वतन्त्रता देना है।

भूपति—आपके सिद्धान्त के अनुसार मेवाड़ के प्रत्येक नागरिक और ग्रामीण को शस्त्रों से सज्जित कर दिया जाय।

जाल—निश्चय ही।

मालदेव—तब तो वह एक दिन में राजा की सत्ता को समाप्त कर देंगे।

जाल—इस भय से तो राजा प्रजा का सेवक बनकर ही रहेगा।

माल—हम लोग आए हैं आखेट के लिए और छेड़ बैठे राजनीति की चर्चा। चलो उस तलहटी में हमें अच्छा शिकार मिलेगा।

भूपति—उधर भूलकर भी न जाइए। उसी तलहटी के गाँव में तो हमीर की माँ रहती है। वहाँ के बूढ़े-बच्चे, स्त्री-पुरुष सभी आपकी जान के गाहक हैं।

माल—ऐसी बात है तो कल ही इस गाँव को फुंकवा दूंगा।

भूपति—एक गाँव को फुंकवाने से क्या होगा? मेवाड़ के प्रत्येक गाँव में हमीर की ख्याति पहुँच चुकी है। उसने जिस अद्भुत साहस से सैकड़ों आदमियों के बीच मुंज का सिर काट डाला और सबको चीरता हुआ सिर लेकर निकल गया, इससे लोग उसे अवतारी पुरुष मानने लगे हैं।

माल—मैं तो समझता हूँ मुंज के सैनिक हमीर से मिल गए थे।

भूपति—हो सकता है—और सच पूछा जाय तो अधिकांश मेवाड़ियों की सहानुभूति महाराणा और उनके परिवार के साथ है । आप मेवाड़ पर प्रभुत्व स्थिर रखना चाहते हैं तो केवल विदेशी सेना पर्याप्त न होगी।

माल—वर्तमान परिस्थितियों में और किया ही क्या जा सकता है ?

भूपति—महाराणा के समर्थकों में फूट डालने का प्रयत्न ।

जाल—ठीक तो है । इसका उपाय मै बता सकता हूँ ।

माल—हाँ, इस सन्देह नहीं कि आपका मस्तिष्क अद्‌भुत है । आप निश्चय ही कोई उपाय ढूंढ़ निकालेंगे ।

जाल—निकालेंगे क्या—मैंने निकाल लिया है । आप हमीर से अपनी कमला का ब्याह कर दीजिए ।

माल—कमला का ब्याह—यह आप क्या कह रहे हैं ?

जाल—मुंज से आप करने ही वाले थे ।

माल—वह एक राजनीतिक बेबसी थी ।

जाल—यह एक राजनीतिक जरूरत है ।

माल—इससे लाभ क्या होगा और सिसौदिया राज-वंश विधवा से विवाह स्वीकार कैसे करेगा ?

जाल—ओहो, आप समझे नहीं । आप कमला को कुमारी ही बताइये । ब्याह हो जाने के बाद जाहिर कर दीजिए कि कमला विधवा थी । अधिकांश राजपूत हमीर का साथ छोड़ देंगे । धर्म-विरुद्ध विधवा-विवाह करने वाले हमीर का कौन समर्थक होगा । सिसौदियों की शक्ति छिन्न-भिन्न हो जायगी ।

भूपति—उपाय तो उत्तम है । इसका भी उपयोग करना चाहिए । असल में दिल्ली के विदेशी शासक भी नहीं चाहते कि महाराणा बिलकुल ही शक्तिहीन हो जायँ—हमारा पारस्परिक संघर्ष उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक है ।

जाल—हाँ, उनका जो समर्थन और संरक्षण आज महाराव को मिला हुआ है इस कारण पैर जमाने के लिए उन्हें कुल भारतीयों का

सहारा चाहिए ।

माल—इसे मैं समझता हूँ । समय आने पर मैं दिल्ली की सत्ता से भी दो हाथ कर लूंगा—लेकिन पहले यहाँ का काँटा दूर करना चाहिए ।

जाल—निश्चय ही ।

भूपति—मैं राजकुमार सुजानसिंह का आत्मीय बन गया हूँ । एक चिनगारी मैंने ऐसी छोड़ी है जो शीघ्र ही भयंकर ज्वाला में प्रस्फुटित होगी । उसकी लपटों में सम्पूर्ण सिसौदिया-राजवंश भस्मसात् हो जायगा ।

माल—वह चिनगारी क्या है ?

भूपति—अभी से जानकर क्या कीजिएगा—समय आने पर सम्पूर्ण संसार एक भयानक विस्फोट और प्रलयंकारी लपटों को देखेगा !

[सिंह की दहाड़ सुनाई देती है ।]

माल—लपटें तो जब उठेंगी तब देखेंगे—अभी तो उस सिंह की खबर लें ।

[सब का प्रस्थान ।]

[पट-परिवर्तन]

चौथा दृश्य

स्थान—अजयसिंह के राजमहल का बरामदा।

समय—रात्रि का प्रथम पहर।

[**अजयसिंह और हमीर का प्रवेश। एक सेवक आकर महाराणा के अँगरखे आदि खोलता है। महाराणा केवल एक कुरता-पाजामा पहने रहते हैं। सेवक उतारे हुए कपड़े ले जाने लगता है किन्तु उनके हाथ की नंगी तलवार को नहीं छूता। महाराणा और हमीर रखे हुए आसनों पर बैठते हैं।**]

महाराणा—(गमनोद्यत सेवक से) पानी लाओ!

सेवक—अन्नदाता! पानी या शरबत?

महाराणा—अच्छा शरबत ही ले आओ।

[**सेवक का प्रस्थान।**]

महाराणा—(हमीर से) अब तुम्हारी माता जी को यहीं आ जाना चाहिए।

हमीर—वह तो अपनी झोंपड़ी छोड़ना नहीं चाहतीं।

महाराणा—जब तुम मालदेव से युद्ध छेड़ने वाले हो—और जब सम्पूर्ण मेवाड़ में विद्रोह की लपटें उठने वाली हैं तब उनका उस अरक्षित देहात में रहना सुरक्षित नहीं है।

हमीर—उन्हें राज-शक्ति से अधिक ग्रामीणों पर विश्वास है और कहती हैं—"मैं वीरांगना हूँ—अपनी मृत्यु का पूरा मूल्य वसूल किये बिना मैं इस संसार से विदा न लूंगी।"

[**सेवक आकर शरबत का पात्र महाराणा को देता है।**]

महाराणा—(शरबत पीते हुए) वाह, बहुत स्वादिष्ट है! अद्भुत!

(सेवक से) युवराज के लिए भी लाओ ।

हमीर—नहीं, मेरे लिए नहीं । जो वस्तुएँ बेचारे निर्धन किसानों को दुर्लभ हैं उनका उपभोग मैं भी नहीं करूँगा ।

सेवक—एक गिलास लीजिए न । राजकुमार सुजानसिंह जी ने विशेष रूप से दिल्ली से मँगवाया है । आप नहीं पियेंगे तो उनका मन दुखेगा ।

हमीर—नहीं, मैं नहीं पिऊँगा ! तुम जाओ ।

[**सेवक का प्रस्थान ।**]

महाराणा—हमीर, तुम्हारे आविर्भाव ने मेवाड़ की नसों में नवीन रक्त-संचार किया है । ऐसी जागृति यहाँ पहले कभी नहीं दिखाई दी ।

हमीर—इसका अधिक श्रेय माताजी, दुर्गा मौसी और मेरे बाल-बन्धु दलपति को मिलना चाहिए जो गाँव-गाँव जाकर स्वाधीनता-संग्राम के लिए सैनिक एकत्रित कर रहे हैं ।

[**मन्त्री का प्रवेश ।**]

मन्त्री—क्षत्रिय-कुल-प्रभाकर महाराणा जी का दास प्रणाम करता है ।

हमीर—आइये मन्त्री जी !

[**मन्त्री आसन ग्रहण करता है ।**]

महाराणा—कहिये, कोई नया समाचार है ?

मन्त्री—मालदेव ने सन्देश भेजा है कि यदि आप केलवाड़ा के आस-पास का प्रदेश लेकर सन्तोष कर लें तो सिसौदियों और चौहानों का संघर्ष सदा के लिए समाप्त हो सकता है ।

हमीर—धूर्त ! इसे सिसौदिया और चौहानों का संघर्ष बताकर मेवाड़ियों में भ्रम फैलाता है । मालदेव और उसके पथ-भ्रष्ट साथी तो विदेशी शासन के यन्त्र मात्र हैं । हमारा युद्ध तो विदेशी शक्ति से है ।

मन्त्री—उनके सन्देश का उत्तर तो देना ही होगा ।

हमीर—इसका उत्तर तो हमारी तलवार देगी।

महाराणा—ओह! **(बेचैन होकर सीना थामते हैं।)**

हमीर—**(महाराणा के पास आकर उन्हे सँभालते हुए)** क्या हुआ काकाजी!

महाराणा—मैं सुजानसिंह को इतना नीच नहीं समझता था।

मन्त्री—**(घबराया हुआ महाराणा के पास आकर)** क्या किया राजकुमार ने?

महाराणा—हाय रे राज-मुकुट का मोह! पुत्र पिता के प्राण लेने के लिए उतारू हो गया। हमीर, सुजान को बुलाओ।

[हमीर का प्रस्थान।]

मन्त्री—क्या बात है महाराणा जी, आपके ओठ नीले पड़ रहे हैं। मैं वैद्यराज को लाता हूँ।

[मन्त्री जाने लगता है। महाराणा उसका हाथ पकड़ लेता है।]

महाराणा—मेवाड़ का उद्धार राज-बलि चाहता है मन्त्री जी! वैद्यजी के आने तक साँसों का धागा टूट जायगा। अच्छा है, मेरे जीवन की आहुति लेकर यह गृह-कलह शान्त हो जायगा।

[हमीर और सुजानसिंह का प्रवेश।]

महाराणा—**(हमीर से)** दे दो अपनी तलवार इसे।

[हमीर अपनी तलवार सुजान के सामने रख देता है। सुजानसिंह तलवार उठाता नहीं है।]

सुजान—पिताजी!

महाराणा—तू मुझे और हमीर को मारकर राज-मुकुट चाहता है न!

सुजान—नहीं पिताजी !

महाराणा—कापुरुष, झूठ भी बोलता है ! ज़हर क्षत्रिय का शस्त्र नहीं है। तू मुझे मारना चाहता है तो उठा तलवार ! मेरी नस-नस में ज़हर व्याप गया है लेकिन मैं अब भी तलवार चला सकता हूँ।

मन्त्री—(**हमीर से**) आप महाराणा जी को शयन-कक्ष में ले जाकर लिटायँ, मैं वैद्यराज को लेकर आता हूं।

[**मन्त्री का प्रस्थान।**]

हमीर—काकाजी, शांत हो जाइये—और अन्दर चलकर विश्राम कीजिए।

महाराणा—(**हमीर को जोर से धक्का देकर**) हट जाओ, हमीर ! मेरे जीवन की अन्तिम अभिलाषा पूर्ण करने दो मुझे। मैं इस नराधम देश-द्रोही को मारकर ही मरूँगा।

सुजान—पिताजी ! आप क्या कह रहे हैं ? किसने आपको ज़हर दिया है ?

महाराणा—कितना भोला बनता है ! सेवक के हाथ शरबत में ज़हर तूने नहीं तो किसने भेजा था ?

सुजान—हे भगवान् ! यह क्या हुआ ?

महाराणा—अब भगवान् से पूछता है। धूर्त ! सेवक ने ही कहा है कि तू ने विशेष रूप से दिल्ली से मँगवाया है शरबत !

सुजान—यह किसी शत्रु का षड्यन्त्र है। मुझे जिस दिन राज-मुकुट की इच्छा होगी उस दिन मैं सिसौदिया-वंश की कीर्ति के अनुकूल शस्त्र ग्रहण करूँगा। यदि आप वास्तव में सेवक के कथन पर विश्वास करते हैं तो मेरा सिर काट डालिये अपनी तलवार से।

[**महाराणा कुछ नहीं बोलते**]

सुजान—मैं विलासी हूँ, आलसी हूँ, किन्तु कायर और कपटी नहीं हूँ। मेरी नसों में भी तेजस्वी पिता का रक्त प्रवाहित होता है। मैं

अपने मस्तक पर इतना बड़ा कलंक का टीका लेकर यहाँ नहीं रह सकता। आप मुझे मृत्यु-दण्ड दीजिए या मैं अपनी इच्छा से सदा के लिए मेवाड़-भूमि को त्यागकर चला जाऊँगा।

[**मन्त्री का वैद्यराज के साथ प्रवेश।**]

वैद्यराज—महाराणा जी को भीतर ले चलो।

महाराणा—अब आपका प्रयत्न कुछ काम नहीं आयगा वैद्यराज!

वैद्यराज—फिर भी कहा है—'जब तक स्वासा तब तक आशा'। अतः मुझे यत्न करने दीजिए।

हमीर—चलिए काकाजी!

[**सब महाराणा को अन्दर लेकर जाते हैं।**]

[**पट-परिवर्तन**]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—पठार

समय—प्रभात।

[दलपति तथा अन्य अनेक युवक तीर-कमानों से सुसज्जित खड़े हैं। उनकी कमर में तलवारें बँधी हुई हैं। दुर्गा आती है।]

दुर्गा—तुम सब लोग प्रस्तुत हो।

दलपति—हाँ, माँ, स्वाधीनता-संग्राम के महायज्ञ में आहुति देने को हम सब प्रस्तुत हैं।

दूसरा—विदेशियों को मेवाड़ से निर्वासित करने में शुभ कार्य के लिए हमें स्मरण किया गया है, यह तो हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

दुर्गा—स्वाधीनता-संग्राम के लिए किसी आमन्त्रण की आवश्यकता नहीं होती। स्वाधीनता प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है और उसके प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने के लिए युद्ध करने का प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

दलपति—कल मालदेव की आज्ञा घोषित हुई है कि उनकी सेना के सैनिकों के अतिरिक्त मेवाड़ के किसी व्यक्ति को शस्त्र रखने का अधिकार नहीं है। सब लोग अपने सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र राज्य के अधिकारियों को सौंप दें। इस आज्ञा के विरुद्ध चलने वालों को प्राण-दण्ड दिया जायगा।

दुर्गा—हाँ, आज इसी सम्बन्ध में तुम लोगों से चर्चा करनी है। हमें सम्पूर्ण मेवाड़ में इस बात का प्रचार करना है कि प्राण रहते कोई मेवाड़ी अपने अस्त्र उस देश-द्रोही को न दे। वह हमें शस्त्र-हीन करके पंगु बना देना चाहता है। फिर शताब्दियों तक हम पराधीनता-पाश से

मुक्त न हो सकेंगे और एक युग आयगा जब शस्त्रों का प्रयोग हम भूल जायेंगे और कोई भी अत्याचारी शासक मुट्ठी भर सैनिकों से हमें भी भेड़ों की तरह हाँक सकेगा।

एक युवक—इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम देश को राज्य के नियमों के विरुद्ध खुला विद्रोह करने को तैयार करें।

दुर्गा—निश्चय ही ! जिस शासन में जनता की आवाज नहीं सुनी जाती उसके नियमों को भंग करना जनता का कर्तव्य हो जाता है। तुम्हें यही बात प्रत्येक मेवाड़ी को समझा देनी है। हमारा पहला मोर्चा जन-जागृति का है। शत्रु हमारे बीच जाति-भेद, धर्म-भेद और वर्ग-भेद खड़े करके हमें परस्पर लड़ाकर शक्ति-क्षीण करेगा और फिर अपना फौलादी पंजा इस देश पर दृढ़तापूर्वक फैलायगा।

पहला युवक—हमारे देश के मालदेव-जैसे आदमी इन विदेशियों के हाथ के खिलौने क्यों बन गए हैं ?

दुर्गा—स्वार्थ, ईर्ष्या और महत्त्वाकांक्षा ने उन्हें अन्धा बना दिया है। उन्हें दिल्ली के शासक ने एक बार मेवाड़ का शासन क्या सौंपा, वह इस प्रभुता को स्थिर रखने के लिए नीच-से-नीच कार्य करने को प्रस्तुत हो गए हैं।

दलपति—उन्हें अपनी सत्ता स्थिर रखने के लिए बड़ी सेना की आवश्यकता है और मेवाड़ी सैनिकों पर उन्हें पूर्ण विश्वास भी नहीं है इसलिए बड़े-बड़े वेतन देकर विदेशी सैनिकों और कर्मचारियों को वे रखते जाते हैं। मेवाड़ियों के गाढ़े पसीने की कमाई विदेशियों के पेट में पहुँच रही है।

दुर्गा—हमें मेवाड़ के बच्चे-बच्चे में विदेशी सत्ता के विरुद्ध भावनाएँ भरनी होंगी।

एक युवक—इसका परिणाम यह होगा कि युग-युग तक दो देश दो संस्कृतियाँ एक-दूसरे की शत्रु बनी रहेंगी और निरन्तर रक्त-पात होता रहेगा।

दुर्गा—हमें किसी व्यक्ति, देश या संस्कृति के विरुद्ध भावना नहीं भरनी चाहिए। हमारा विरोध केवल उस विदेशी शासन-तन्त्र से होगा जो हमें दास बनाकर रखना चाहता है—जो हमें हमारे जन्मसिद्ध अधिकारों से वंचित करना चाहता है। मनुष्य के नाते संसार का प्रत्येक मानव हमारा बन्धु होगा।

[सुधीरा का प्रवेश।]

युवकगण—राजमाता की जय !

सुधीरा—बच्चो, व्यक्ति की नहीं, तुम्हें देश की जय बोलनी चाहिए। बोलो वीर-भूमि मेवाड़ की जय !

सब—वीर-भूमि मेवाड़ की जय !

दलपति—बड़ी देर कर दी आपने !

सुधीरा—हाँ, मुझे केलवाड़ा से लौटने में देर हो गई। कल मालदेव के एक अधिकारी जाल मेहता ने मालदेव के एक साथी भूपति के एक भयानक षड्यन्त्र का पता मुझे दिया था।

दलपति—कैसा षड्यन्त्र माताजी ?

सुधीरा—महाराणा और हमीर के प्राण लेने का।

दुर्गा—तब क्या हुआ ?

सुधीरा—मेरे पहुँचने के पहले ही महाराणा जी संसार से विदा ले चुके थे।

दलपति—बड़े खेद की बात है ! और हमारे हमीर जी तो…

सुधीरा—भगवान् की दया से वह सुरक्षित हैं।

दुर्गा—महाराणा अन्तिम क्षण तक मेवाड़ के उद्धार के लिए प्रयत्न करते रहे और मेवाड़ के लिए ही बलि हो गए। मेवाड़ियों के प्राणों में वे सदा जीवित रहेंगे और देश के हित बलि होने की प्रेरणा देते रहेंगे।

दलपति—हमें विश्वास है अब हमीर जी महाराणा के अपूर्ण यज्ञ को पूर्ण करेंगे।

सुधीरा—यह तो तुम लोगों के सहयोग और साहस पर निर्भर है।

तुम लोग जन-जागृति का शंख फूंककर प्रत्येक मेवाड़ी को स्वाधीनता-संग्राम का सैनिक बनाओ—सबको एक अनुशासन में, एक संगठन में लाओ।

दलपति—हाँ, राजमाता जी, हम सब एक हैं—और सारे मेवाड़ को हम एक झण्डे के नीचे लायेंगे।

सुधीरा—तब तो पराधीनता की बेड़ियाँ एक क्षण भी जननी-जन्म-भूमि के पैरों में नहीं रह सकेंगी। हाँ तो बच्चो, अपना नित्य का गीत गाओ और फिर नित्य के अनुसार शस्त्र-संचालन का अभ्यास करो।

सब—(गीत)

हर जुबां पर एक नारा—
है हमारा देश प्यारा।

आग की संतान हम डरते नहीं,
जान देते हैं, मगर मरते नहीं,
हम गुलामी से सुलह करते नहीं,

हम कदम हँस-हँस बढ़ाते
मृत्यु का पाकर इशारा।
हर जुबां पर एक नारा—
है हमारा देश प्यारा।

वह सुदृढ़ चित्तौड़ का ऊँचा किला,
आन से अपनी नहीं तिल भर हिला,
धूल में वैरी सदा इसका मिला,

मर्द तो क्या देवियों ने
भी लिया रण में दुधारा।
हर जुबां पर एक नारा—
है हमारा देश प्यारा।

देश की बलि-वेदिका पर हम चढ़ें,
दुश्मनों से आखिरी दम तक लड़ें,
काल से भी युद्ध करने को बढ़ें,

आन पर जीवन चढ़ाना
है सदा से प्रण हमारा।
हर जुबां पर एक नारा—
है हमारा देश प्यारा।

[गाते-गाते सब का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

पर आसीन हों।

मन्त्री—आपकी आज्ञा पाकर मैं उनके पास गया था, किन्तु उन्होंने एक ही उत्तर दिया—"भगवान् राम के वंशज का वचन एक होता है !"

हमीर—वह राज-मुकुट चाहे स्वीकार न करते, लेकिन स्वाधीनता-संग्राम में मेरे दाहिने हाथ बनकर रहते तो मुझे बहुत सहारा रहता।

मन्त्री—उन्होंने कहा—"मेवाड़ को यदि वास्तव में मेरी आवश्यकता होगी तो मैं अपनी इच्छा से आऊँगा।"

दलपति—इसमें सन्देह नहीं कि राजकुमार सुजानसिंह जी मनुष्य के रूप में देवता हैं। वह जहाँ जायँगे अपनी तलवार को मानवता के कल्याण में लगायँगे और मेवाड़ के आड़े वक्त में अवश्य हमारी ढाल बनकर आयंगे।

हमीर—मेवाड़ियों के अग्नि-परीक्षा के दिन अब आने ही वाले हैं। रक्त का महासागर, महामृत्यु का तांडव, आँधी-तूफ़ान, सर्वनाश, प्रलयंकरी ज्वाला की लपटें ये ही सौगातें हैं जो मेवाड़ अपने स्नेहियों को देगा।

सेनापति—मेवाड़ियों के लिए ये सौगातें भय की वस्तुएँ नहीं हैं। जिस दिन आपके नेतृत्व में सम्पूर्ण मेवाड़ रण-नाद से गूँज उठेगा उस दिन शत्रु का हृदय काँप उठेगा। अत्याचार का आसन डोल उठेगा।

[द्वारपाल का प्रवेश।]

द्वारपाल—(**यथा-नियम झुककर नमस्कार करते हुए**) सूर्य वंशावतंस, सिसौदिया-कुल-प्रभाकर महाराणा जी को द्वारपाल नमस्कार करता है।

हमीर—क्या बात है द्वारपाल ?

द्वारपाल—अन्नदाता, चित्तौड़ से एक द्विजराज आए हैं। आपसे मिलना चाहते हैं।

हमीर—उन्हें आदर सहित ले आओ।

[द्वारपाल का प्रस्थान।]

मन्त्री—चित्तौड़ से इस समय किसी का आगमन रहस्य से खाली नहीं है । वहाँ से आने वाले व्यक्ति से बहुत सावधान रहने की जरूरत है ।

हमीर—अधिक शंकाशील रहना वीरता का गुण नहीं है, मन्त्री जी !

मन्त्री—राजनीति का प्रथम मन्त्र है किसी पर विश्वास न करना ।

हमीर—अविश्वास की भित्ति पर आधारित राजनीति पर हमीर का विश्वास नहीं है । मैं देहातों के खुले आकाश के नीचे खेला हूँ—राजमहलों की सीमित छतों के तले नहीं पला । मेरी राजनीति स्पष्ट है—सूर्य के प्रकाश के समान ।

[**द्विजराज का प्रवेश ।**]

द्विजराज—महाराणा हमीरसिंह जी को महाराव मालदेव का पुरोहित आशीर्वाद देता है ।

हमीर—दास हमीर पुरोहित जी को सादर प्रणाम करता है ।

मन्त्री—पुरोहित जी, आसन ग्रहण कीजिए ।

[**पुरोहित बैठता है ।**]

हमीर—किस लिए कष्ट किया आपने ?

द्विजराज—महाराव की हार्दिक इच्छा है कि सिसौदियों और चौहानों का संघर्ष समाप्त हो जाय ।

प्रधान मन्त्री—क्या वह सम्पूर्ण मेवाड़ न्याय-अधिकारी को हस्तांतरित करने को प्रस्तुत हैं ।

द्विजराज—यह तो सम्भव नहीं जान पड़ता ।

सेनापति—दिल्लीश्वर की आज्ञा चाहिए ?

द्विजराज—मैं राजनीति की चर्चा करने नहीं आया ।

हमीर—किन्तु यदि मैं आपसे राजनीति की चर्चा करूँ तो क्या कोई आपत्ति होगी ?

द्विजराज—हम ब्राह्मणों को राजनीति से क्या प्रयोजन ?

हमीर—विदेशी शासन-चक्र तो ब्राह्मणों को पीसेगा !

द्विजराज—भाग्य का लेख क्या हमारे प्रयत्न से बदल जायगा ?

दलपति—ब्राह्मण देवता, भाग्य का नाम लेकर आप पुरुषार्थ की हत्या करना चाहते हैं ।

द्विजराज—मैं शास्त्रार्थ करने तो आया नहीं हूँ—केवल महाराव का एक संदेश देने आया हूँ ।

हमीर—कहिए, क्या कहना चाहते है आप ?

द्विजराज—वह अपनी कन्या कुमारी कमलावती का महाराणा से विवाह करना चाहते हैं । आज्ञा हो तो टीका करके नारियल भेंट करूँ ।

मन्त्री—शत्रु-कन्या से विवाह ! ऊँ हूँ असम्भव !

द्विजराज—तो सिसौदिया-कुल-दिवाकर एक कन्या का अपमान करना पसन्द करेंगे । राजपूत कभी अबला को आश्रय देने से मुंह नहीं मोड़ते ।

हमीर—हमीर राजपूत-धर्म या यों कहो मानव-धर्म को निभायेगा । लाइए, मैं नारियल स्वीकार करता हूँ ।

[द्विजराज टीका करके हमीर को नारियल देता है ।]

हमीर—मन्त्री जी, द्विजराज को एक सहस्र मुद्रा देकर आदर-पूर्वक विदा कीजिए ।

मन्त्री—आइए द्विजराज !

[मन्त्री और द्विजराज का प्रस्थान ।]

सेनापति—आपके निश्चयों से सम्पूर्ण मेवाड़ के भविष्य पर प्रभाव पड़ता है—इसलिए कुछ निवेदन करने की आज्ञा चाहता हूँ ।

हमीर—हमीर के राज्य में वाणी पर बन्धन नहीं है । कहिए, क्या कहना चाहते हैं ?

सेनापति—एक तो शत्रु को सम्बन्धी बनाना उचित नहीं जान पड़ता है, दूसरे, विवाह करने के लिए आपको चित्तौड़-गढ़ में जाना पड़ेगा, इसमें

आपकी जान का खतरा है।

हमीर—मैं यह जानता हूँ—और जान-बूझकर आग में कूद रहा हूँ।

सेनापति—किन्तु इससे लाभ ?

हमीर—मैं पूर्वजों की पुण्य-भूमि के दर्शन करना चाहता हूँ। जिस चित्तौड़-गढ़ की धूल में मेरे पूज्य पिताओं के शरीर ने अन्तिम निद्रा ली है, जिसे शताब्दियों से हमारे पूर्वज अपना रक्त प्रदान करते आए हैं, जिसे सहस्रों वीरबालाओं की भस्म ने पवित्र किया है मैं एक बार उस पावन, चिरस्मरणीय भूमि की गोद में जाकर स्फूर्ति और प्रेरणा प्राप्त करना चाहता हूँ।

सेनापति—आप मेवाड़ के आधार हैं।

हमीर—विश्वास रखो सेनापति, हमीर अपने लक्ष्य को भूलेगा नहीं। मैं चित्तौड़-दुर्ग को भीतर से देखना चाहता हूँ, कैसा है वह विकराल दुर्ग जिसने अलाउद्दीन-जैसे पराक्रमी और सबल शत्रु के छक्के छुड़ा दिए थे। आखिर एक दिन मुझे भी तो उस पर आक्रमण करना है।

सेनापति—आपकी इच्छा।

हमीर—अब मैं दरबार समाप्त करता हूँ।

[सब का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

सातवाँ दृश्य

स्थान—सुधीरा की झोंपड़ी के आगे का प्रांगण ।

समय—प्रभात ।

[सुधीरा एक आम का पौधा रोप रही है । दलपति का प्रवेश ।]

दलपति—आप भी खूब हैं माता जी ! व्यर्थ के काम करती रहती हैं । आज यह आम का पौधा आपने रोपा है । अब नित्य पानी सींचेंगी । वर्षों रखवाली करेंगी और जब फल आयँगे तब न जाने इस संसार में रहें भी या नहीं ।

सुधीरा—ऐसी ही तो है स्वाधीनता-प्राप्ति की साधना भी । पहले देशवासियों के हृदय में स्वाधीनता-प्राप्ति की इच्छा का बीज डालना है, फिर देश के दीवाने सेवक अपना खून देकर उसे सींचते हैं—उसे अंकुरित और पल्लवित करने के लिए निरन्तर रक्त-दान करना पड़ता है और जो लोग इस साधना में जीवन की बलि देते हैं वे स्वाधीनता-विटप के फल खाने के लिए शायद ही जीवित रहते हैं ।

दलपति—आपने इस आम के पौधे की तरह ही हमीर जी को पाल-पोसकर बड़ा किया है । अब वह आपको छाया प्रदान करने योग्य हो गए हैं—अब तो आप सारे कार्य छोड़कर उनकी छत्र-छाया में विश्राम करें, यही उचित है ।

सुधीरा—हाँ, मैंने हमीर को हृदय की सम्पूर्ण स्नेह धारा से सिंचित करके संसार के मुक्त वायु-मण्डल में खड़ा कर दिया—उसे स्वाभाविक विकास का अवसर दिया है । मैं उससे व्यक्तिगत सुख नहीं चाहती—बल्कि सम्पूर्ण मेवाड़ को उसकी छत्र-छाया में सुख-शांति की साँस लेते देखना चाहती हूँ ।

दलपति—अच्छा माता जी, कोई पशु आपके रोपे हुए पौधे को चर

जाने का प्रयत्न करे तो क्या आप इसकी रक्षा नहीं करेंगी।

सुधीरा—क्यों नहीं बेटा !

दलपति—तब आप हमीर जी की रक्षा क्यों नहीं करतीं ? यह तो केवल एक निर्जीव पौधा है और हमीर तो आपकी आत्मा के अंश हैं।

सुधीरा—अब मैं उसकी ओर से सर्वथा निश्शंक हूँ। उसमें आँधी-तूफानों में सिर उठाकर खड़ा होने की शक्ति है। और सुनो दलपति, मनुष्य को लताओं की भाँति किसी के सहारे खड़ा नहीं होना चाहिए। उसमें स्वयं अपना भार सँभालने की शक्ति होनी चाहिए।

दलपति—लेकिन, माता जी कभी-कभी अनुभव-हीन जवानी जान-बूझकर विपत्ति को आमन्त्रित करती है, उस समय तो उस पर नियन्त्रण करना अनुभवी संरक्षकों का कर्तव्य है।

सुधीरा—ऐसा क्या कार्य किया है मेरे हमीर ने ?

दलपति—वह हम लोगों का कहना न मानकर भयंकर लपटों में कूद पड़ना चाहते हैं।

सुधीरा—यह तो उसका स्वभाव है, मैं उसकी इस प्रवृत्ति को रोकना नहीं चाहती।

[**हमीर का प्रवेश और सुधीरा के पैर छूना।**]

सुधीरा—खुश रहो बेटा !

दलपति—अच्छा आप भी आ गए !

हमीर—हाँ, मैं जानता था, तुम मेरे विरुद्ध उलाहना लेकर यहाँ आए हो—और मैं अपने नवीन दुस्साहस के लिए आशीर्वाद लेने आया हूँ।

सुधीरा—किस दुस्साहस के लिए ?

हमीर—(**दलपति से**) तुमने कुछ नहीं बताया ?

दलपति—अब आप ही बता दीजिए।

हमीर—माँ, मैं ऐसा कार्य करने की आपसे अनुमति लेने आया हूँ

जिसका परिणाम मेरे जीवन का अन्त और तुम्हारे स्वप्नों का सर्वनाश भी हो सकता है ।

सुधीरा—बेटा, मनुष्य को किसी भी परिणाम के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए । मैंने तुम्हें विवेक की आँखें देकर अपना कर्तव्य समाप्त कर दिया है । अब अगर तुम खाई में कूदना चाहोगे तो भी मैं रोकूँगी नहीं ।

दलपति—माताजी, ये मालदेव की कन्या से विवाह करने चित्तौड़-गढ़ में जायँगे—वह नीच क्या कर गुजरे, कुछ कहा नहीं जा सकता ।

हमीर—वह चाहे कैसा भी नीच हो—लेकिन जब उसने नारियल भेजा तो मैं अस्वीकार न कर सका । एक राजपूत-कन्या का अपमान मैं कैसे करता ?

सुधीरा—हम राजपूतों में सदा से ही तलवारों की छाया में विवाह होते आए हैं ।

हमीर—और माँ, मैं पूर्वजों की भूमि की रज एक बार मस्तक पर लगाना चाहता हूँ । मुझे ऐसा जान पड़ता है जैसे पूज्य पिताश्री की आत्मा ही मुझे वहाँ खींचे ले जा रही है । बोलो, माँ, तुम्हारी क्या आज्ञा है ?

सुधीरा—बेटा, आत्मा की आवाज के अनुसार कार्य करो । भगवान् के वरद हाथ और अपने हाथ की तलवार पर विश्वास रखो ।

दलपति—माताजी, इस सम्बन्ध में हमें तर्कपूर्वक सोचकर निश्चय करना चाहिए ।

सुधीरा—भगवान् के चमत्कार को तर्क की आँखों से नहीं देखा जाता, दलपति ! मैं हमीर को तर्क के नाम पर कायरता का पाठ नहीं पढ़ाऊँगी ।

हमीर—तो माँ, इस विवाह को सम्पन्न कराने के लिए आप केलवाड़ा चलें ।

सुधीरा—नहीं बेटा, मुझे झोंपड़ी राज-महल से अधिक प्रिय है ।

दलपति—ऐसा भी क्या मोह है आपको इस झोंपड़ी से ?

सुधीरा—यह झोंपड़ी मेरी माँ है, दलपति ! मुझे ऐसा जान पड़ता है जैसे इसमें माँ की ममता और पिता का प्रेम गङ्गा-यमुना की तरह लहराता है। मेरे लिए यह तीर्थराज प्रयाग है।

दलपति—जड़ वस्तु से ऐसा मोह तर्क-संगत नहीं है।

सुधीरा—प्रत्येक मानव-भावना को तर्क की कसौटी पर कसा नहीं जा सकता। देश के दीवाने स्वाधीनता के लिए प्राण क्यों चढ़ाते हैं ? देश क्या है—एक बड़ा भारी मिट्टी का ढेर ?

दलपति—देश पर दूसरों का अधिकार होने से न केवल देश की मिट्टी परायी हो जाती है; बल्कि उसमें देशवासियों के सुख-स्वत्व और क्रिया-कलापों पर बन्धन हो जाता है।

सुधीरा—हाँ, यह ठीक है—लेकिन इस बात को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि देश की मिट्टी से भी हमें प्रेम होता है। अपने देश के वन, पर्वत, नदी, निर्झर, झील, तालाब और वायु भी हमें आत्मीय जन जान पड़ते हैं। सोने के पिंजरे में बन्दी पक्षी बिना परिश्रम दाना-पानी पाने पर भी अपने नीड़ में पहुंचने के लिए क्यों छटपटाता है ? मेरी यह झोंपड़ी मेरा नीड़ है, मैं इसे नहीं छोड़ूंगी।

हमीर—माँ, तुम जीतीं, मैं हारा। मेरा भी निश्चय है कि मेवाड़ की राजरानी राजमहल में जाने के पहले इस झोंपड़ी की देहरी पूजेगी।

सुधीरा—अच्छा तो अन्दर चलो—कुछ खाओ-पियो।

[**सब का प्रस्थान।**]

[**पट-परिवर्तन**]

आठवाँ दृश्य

स्थान—चित्तौड़ की राज-वाटिका।

समय—प्रभात।

[कमला पुष्प-चयन करते हुए गा रही है]

कमला— आया, नव प्रभात है आया।

कोयल कूक उठी उपवन में
नव विकास है सुमन-सुमन में
नव-जीवन का निर्झर मन में
नव उमंग भर लहराया,
आया, नव प्रभात है आया।

मधुप पास कलियों के जाकर,
माँग रहे कुछ गुन-गुन गाकर,
मेरे मन के तार बजाकर,
गीत प्रीत का किसने गाया?
आया, नव प्रभात है आया।

प्राणों में कुछ नया नशा है,
आँखों में कुछ नया बसा है,
जीवन-नभ में कौन हँसा है,
किसने मधु-रस पान कराया?
आया, नव प्रभात है आया।

[जाल का प्रवेश]

जाल—मेवाड़ की महारानी जी को नमस्कार!

कमला—क्यों हँसी करते हो काका जी !

जाल—तू नव प्रभात का सपना देखे और मैं हँसूँ भी नहीं !

कमला—सपना तो सपना ही होता है, काकाजी ! प्राय: स्वप्न में देखा हुआ प्रकाश निराशा का अन्धकार बन जाता है । क्षीण आशा आनन्द के आवेग में हमें इतना असावधान न कर दे कि जिस दीपक को साथ लेकर कठिन और तम-पूर्ण पथ पार करना है वही वायु के प्रबल झकोरों से बुझ जाय !

जाल—तू कहना क्या चाहती है कमला ?

कमला—बाल-रवि की तरुण-अरुण किरणों के स्पर्श से हमारे हृदय-सुमन मुकुलित हो उठे हैं, किन्तु मैं समझती हूँ कि यह आनन्दावेग उचित नहीं है ।

जाल—तू इतनी आशंकित क्यों हो रही है ?

कमला—मुझे आपकी बुद्धिमत्ता पर सन्देह हो रहा है ।

जाल—तब तो किसी पाठशाला में मुझे शिक्षा ग्रहण करने को फिर जाना पड़ेगा ।

कमला—यह हँसी में उड़ा देने की बात नहीं है । जिस महान् व्यक्ति पर मेवाड़ का भविष्य निर्भर है उसके जीवन के साथ आपने खिलवाड़ किया है ।

जाल—अभी से इतनी ममता हो गई है उस व्यक्ति के प्रति !

कमला—मेवाड़ के भाग्य-विधाता के प्रति किसी हृदय-हीन को ही ममता नहीं होगी । आपने इस विवाह के बहाने उन्हें यहाँ बुलवा लिया है, जहाँ पद-पद पर पृथ्वी पर साँप रेंग रहे हैं, जहाँ का सम्पूर्ण वातावरण विषाक्त है, जहाँ आकाश में ज़हरीली बरछियाँ उन पर आघात करने की प्रतीक्षा में हैं ।

जाल—कमला ! मेरी इच्छा थी कि चित्तौड़-गढ़ में एक बार उसके वास्तविक प्रभु के चरण पड़ें ।

कमला—आप पिताजी के हाथों में खेल रहे हैं ।

जाल—प्रेमावेग अंधा होता है—तू यह नहीं देख पाती कि यह बूढ़ा जाल मेहता कौन है ? तुझे नहीं मालूम कि इसने महारानी की जौहर की ज्वाला को नमस्कार करके शपथ खाई थी कि विदेशी आततायियों को मेवाड़-भूमि से निर्वासित करना इसके शेष जीवन का लक्ष्य रहेगा ।

कमला—और जौहर की ज्वाला के शान्त होने के पहले ही आपने देश-द्रोहियों से गठबन्धन कर लिया ।

जाल—यह गठबन्धन नहीं शत्रु के घर में सेंध लगाना है ।

कमला—आप बनिये हैं, इसलिए आपने हिसाब लगाया, विद्रोह या शत्रु से मेल, दोनों में से अधिक लाभ किसमें है ?

जाल—हाँ बेटी, हानि-लाभ का हिसाब मैंने जरूर लगाया है। राजपूतों की भाँति मैं सिर कटवा देता तो मुझे यश तो मिलता ही—लेकिन जीवित रहकर सम्भवतः देश के अधिक काम आ सकूँ, यही सोचकर अपने माथे पर अपयश का टीका लगवाकर भी जीवित हूँ। बेटी, मेरे प्राणों में भयानक आग प्रज्वलित है । मैंने अपनी आँखों से चित्तौड़ का साका देखा है—क्या तुम समझती हो, वह जौहर की ज्वाला बुझ गई है । नहीं, वह मेरे प्राणों में बन्द ज्वालामुखी बनकर भीतर-ही-भीतर सुलग रही है।

कमला—किन्तु क्या यह ज्वालामुखी मेवाड़ के वास्तविक प्रभु पर ही फट जाना चाहता है ? क्यो तुमने पिताजी से मेरे विवाह का षड्यन्त्र रचवाकर उन्हें यहाँ बुलवाया है ?

जाल—हमीर अकेला है—उसे अपने जीवन के प्रति मोह भी नहीं है; क्योंकि सिवा बूढ़ी माँ के उसके जीवन में कहीं कोई अटकाव नहीं है। मैंने सोचा तुम उसके जीवन में पहुँचकर अपने मधुर सौन्दर्य-भरे व्यक्तित्व से उसके उत्साह को संयत कर लोगी, जिसकी देश के नेता को अत्यन्त आवश्यकता है । फिर बेटी, तुम्हारे हृदय में भी तो मेवाड़ को स्वतन्त्र करने की व्याकुलता है। तुम दोनों का सहयोग मेवाड़ के उद्योग का मार्ग निकाल लेगा ।

कमला—किन्तु, आपने यह नहीं सोचा है कि कितनी बड़ी विपत्ति में आपने उन्हें खींच लिया है।

जाल—तू नहीं जानती कि मैंने मालदेव के मन पर यह अंकित कर दिया है कि इस समय हमीर पर प्रहार न करने में ही उनकी विजय है।

कमला—मुझे क्षमा कीजिए, मैंने आप पर भी सन्देह किया। इसका मुझे बहुत दुख है।

जाल—इसमें दुखी होने की कोई बात नहीं, कमला! तुम्हारी आशंका स्वाभाविक है। इतने दिनों में मैं यह जान गया हूँ कि तुम्हें न केवल हमीर के आदर्श से प्रेम है, बल्कि स्वयं उनसे भी। तुम्हारे इस आदर्श प्रेम का परिणाम मेवाड़ की स्वाधीनता हो।

कमला—मेरा हृदय मुझे दुर्बल बना रहा है काकाजी!

जाल—प्रेम करना दुर्बलता नहीं है कमला!

कमला—मेरा प्रेम करने का अधिकार सदा के लिए छिन गया है। जब उन्हें यह ज्ञात होगा कि यह पुष्प कभी अन्य देवता के चरणों में रखा गया था, तो क्या वह इसे पैरों से कुचलकर नहीं चले जायँगे! काकाजी, मैं ब्याह के पहले ही आत्मघात कर लूँगी।

जाल—छिः कैसी कायरतापूर्ण बात करती है। तेरे जीवन की इस देश को आवश्यकता है। तेरी पुकार सुनकर चौहान-सरदार भी महाराव का साथ छोड़कर हमीरजी के पक्ष में आ जायँगे।

कमला—हमीर को ऐसा क्षुद्र-हृदय न समझ कि तेरे माता-पिता के अपराध का दण्ड तुझे देगा। बाल-विवाह पाप है और बाल-विवाह-जन्य वैधव्य को स्थायी बना देना उससे भी बड़ा पाप है। हमारा हमीर देश को विदेशियों से मुक्त करके ही शान्त नहीं होगा, बल्कि प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर क्रान्ति भी करेगा।

कमला—किन्तु मेरा मन काँपता है।

जाल—डरो मत कमला! तुम पहले ही साक्षात् में हमीर को सारी बातें स्पष्ट बता देना। मुझे विश्वास है वह तुम्हें अपने हृदय की रानी

बनायेंगे। अच्छा बेटी, मैं जाता हूँ। तुझे बहुत काम करने हैं। जब हमीर को यहाँ बुलाया है तो उनकी जीवन-रक्षा का भार भी मुझ पर है।

कमला—काकाजी आप कितने अच्छे हैं !

जाल—नहीं, मैं बहुत बुरा हूँ—ज्वालामुखी हूँ—हमीर पर फट पड़ना चाहता हूँ।

[**कमला मुस्कराती है। जाल हँसता है। फिर दोनों दो तरफ प्रस्थान करते हैं।**]

[पट-परिवर्तन]

नवां दृश्य

स्थान—सुधीरा की झोंपड़ी ।

समय—रात

[**सेज सजी हुई है । सेज पर गुलाब की पंखुड़ियाँ बिछी हुई हैं । दो फूल-मालाएँ रखी हुई हैं । नेपथ्य में ढोलक पर सुहाग के गीत गाए जा रहे हैं । कमला को साथ लिये हुए सुधीरा का प्रवेश ।**]

सुधीरा—सौभाग्यवती बहूरानी ! आज तुम मातृत्व के मन्दिर के प्रथम सोपान पर पाँव रख रही हो । नारी शायद स्वयं नहीं समझती कि माँ होना ही नारी-जीवन की पूर्णता है । मुझे पूर्ण विश्वास है, तुम इसे समझोगी और स्वामी का विश्वास और प्रेम भी प्राप्त करोगी ।

कमला—माताजी ! (**रुक जाती है ।**)

सुधीरा—रुक क्यों गई ! बोलो, तुम मेरी बहू ही नहीं, बेटी भी हो । मुझसे मन की प्रत्येक बात कह सकती हो ।

कमला—मैंने राजमहल को लज्जित करने वाली गौरवमयी झोंपड़ी में पैर रखकर अनधिकार चेष्टा की है ।

सुधीरा—तुम सिसौदियों के शत्रु मालदेव की पुत्री हो इसीलिए इतना संकोच कर रही हो, किन्तु बेटी अब तुम इस घर की लक्ष्मी हो । तुम्हारे पिता के कार्यों की छाया भी अब तुम पर नहीं पड़ेगी । तुम्हारे पिता देश-द्रोही हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि तुम भी उसी पथ पर चलोगी ।

कमला—यह नहीं माताजी, मेरे संकोच का कारण यह नहीं है ।

सुधीरा—तब ?

कमला—मैं उनकी जीवन-संगिनी बनने के लिए सर्वथा अयोग्य हूँ ।

सुधीरा—तुम राजपूत-कन्या हो, तुमने उस कुल में जन्म लिया है

जिसमें गोरा-बादल जन्मे थे, जिसमें महारानी पद्मिनी ने अवतार लिया था। मुझे विश्वास है कि तुम हमीर के जीवन का बल बनोगी।

कमला—पिताजी ने मुझे उनकी जीवन-संगिनी बनाकर उनका अपमान किया है।

सुधीरा—इसमें अपमान कैसा ? तुम तो रत्न हो। कंचन, रत्न और कन्या किसी भी स्थान पर हों उन्हें ग्रहण करने में कोई अपमान अनुभव नहीं करता। मैं चाहती हूँ कि तुम हमीर की आदर्श जीवन-सहचरी बनो। राजमहल में ही नहीं, अरावली की उपत्यकाओं, रण-क्षेत्रों और जन-पथों पर तुम्हारा प्रेम उसका संबल बनकर साथ रहे। चौहानों की पुत्री और सिसौदियों के पुत्र दोनों की संयुक्त वाणी सुनकर मेवाड़ की धमनियों में नवीन उत्साह का संचार हो।

कमला—मैं मेवाड़-भूमि के गत गौरव की प्राप्ति के लिए सर्वस्व बलिदान करने को प्रस्तुत हूँ—किन्तु······

सुधीरा—किन्तु की सुधीरा की कुटी में गुजर नहीं है। तुम्हारे नए जीवन का पहला दिन राजमहल में नहीं झोंपड़ी में व्यतीत हो रहा है इसका भी एक विशेष उद्देश्य है बेटी ! चाहे राजा हो चाहे रंक, उसे याद रखना चाहिए कि झोंपड़ी का गौरव राजमहल से कम नहीं है। झोंपड़ियों के आशीर्वाद से ही राजमहल स्थिर है—जो राजमहल मदान्ध होकर झोंपड़ी का अपमान करते हैं उन्हें धराशायी होना पड़ता है।

[**हमीर आकर सुधीरा के चरण छूता है।**]

सुधीरा—तुम दोनों चिरायु रहो और मेवाड़ की कीर्ति को चार चाँद लगाओ।

[**सुधीरा का प्रस्थान।**]

हमीर—कमला !

कमला—महाराणा जी !

हमीर—आज की सुहानी, सरस, रोमांचकारी निशा में तुम्हारे पास

मेरे लिए केवल महाराणा-जैसा नीरस शब्द है ।

कमला—मेरे देवता, मेरे जन्म-जन्म के आधार, मेरा सम्पूर्ण जीवन तुम्हारे चरणों पर फूल की पंखुड़ियाँ बनकर बिखर जाना चाहता है, किन्तु मैं इसकी अधिकारिणी नहीं हूँ ।

हमीर—मैं तुम्हारे संकोच के कारण को समझता हूँ, लेकिन कमला खारे समुद्र में से कामधेनु, कल्पवृक्ष, चन्द्र, लक्ष्मी और अमृत-जैसी अनुपम वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं । हमीर को भी शत्रु की नगरी स एक महान् उपहार प्राप्त हो गया है । तुम मेरे जीवन में अमृत बनकर आई हो, कमला, तुम मेरे तृषित जीवन की प्यास बुझाओ ।

कमला—महाराणा जी, भगवान् जानता है, मातृभूमि के अतिरिक्त कोई मुझे आपसे अधिक प्रिय नही; किन्तु तृषित प्राणों के लिए मेरे पास घोर निराशा है ।

हमीर—हमीर निराशा को जानता भी नहीं है । प्रेम का सरोवर तुम्हारे लोचनों में छलक रहा है, मैं उसके किनारे से प्यासा नहीं जाऊँगा ।

कमला—मेरी आँखों का समुद्र खारा है—खारे सागर से किसकी प्यास बुझी है ? मेरी आँखों में सुख की मधुर स्वर-लहरी नही है—दुख का हाहाकार है ।

हमीर—छिः इस शुभ घड़ी में तुम दुख का नाम लेती हो हृदयेश्वरी !

कमला—आपके मुख से हृदयेश्वरी शब्द का उच्चारण मुझे कितना पुलकित करता है, और मेरा भी जी चाहता है कि आपको हृदयेश्वर कहूँ; किन्तु में ऐसा नहीं कर सकती ।

हमीर—कौन रोकता है तुम्हें ?

कमला—नारी-धर्म, भारतीय संस्कृति !

हमीर—अर्थात्, लज्जा !

कमला—नहीं देवता, जिस नारी ने हाथ में तलवार पकड़ी है वह

लज्जा नहीं जानती, किन्तु कर्तव्य का बन्धन तो मानना ही पड़ता है।

हमीर—अर्थात् पिता के प्रति तुम्हारा कर्तव्य तुम्हें मेरी बनने से रोकता है।

कमला—मैं समझती हूँ, मेरे पिता तो उसी क्षण मर गए जब उन्होंने विदेशियों की आधीनता स्वीकार की।

हमीर—तब फिर हमारे मिलन-मार्ग में और क्या बाधा है? क्या तुम किसी अन्य व्यक्ति को प्यार करती हो?

कमला—मेवाड़ के आशा-रवि के अतिरिक्त मैंने किसी की स्वप्न में भी आराधना नहीं की।

हमीर—पहेली न बुझाओ, स्पष्ट बात कहो।

कमला—मेरा पहले भी विवाह हो चुका है।

हमीर—विवाह हो चुका है तो कहाँ हैं तुम्हारे पति? मैं तुम्हें उनके पास पहुँचा दूंगा।

कमला—पहुँचा दें तो बड़ी कृपा हो। जीवन के भार से मुक्त हो जाऊँ।

हमीर—क्या मतलब तुम्हारा?

कमला—वह इस संसार में नहीं हैं।

हमीर—तुम पति के साथ सती नहीं हुईं!

कमला—हाँ, क्योंकि उस समय मैं न पति का अर्थ समझती थी, न सती होने का। मुझे शोक था तो इस बात का कि जो लाल चूड़ियाँ दो-चार दिन पहले पहनाई गई थीं वह तोड़ी जा रही हैं। उस समय मैं गुड्डे-गुड़ियों से खेला करती थी—विवाह को भी मैंने खेल ही समझा था।

हमीर—तो अब भी तुम उसे खेल ही समझो। हम बचपन के सारे खेलों को याद भी नहीं रख सकते। उस खेल को स्मृति-पटल से मिटा दो। अब वास्तविकता यह है कि तुम मेरी पत्नी हो। तुम-जैसी रूपवती और सुशील नारी का तिरस्कार मैं नहीं कर सकता।

कमला—देश के कर्णधार नारी-रूप के मोह में पड़कर समाज

की मर्यादा तोड़ेंगे तो समाज में उनका मान घटेगा।

हमीर—समाज की मर्यादा ! दुधमुँही बच्चियों का विवाह कर देना और उनके विधवा हो जाने पर उन्हें जीवन के सभी सुखों से वंचित रखना; इसे तुम समाज की मर्यादा कहती हो ? नहीं कमला, यह घोर अत्याचार है। हमें समाज के पाखण्डों के विरुद्ध विद्रोह करना है।

कमला—किन्तु अग्नि को साक्षी करके एक अबोध बालिका कमला की ओर से ब्राह्मण देवता ने जो मन्त्र पढ़े थे उनका अस्तित्व आकाश में तो गूंजेगा ही और हमें अभिशाप देगा।

हमीर—मैं अभिशापों से नहीं डरता। तुम गंगा-जल की भाँति पवित्र हो। तुम मेरे साथ बाप्पा रावल की गद्दी पर बैठोगी।

कमला—किन्तु आपके सामन्त-गण सत्य से अवगत होकर आपसे असहयोग करेंगे, इससे मेवाड़ के उद्धार का मार्ग अधिक कंटकाकीर्ण हो जायगा।

हमीर—हमीर सामन्तों की शक्ति पर निर्भर नहीं है। राजगद्दी छोड़कर भी वह स्वाधीनता-संग्राम रच सकता है और इस संग्राम में तुम मेरे जीवन की स्फूर्ति बनोगी।

[हमीर पलंग पर पड़ी हुई मालाएँ उठाता है और एक स्वयं रखकर एक कमला को पहनाने लगता है। कमला माला अपने हाथ में लेकर हमीर को पहना देती है। हमीर भी अपने हाथ की माला कमला को पहना देता है। नेपथ्य में सुहाग का गीत जारी है।]

[पटाक्षेप]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[**एक ग्रामीण कुटिया । सुजानसिंह और मेवाड़ के एक सामन्त गंभीरसिंह का प्रवेश ।**]

सुजान—यही मेरा राजमहल है, गंभीरसिंह जी ! **(चारपाई की तरफ इशारा करके)** बैठिए ।

गंभीर—**(बैठता हुआ)** बड़े आश्चर्य की बात है आप इतने बदल कैसे गए ?

सुजान—**(गंभीरसिंह के पास ही बैठते हुए)** परिवर्तन जीवन का चिह्न है गंभीरसिंह जी। जो पत्थर होता है वही कड़ा रहकर एक ही स्थिति में बना रहता है । गति-हीन जीवन रुका हुआ सड़ा हुआ पानी है।

गंभीर—किन्तु गति की कुछ दिशा भी तो होनी चाहिए । मनुष्य अधिकाधिक गौरव, समृद्धि और वैभव की दिशा में बढ़े तो उसे ही प्रगति कह सकते हैं और अपने सर्वस्व को स्वाहा करके दैन्य की गोद में जा बैठे, तो समझो वह दुर्गति को गले लगा रहा है ।

सुजान—हः हः हः कितने अबोध हैं आप ! गौरव, समृद्धि, वैभव जैसे शब्दों का अर्थ भी समझा है आपने । बड़े-बड़े राजमहलों में निवास करके हम समझते हैं हमने गौरव प्राप्त किया है, तिजोरियों में कंचन और रत्न-भूषण भरकर कहते हैं हम समृद्ध हैं और मनुष्यता के सम्पूर्ण गुणों को तिलांजलि देकर समझते हैं हम वैभवशाली हैं ।

गंभीर—तो क्या आप समझते हैं निर्धन रहने से ही मनुष्य में सारे सद्गुण आ जाते हैं ?

सुजान—मैं यह नहीं कहता कि मनुष्य पुरुषार्थ को तिलांजलि देकर

अभावों में सिसकता हुआ जीवन बिताय । आलसी बनेंगे तो हम अपने देश से विश्वासघात करेंगे, उसे कंगाल बनायेंगे । हमें पुरुषार्थी और कर्मण्य तो बनना ही होगा ।

गंभीर—और परिश्रम, पुरुषार्थ और कर्मण्यता का परिणाम है वैभव, समृद्धि, गौरव और सत्ता की उपलब्धि ।

सुजान—नहीं, स्वार्थ, लालच, दम्भ और अविवेक का परिणाम है समाज में विभव के पर्वत और अभाव का गह्वर । हमारा अर्जन अपने लिए नहीं, अपने देश के लिए; मनुष्य-मात्र के लिए होना चाहिए । हमें इस बात का कोई अधिकार नहीं कि जब हमारा पड़ोसी भूख से तड़प रहा हो तो हम उसे दिखा-दिखाकर ५६ प्रकार के भोजनों का उपभोग करें ।

गंभीर—हम कमायें और वे लोग खाते रहें ।

सुजान—जी नहीं, बल्कि कमाई के साधनों पर सबको समान अधिकार दें । उन्हें कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें और ऐसी स्थिति उपस्थित करें कि कार्य पाने के लिए कोई भटके नहीं और कार्य करके भी भूखों न मरें । आज तो यह स्थिति है कि बेचारे श्रमिक पसीना बहाते हैं और हम उनके श्रम पर मौज मनाते हैं ।

गंभीर—क्षत्रिय प्रभुता और सत्ता का उपभोग करने के लिए उत्पन्न हुए हैं और उन्हें इसका अधिकार भी है, क्योंकि वह देश के लिए अपने प्राणों की बाजी भी लगाते हैं ।

सुजान—देश के लिए नहीं बल्कि विशेष स्थिति की रक्षा के लिए कहो गंभीरसिंह जी ! हम लोग व्यक्तिगत आकांक्षाओं को देश, जाति और धर्म के, प्रेम के छद्म वेश में उपस्थित करके जनता को मूर्ख बनाते रहे हैं और भोली जनता हमें देवता समझकर पूजती रही है ।

[एक सेवक हुक्का भरकर रख जाता है, सुजानसिंह उसे गंभीरसिंह के आगे बढ़ा देता है ।]

गंभीर—(हुक्के का कश खींचते हुए) आपने तो मुझे बातों में भुला दिया और मैं अपनी बात भी न कह सका जिसे कहने के लिए मैं मेवाड़ से चलकर इस सुदूर दक्षिण देश में आया हूँ।

सुजान—कहिये, क्या कहने के लिए आपने कष्ट किया है ?

गंभीर—बात यह है सुजानसिंह जी कि मेवाड़ को आपकी आवश्यकता आ पड़ी है ?

सुजान—क्यों ?

गंभीर—हमीर जी के अनाचार से सभी के हृदय दुखी हो उठे हैं ? और सम्भव है कि उनके विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हो—उस स्थिति में समझिए कि सिसौदिया-राज की रही-सही सत्ता भी समाप्त हो जायगी।

सुजान—हमीर जी ने ऐसा क्या किया है जिससे प्रजा दुखी हो उठी है ?

गंभीर—उन्होंने मालदेव की विधवा पुत्री से विवाह करके सिसौदिया-राजकुल को कलंक लगा दिया है। नीच जातियों के बीच वह पला है—वैसी ही उनकी आदतें हो गई हैं, किन्तु मेवाड़ के सामन्तगण ऐसे अधर्मी को बाप्पा रावल की पवित्र गद्दी पर कैसे बैठा रहने देंगे ?

सुजान—मेरे खयाल में हमीर ने धर्म-विरुद्ध तो कोई काम नहीं किया। आपके शब्दों में जो नीच जाति वाले हैं वे हमारी अपेक्षा मनुष्यता के अधिक निकट हैं; क्योंकि वह विधवाओं के प्रति हम उच्च जाति वालों की भाँति निर्दय नहीं हैं। वे उन्हें आग में जल जाने को विवश नहीं करते—न जीवन-भर अभाव और अनादर का जीवन व्यतीत कराने की हठधर्मी करते हैं। पुरुष यदि दूसरा विवाह कर सकता है, तो नारी भी !

गंभीर—छिः आपका भी मस्तिष्क फिर गया है।

सुजान—मैं चाहता हूँ आपका भी दिमाग फिर जाय। आप भी मुझे बताइए; हम लोग एक, दो, तीन, यहाँ तक कि दर्जनों पत्नियों, रखेलियों और प्रेमिकाओं को अंगीकार कर सकते हैं और चाहते हैं कि

स्त्री बेचारी पति के मर जाने पर जीवन-भर तपस्या करती रहे। मैं तो हमीर के इस कार्य से बहुत प्रसन्न हूँ।

गंभीर—इस दुस्साहस के परिणामस्वरूप हमीर जी को मेवाड़ की राजगद्दी से वंचित होना पड़ेगा।

सुजान—मेवाड़ के मुट्ठी-भर सामन्तों की इतनी शक्ति नहीं कि जनता के हृदय के सम्राट् को राज-सिंहासन से उतार सकें। जनता के सुख-दुखों से अपरिचित मूर्ख राजाओं को आप-जैसे सामन्तगण डरा-धमकाकर विलास और प्रमाद के पथ पर चलाकर अपना उल्लू सीधा कर सकते थे, किन्तु हमीर को नहीं।

गंभीर—जनता की खूब कही, अगर उसमें राजाओं को गद्दी पर बैठाने और उससे उतारने की शक्ति होती तो आज संसार का इतिहास ही दूसरा होता। राज्य करने के लिए तो अवतारी पुरुष की आवश्यकता होती है।

सुजान—हमीर ऐसा ही अवतारी पुरुष है। वह मेवाड़ के खोए हुए राज्य को पुन: प्राप्त करके ही दम न लेगा, बल्कि समाज में चहुँमुखी क्रान्ति करेगा।

गंभीर—चहुँमुखी क्रान्ति करेगा—अर्थात् विधवा-विवाह प्रचलित करेगा—सेनाओं में नीच जातियों के लोगों को भर लेगा और उनके जोर पर स्वजातियों का सर्वनाश करेगा।

सुजान—नीच-ऊँच की भावनाओं में पड़कर आप लोग स्वयं अपना सर्वनाश कर रहे हैं। भाई गंभीरसिंह जी, संसार में भारत-जैसा महान्, धनधान्यपूर्ण, कला-कौशल-निपुण दूसरा देश कौनसा है? फिर भी शताब्दियों से इस देश पर विदेशियों को आक्रमण करने का साहस हो रहा है, इतने बड़े राष्ट्र को अनेक बार पराजय और स्वाधीनता का अभिशाप सहना पड़ा है सो सब किस पाप से? इसलिए कि हम भाई को भी भाई नहीं समझते। हम जातियों में बिभाजित हैं—एक दूसरे से घृणा करते हैं! शत्रु संख्या में कम होकर भी हम पर विजय पाता है;

क्योंकि हम बहुसंख्या में होकर भी एक-रस नहीं, एक अनुशासन में नहीं।

गंभीर—आप तो यहाँ आकर दूसरे हमीर बन गए हैं। अब आप राजा बनने न सही, हमीर जी को मेवाड़ के उद्धार में सहायता देने ही लौट चलिए।

सुजान—मेवाड़ को तो हमीर के रूप में नैया का कर्णधार मिल गया है। वहाँ इस समय मेरी आवश्यकता नहीं है। मैंने दक्षिण प्रदेश को अपना कार्य-क्षेत्र बना लिया है। यहाँ के युवक-समुदाय में एकता और देश-प्रेम का भाव भर रहा हूँ—मुझे विश्वास है कि इसका परिणाम भावी पीढ़ियों के लिए शुभ होगा।

गंभीर—तो मैं यहाँ से निराश लौटूं?

[**उठकर जाने लगता है**]

सुजान—(**उठकर साथ जाते हुए**) मैं आपको निराश नहीं लौटने दूंगा। मैं तुम्हें आशा का प्रकाश दिखाऊँगा। चलिए, मैं आपको दिखाऊँ कि सुजान ने यहाँ क्या किया है! सबल उत्साही क्रान्ति-प्रिय युवकों के सूर्य के समान चमकने वाले चेहरे देखकर आपका हृदय खिल उठेगा। आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि मेरी सेना में केवल क्षत्रिय ही नहीं हैं।

[**दोनों का प्रस्थान।**]

[**पट-परिवर्तन**]

दूसरा दृश्य

स्थान—केलवाड़ा की राज-वाटिका

समय—प्रभात।

[कमला अकेली घूमती हुई गा रही है।]

कमला—(गीत)

आज़ाद उड़ा जाता है, पंछी आज़ाद उड़ा जाता है।
वह अपने घर का है मालिक, वह अपने मन का है राजा।
इन्सानो, बंधन मत मानो, है जीवन का यही तकाजा॥
नई उमंगें, नई जवानी लेकर पर फैलाता है।
आज़ाद उड़ा जाता है, पंछी आज़ाद उड़ा जाता है॥
जिसने दाने डाल लुभाया, जिसने है पिंजरे में डाला।
उस जालिम से प्रीति न पालो, जिसका दिल है अतिशय काला॥
'इस पिंजरे से उड़ो, पंछियो,' प्यारा गीत सुनाता है।
आज़ाद उड़ा जाता है, पंछी आज़ाद उड़ा जाता है॥
मत घबराओ, घिरी घटा जो छाया चारों ओर अँधेरा।
उधर चमकता है आशा का तारा, होगा अभी सबेरा॥
आज़ादी का सपना सच्चा होगा यह बतलाता है।
आज़ाद उड़ा जाता है, पंछी आज़ाद उड़ा जाता है॥

[हमीर का प्रवेश]

हमीर—बस पौ फटी और तुम वाटिका में आईं!

कमला—हाँ, चित्तौड़ में भी मुझे वाटिका में घूमना बहुत प्रिय था। यह लता-पुष्प ही मेरे सूने जीवन के साथी थे।

हमीर—किन्तु यहाँ तो तुम्हारा जीवन सूना नहीं है। तुम्हारा साथी

एक क्षण भी तुम्हें आँखों की ओट नहीं होने देना चाहता।

कमला—तो आप मुझे अपने पिंजरे की मैना बनाए रखना चाहते हो!

हमीर—यह तो उलटा चोर कोतवाल को डाँटने लगा। स्वयं तुमने मुझे अपने पिंजरे का तोता बना लिया है।

कमला—आप मुझ पर व्यर्थ का दोषारोपण करेंगे तो मैं यहाँ से चली जाऊँगी।

[**कमला जाने लगती है। हमीर रोकता है।**]

हमीर—पंछी को घायल करके तड़प-तड़पकर मर जाने के लिए छोड़कर बधिक चला जाना चाहता है?

कमला—जिस व्यक्ति को देश की स्वतन्त्रता के लिए विदेशी सत्ता और स्वदेशी देशद्रोहियों के षड्यन्त्रों से जूझना है उसके मुख से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते।

हमीर—तो तुम समझती हो कि स्वाधीनता के सैनिकों में हृदय के स्थान पर शिला-खण्ड होता है।

कमला—अवश्य ही।

हमीर—और तुम भूलती हो कि शिला-खण्डों में से भी रस-निर्झर फूट पड़ते हैं। कमला, जीवन की स्वाभाविक भूख-प्यास को हम नष्ट नहीं कर सकते। कुछ काल के लिए वे प्रसुप्त भले ही हो जायँ, किन्तु सर्वथा लुप्त नहीं हो सकतीं। तुमने मेरे जीवन में आकर मेरे सोये हुए अनुराग को जाग्रत कर दिया है। मेरी तुम्हारे प्रति अनुरक्ति क्या तुम्हें अच्छी नहीं लगती?

कमला—किस नारी को स्वामी का स्नेह नहीं सुहाता?

हमीर—फिर तुम क्यों अधिक-से-अधिक मुझसे अलग रहने का प्रयत्न करती हो।

कमला—क्योंकि तुम अधिक-से-अधिक मेरे पास रहने का प्रयत्न

करते हो ।

हमीर—इसका अर्थ यह हुआ कि मैं तुमसे अधिक-से-अधिक दूर रहने का यत्न करूँ—तब तुम मेरे पास रहने का यत्न करोगी ।

कमला—नहीं, मैं तो आपको नारी के मोह-जाल से मुक्त करना चाहती हूँ ।

हमीर—तुम मुझसे इतनी जल्दी ऊब गई हो ?

कमला—जन्म-जन्मान्तर तक मैं आपसे नहीं ऊब सकती—किन्तु मैं विवेक-हीन अंधा प्रेम नहीं चाहती । मुझे पाकर आप दुर्दशा-ग्रस्त जन्मभूमि को भूल गए हैं—मैं शीघ्र ही आपको कर्तव्य-पथ पर वापस भेजना चाहती हूँ ।

हमीर—तो तुम समझती हो कि मैं अपना कर्तव्य भूल बैठा हूँ ।

कमला—तभी तो जब सभी मेवाड़ी चित्तौड़-गढ़ पर आक्रमण करने के लिए आतुर हैं, तब आप सुसमय की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

हमीर—कमला, युद्ध का परिणाम तुम्हारे पिता या पति दोनों में से एक का मरण है । दोनों ही दिशाओं में तुम्हारे हृदय पर वज्रपात होगा ।

कमला—मुझे क्या पता था कि मेरा अस्तित्व आपको इतना दुर्बल बना देगा । मैं आपकी दुर्बलता के कारण इस शरीर को ही समाप्त कर दूंगी। **(कमर से बंधी कटार निकालकर कलेजे में घुसाना चाहती है ।)**

हमीर—**(कमला से छुरी छीनते हुए)** छिः वीरांगना होकर क्षणिक आवेश में आत्म-घात करना चाहती हो !

कमला—देश के सर्वनाश का कारण बनने से यह ज्यादा अच्छा है ।

हमीर—विश्वास रखो, हमीर मेवाड़ का सर्वनाश नहीं होने देगा । वह किसी ऐसे मार्ग की खोज में है जिससे तुम्हारे पिता की जीवन-रक्षा भी हो जाय और मेवाड़ से विदेशियों को निकाला भी जा सके ।

कमला—मेरे पिता तो उसी दिन मर गए थे जिस दिन उन्होंने देश-द्रोह किया था । अब उनके जीवन की रक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता ।

भगवान् कृष्ण की आज्ञा है कि धर्म-विरुद्ध चलने वाले आत्मीय स्वजन को भी मार डालने में कोई पाप नहीं है।

हमीर—हमीर इसे समझता है और माताजी ने भी मुझे यही सिखाया है, किन्तु फिर भी मुझे परिस्थितिवश उत्तेजना और उत्साह पर संयम रखना पड़ा है। जब मेरे जीवन पर किसी का उत्तरदायित्व न था, जब मैं मेवाड़ का महाराणा न था, जब मुझ पर देशवासियों की आशाएँ निर्भर न थीं, तब मैं बेधड़क किसी भी भँवर में जीवन की नैया को डाल देने को प्रस्तुत रहता था—लेकिन अब मैं जुआ तो नहीं खेल सकता। मेवाड़ के भाग्य के साथ खिलवाड़ तो नहीं कर सकता।

कमला—प्रयत्न करना मानव के वश में है और फल प्रारब्ध के।

हमीर—बहुत अंशों में यह सही है, फिर भी अच्छी तरह पूरा सोच-विचार करने के पश्चात् उठाया हुआ पग प्रायः सुपरिणामकारी होता है। इस समय हमारे देश की शक्तियाँ विश्रृंखल हो रही हैं। सामन्तों में मेरे प्रति अब भी रोष है। किसी भी समय वे धोखा दे सकते हैं, मैं उन्हें सत्य पर लाने या शक्ति-हीन कर देने का प्रयत्न कर रहा हूँ—इस बीच मैंने यह भी यत्न किया कि तुम्हारे पिता शत्रु का पक्ष छोड़कर हमारा साथ दें। मैंने उनके पास सन्धि का प्रस्ताव भेजा था।

कमला—परिणाम क्या हुआ ?

हमीर—उन्होंने सन्धि-प्रस्ताव को हमारी निर्बलता का प्रमाण समझा। सच बात तो यह है कि स्वतन्त्र रूप से विचार करने की शक्ति ही अब उनमें नहीं है। विदेशी कर्मचारी सदा उन्हें घेरे रहते हैं। रात-दिन शिकार और विलास में फँसाए रखकर उनकी सद्वृत्तियों को दबाए रहते हैं।

कमला—यही तो दुर्भाग्य है। विदेशियों के प्रभाव से बचकर कभी कुछ सोच पाते तो पिताजी कदाचित् अपने पाप का प्रायश्चित्त करने को प्रस्तुत हो जाते, शायद समझ पाते कि देश के हित में ही उनका हित निहित है।

हमीर—उन्हें सद्बुद्धि आ जाती तो मेवाड़ की भूमि को मेवाड़ियों के खून से लाल न होना पड़ता।

कमला—आप आज्ञा दें तो मैं इस रक्त-पात की मात्रा कम करने और मेवाड़ के उद्धार का दिन निकट लाने का प्रयत्न करूँ ?

हमीर—क्या ?

कमला—मैं चित्तौड़ जाना चाहती हूँ।

हमीर—किसी-न-किसी बहाने मुझसे दूर भागना चाहती हो कमला !

कमला—यह बात नहीं। मैंने शत्रु पर भीतर और बाहर दोनों ओर से आक्रमण करने का उपाय सोचा है। चलिए, महल में मैं आपको सब-कुछ बताऊँगी। आइए !

[दोनों का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

स्थान—राजोद्यान ।

समय—सन्ध्या ।

[भूपति और मालदेव का प्रवेश]

भूपति—सुना है कमला जी आई हुई हैं ।

मालदेव—हाँ भूपति, अपने नन्हें शिशु को लेकर वह आई है । बहुत सुन्दर और भोला बालक है । मेरी गोद में आकर जब वह मेरी दाढ़ी-मूंछों से खेलने लगता है तो मेरी क्रूरता न जाने कहाँ तिरोहित हो जाती है ।

भूपति—आखिर आप भावुकता में बह गए । जो कार्य हमीर की तलवार न कर सकी वह नन्हें शिशु ने कर दिया ।

मालदेव—क्या ?

भूपति—आग को ठंडा करने का कार्य । आप भूल गए कि यद्यपि वह शिशु आपका नाती है—फिर भी वह शत्रु का पुत्र है । भविष्य में उसकी तलवार तुम्हारे वंशजों के मस्तक पर तनेगी ।

मालदेव—तो तुम चाहते हो कि मैं मनुष्यता के सम्पूर्ण गुणों को तिलांजलि दे दूँ, एक भोले निरीह शिशु को भी अपना शत्रु समझूँ । उसे कभी गोद में भी न लूँ—उसे अपने घर भी न आने दूँ ।

भूपति—निश्चय ही, कमला जी का अपने शिशु के साथ यहाँ आना रहस्य से खाली नहीं है । आपने उसे राज-महल में प्रवेश देकर अपने ही घर में सेंध लगवाई है । आप तो जानते हैं 'घर का भेदी लंका ढावे' । कमला जी का यहाँ आना आपके सर्वनाश का कारण होगा ।

मालदेव—मेरी पुत्री मेरा सर्वनाश चाहेगी, यह तुम क्या कह रहे हो भूपति !

भूपति—क्यों नहीं, अब वह हमीर की रानी है—सिसोदिया-राज-वंश का हित उसका प्रथम कर्तव्य है ?

[कमला का अपने शिशु को गोद में लिये हुए प्रवेश ।]

कमला—हाँ, सिसोदिया-राज-वंश का हित मेरा प्रथम कर्तव्य है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि अपने पिता के शव पर मैं सिसोदियों के गौरव का राज-महल खड़ा करूँगी ।

भूपति—आपकी इन मधुर बातों से महाराव भले ही भ्रम में पड़ जायँ, लेकिन भूपति इन पर विश्वास करने को तैयार नहीं ।

कमला—क्या तैयार होने लगा ? जिसकी सफलता, समृद्धि और सत्ता के आधार छल, प्रपंच और नीचता के दुर्गुण हैं—जिसका हृदय कलंक से भी काला है, वह बिश्वास शब्द का अर्थ भी नहीं समझ सकता ।

भूपति—मैंने जो कुछ किया है वह केवल अपने महाराव के भले के लिए, और मैं समझता हूँ राजनीति में कोई भी साधन, कोई भी शस्त्र ओछा नहीं कहा जा सकता । सफलता बुराई को भी भलाई बना देती है ।

कमला—उस सफलता को धिक्कार है जो बुराई के आधार पर प्राप्त की गई हो । एक रावण ने भी तो विश्व-भर में विजय का डंका बजाया था, सुरपति ने भी उसकी शक्ति के आगे मस्तक झुकाया था, किन्तु उसकी शक्ति के आधार थे अत्याचार, छल, प्रपंच और भ्रष्टाचार । एक दिन उसे एक वनवासी से पराजित होकर प्राण देने पड़े । मैं पिताजी से यही कहने आई हूँ कि रावण के पथ पर न चलें । अब भी समय है, वह रास्ता बदल दें ।

भूपति—और हमीर के चरणों में मस्तक टेक दें ।

कमला—वह किसी का मस्तक अपने चरणों में नहीं झुकवाना चाहते ।

भूपति—झुकवाना नहीं, काटना चाहते हैं ।

कमला—निश्चय ही जिस मस्तक से स्वार्थ और देश-द्रोह की कुभावनाएँ दूर नहीं होंगी उस मस्तक को वह काट डालना ही पसन्द करेंगे और इसीलिए मैं चाहती हूँ, पिताजी तुम्हारे-जैसे नीच व्यक्तियों की संगति से बचें और उनके साथी बनकर देश को विदेशियों के बन्धन से मुक्त करें।

भूपति—और उनके सेवक बनकर रहें।

कमला—सेवक नहीं, वह तो किसी को भी मेवाड़ का राजा बनाने को प्रस्तुत हैं, किन्तु किसी में राजा, लोक-पालक और लोक-रक्षक बनने की योग्यता होनी चाहिए।

भूपति—और वह योग्यता केवल हमीर में है। उस गँवार किसानिन के छोकरे में है—सम्राट् पृथ्वीराज के वंशज मालदेव में नहीं। कमलाजी, अपना जाल फैलाने का प्रयत्न न कीजिए। जिसके शस्त्रों में अधिक तेज धार होगी, जिसकी भुजाओं में अधिक बल होगा वही चित्तौड़ का राजा होगा।

कमला—बल तो गधे, घोड़े और सूकर में भी होता है, तो क्या वे मनुष्य पर राज्य करने की क्षमता रखते हैं?

भूपति—आप महाराव का अपमान कर रही हैं!

कमला—तुम मुझे उत्तेजित कर रहे हो!

मालदेव—कमला, तुम अन्दर जाओ।

कमला—मैं अन्दर चली जाऊँगी, आप चाहेंगे तो चित्तौड़-गढ़ छोड़कर भी चली जाऊँगी, और यदि मुझे शत्रु समझकर मेरे और इस अबोध शिशु के प्राण लेना चाहेंगे तो उसके लिए भी प्रस्तुत हूँ। भगवान् जानता है कि मैंने सदा ही आपका भला चाहा है—और अपने तथा इस नादान शिशु के प्राणों को खतरे में डालकर भी मैं यहाँ इसलिए आई हूँ कि सिसोदिया और चौहान राज-वंश ही नहीं, मेवाड़ की सम्पूर्ण प्रजा गृह-युद्ध के अभिशाप से बच जाय।

मालदेव—तुझे भय था कि मैं तेरी और इस नादान शिशु की जान

लूँगा ।

कमला—आप नहीं तो आपके ऐसे साथी तो ऐसा कर ही सकते हैं जिन्होंने जहर देकर महाराणा अजयसिंह के प्राण ले लिये, उनसे किस जघन्य कृत्य की आशा नहीं ?

भूपति—क्या मैंने उन्हें जहर दिया ?

कमला—आपने, हाँ, आपने ? बेचारा बाप यही सोचता हुआ मर गया कि पुत्र ने राजगद्दी के लोभ से उनके प्राण ले लिये । और इसी लज्जा से देवता-तुल्य सुजानसिंह को सदा के लिए मेवाड़ छोड़ना पड़ा ।

भूपति—ये सब भाग्य के खेल हैं !

कमला—भाग्य के खेल हैं ! शर्म नहीं आती कहते हुए ! मित्र बनकर किसी के घर में जाना और घर में ही आग लगा देना राजपूतों का स्वभाव तो नहीं है । पुरुषार्थ है तो रण-क्षेत्र में आओ, दो हाथ करो—मरो या मारो ।

भूपति—किससे दो हाथ करूँ ? कोई है लड़ने वाला।

कमला—तुम्हारे-जैसे गीदड़ों के लिए तो मैं ही पर्याप्त हूँ। **(मालदेव की तलवार लेती है, अपने शिशु को गोद से उतार देती है। मालदेव शिशु को उठा लेता है ।)** निकालिए तलवार, विश्वास-घात का पुरस्कार में तुम्हें यहीं दिये देती हूँ ।

भूपति—मैं स्त्री पर शस्त्र नहीं उठाता ।

कमला—धोखे से ज़हर दे सकते हो ! धिक्कार है ! तुम्हारे-जैसे नराधमों को जीने का अधिकार नहीं है । तुम्हीं लोगों ने मेरे पिता को भी राक्षस बना रखा है । मैं उन्हें तुम्हारे-जैसे पातकियों के चंगुल से छुड़ाने आई हूँ ।

भुपति—महाराव आपके सामने ही मेरा अपमान हो रहा है । आप जानते हैं इसका परिणाम क्या हो सकता है ?

मालदेव—बेटी, यह तलवार मुझे दो और अन्दर जाओ ।

[कमला तलवार महाराव को देकर शिशु को उठाकर चली जाती है।]

मालदेव—तुम कमला से तर्क न किया करो।

भूपति—मैं कहता हूँ यह भयानक नागिन है—यह आपको भी डसेगी। सावधान कर देना मेरा कार्य है।

मालदेव—मैं बालक नहीं हूँ। कमला मुझे धोखा नहीं दे सकती। फिर भी मैं साधारण सांसारिक शिष्टाचार भी भूल जाऊँ? यदि मैं पिता-पुत्री के स्नेह को भी तिलांजलि दे दूंगा तो सम्पूर्ण संसार मुझसे घृणा करने लगेगा।

भूपति—आप भूल गए कि हमीर से कमला का विवाह एक राजनीतिक चाल थी। उस चाल को आपने बहुत चतुराई से खेला भी, अनेक सामन्तों को इस विवाह के कारण सिसौदियों के पक्ष से आपने तोड़ भी लिया, किन्तु आप अब फिर दुर्बल हो रहे हैं।

मालदेव—भूपति, तुम मालदेव को अभी तक नहीं समझे हो। मैंने कमला को यहाँ आने दिया है और उसके बच्चे का मुण्डन-संस्कार सिसौदियों के पैतृक देवी के मन्दिर में करने और उसमें हमीर को भी भाग लेने आने की अनुमति दे दी है। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैंने भारत-सम्राट् बनने का स्वप्न छोड़ दिया है।

भूपति—भारत-सम्राट्! स्वप्न तो बहुत बड़ा है।

मालदेव—हाँ, बहुत बड़ा है और इसीलिए मुझे इतना क्रूर और नीच होना पड़ रहा है। भूपति, मेरे साथ महल में चलो, बहुत बातें करनी हैं।

[दोनों का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

चौथा दृश्य

स्थान—गुफा।

समय—रात।

[सुधीरा, दुर्गा और अनेक नवयुवक प्रवेश करते हैं। आगे चलने वाले युवकों के हाथ में जलती हुई मशालें हैं। सब लोग एक बन्द द्वार के सामने पहुँचते हैं। द्वार के बाहर गुफा की छत से लटके हुए घण्टे को दुर्गा बजाती है। सुधीरा द्वार खोलती है। सामने काली की मूर्ति दिखाई देती है।]

सुधीरा—भवानी काली की जय !

सब—भवानी काली की जय !

सुधीरा—मेवाड़ के तेज-पुञ्ज युवक वृन्द ! आज कराला काली के प्रलयंकर लोचनों में नवीन तेज, नवीन ज्योति जगमगा रही है, जो हमें आशा और उत्साह के लोक में ले जा रही है।

एक नवयुवक—माँ, निश्चय ही भवानी काली के दर्शन हमारे प्राणों में नवीन स्फूर्ति का संचार करते हैं—किन्तु वह एक क्षणिक, क्षण-भंगुर चकाचौंध बनकर रह जाती है।

दुर्गा—ऐसा क्यों कहते हो भैया ?

पहला युवक—क्योंकि हम ज्योति, प्रकाश, ज्वाला, आशा और उत्साह के शब्द-मात्र सुन पाते हैं—वास्तविक जीवन में तो घोर अंधकार ही छाया रहता है। न जाने कब ये काली घटाएँ हटेंगी।

सुधीरा—उतावले न बनो युवक ! ये काली घटाएँ तुम्हारे पराक्रम की आँधी से पराजित होकर शीघ्र ही पलायन करेंगी। इतने वर्षों से जो सुख-स्वप्न हमने प्राणों में पाल रखा था, भवानी की कृपा से अब उसके सत्य होने का समय आ गया है।

दूसरा युवक—कहाँ ? हमें तो ऐसा नहीं जान पड़ता।

सुधीरा—यह सब तुम्हारे दृढ़ निश्चय, अनथक प्रयास और बलिदान पर निर्भर है।

दुर्गा—हाँ, हमें इसके लिए युद्ध करना पड़ेगा।

तीसरा—युद्ध ! कितना प्राणदायक शब्द है यह ? हम तो प्रत्येक क्षण रण-दुन्दुभि सुनने के लिए आकुल रहते हैं, भगवान् जाने वह शुभ दिन कब आयगा जब हम देश-द्रोहियों को रण-भूमि में ललकारेंगे ?

चौथा—माँ, अब अधिक प्रतीक्षा असह्य है।

सुधीरा—मैं मेवाड़ी युवकों के गरम खून की वाणी को सुनती हूँ। तुम अनुभव करते थे कि तुम्हारे प्रबल उत्साह को दीर्घ काल से रोका जा रहा है।

पहला—आप अनुभव करती हैं, किन्तु मेवाड़ के महाराणा नहीं।

दूसरा—क्योंकि वह देश-द्रोही मालदेव के जमाई हैं।

दुर्गा—युवक ! तुम अंधे जोश में आकर एक आदर्श वीर का अपमान कर रहे हो। बन्द रखो अपनी जबान !

सुधीरा—नहीं बहन, हमें किसी की जबान बन्द करने का कोई अधिकार नहीं है। देश का शासन जनता की आवाज को दबाने का प्रयत्न न करके उसके सन्देहों को दूर करे, यही उसका कर्तव्य है।

पहला—आप ठीक कहती हैं माताजी ! हम सभी के हृदय में महाराणा जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा है किन्तु हमें आश्चर्य है कि विवाह होने के पश्चात् वह इतने निष्क्रिय क्यों हो गए हैं ?

दूसरा—और हमें सन्देह है कि जिस प्रकार संयोगिता और सम्राट् पृथ्वीराज के प्रेम का परिणाम भारतवर्ष में विदेशियों का प्रभुत्व हुआ उसी प्रकार कमला और महाराणा हमीरसिंह के विवाह का परिणाम मेवाड़ की चिर-दासता के रूप में न भुगतना पड़े।

सुधीरा—मुझे प्रसन्नता है कि तुमने अपनी यह आशंका इतनी निर्भीकता से मेरे सम्मुख रख दी।

दूसरा—माँ, यह तो आपने ही हमें सिखाया है ।

सुधीरा—मेवाड़ को तुम्हारे-जैसे नवयुवकों पर गर्व है, फिर भी मैं कहूँगी कि अभी तुम्हें बहुत कुछ सीखना है । युवकों के अदम्य उत्साह को, सबल भुजाओं को मेरी-जैसी सफेद बालों वाली बुद्धि का अनुशासन भी चाहिए । राजनीति खेल नहीं है—पागलपन नहीं है ! हमें प्रत्येक कदम सोच-समझकर उठाना है ।

तीसरा—क्या अभी तक महाराणा जी कुछ सोच नहीं पाए हैं ?

दुर्गा—दिल्ली के सबल और धूर्त सुलतान अभिमानी मालदेव और उनसे मिले हुए देश-द्रोही सामन्तों की सम्मिलित शक्तियों से जूझकर उन्हें पराजित करना सरल काम नहीं है ।

चौथा—यही सोचकर क्या हम स्वभाग्य-निर्णय के लिए युद्ध न करें ?

सुधीरा—तुम नहीं समझते हो बच्चो, कि मेवाड़ तो स्वाधीनता का युद्ध बराबर लड़ रहा है । तुम भी लड़ रहे हो, मैं भी लड़ रही हूँ—मेवाड़ का बच्चा-बच्चा लड़ रहा है ।

दूसरा—कहाँ ? हमें तो कहीं भी युद्ध दिखाई नहीं देता ।

सुधीरा—सैकड़ों या हजारों सैनिकों का रण-भूमि में जमा होकर एक-दूसरे का गला काटने का ही नाम युद्ध नहीं है । आततायी राज-शक्ति से जनता का सहयोग भी युद्ध का ही अंग है ।

दुर्गा—हाँ, और इसलिए राजमाता जी और मैंने मेवाड़ के गाँव-गाँव में जाकर जनता में यह भावना भरने का प्रयत्न किया है कि किसी भी प्रलोभन अथवा अत्याचार के कारण विदेशियों या उसके कृपा-पात्रों का शासन सहन नहीं करना चाहिए ।

पाँचवाँ—मेवाड़ ने आपके आदेश का पालन भी किया है और मालदेव विस्मित है कि महाराणा जी तो विवाह के पश्चात् पहले की अपेक्षा शान्त हो गए हैं किन्तु जनता उनका प्रभुत्व नहीं मानती ।

दुर्गा—मालदेव कुछ लोगों को जागीरें देकर अपने पक्ष में कर रहा है ।

तीसरा—हाँ, कुछ स्वार्थीजन उसके सहायक भी बन गए हैं।

सुधीरा—यही तो हमारा दुर्भाग्य है कि जिस समय सबका हित विदेशी सत्ता को निर्मूल करने में है उस समय कुछ अदूरदर्शी, स्वार्थी और नीच प्रकृति के व्यक्ति प्रभुता और कंचन की लालसा से देश की पराधीनता की कड़ियों को चिर-स्थायी करने के प्रयास में हैं।

चौथा—हमारी तलवार इन द्रोहियों के मस्तकों को धड़ से अलग कर देगी।

सुधीरा—इस तरह तो देश में गृह-युद्ध छिड़ जायगा। विदेशी शक्ति चाहती भी यही है कि हम विभिन्न दलों में विभक्त होकर परस्पर ही लड़ते रहें। हमें तो अपनी सम्पूर्ण शक्ति मूल शत्रु के विरुद्ध लगानी चाहिए।

चौथा—किन्तु देश-द्रोहियों के नीच कर्म हमें उत्तेजित करते रहते हैं।

सुधीरा—स्वाधीनता के सैनिक को अपना मस्तिष्क शान्त रखना पड़ता है। आत्म-नियन्त्रण, अनुशासन और त्याग की भावनाएँ ही तो हमारी वे शक्तियाँ हैं जो हमें लक्ष्य पर पहुँचायेंगी।

पहला—आपका कहना सत्य है, किन्तु शान्ति को मृत्यु की सीमा तक तो नहीं पहुँचने देना चाहिए। मैं समझता हूँ कि आज भी मेवाड़ में विदेशी सत्ता के समर्थकों की संख्या अधिक नहीं है। आज ही इस काली के मन्दिर से आप रण-भेरी बजा दीजिए; फिर देखिए देश के कितने लाल प्राणों की बाजी लगाने निकल पड़ते हैं।

दूसरा—हाँ, माँ, हमें और प्रतीक्षा असह्य है।

सुधीरा—अच्छी बात है तो तुम्हें और प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। आगामी अष्टमी को हमीर चित्तौड़-गढ़ में प्रवेश करेगा।

दूसरा—उन्हें अपनी ससुराल में जाने से कौन रोकता है।

सुधीरा—वह मालदेव की अनुकम्पा से वीर-बंधुओं के पराक्रम से दुर्ग के द्वार खुलवायगा। वह मालदेव के जमाई के नहीं, बल्कि मेवाड़ के जन-नायक के रूप में वहाँ जायगा। अब तुम्हारा चिर-प्रतीक्षित

परीक्षा-काल आ गया है।

दूसरा—बस यही तो हम चाहते हैं। (काली के हाथ जोड़कर) हे माँ, तुम्हारे चिर-तृषित प्राणों की प्यास अब हम शत्रु-रक्त से बुझायेंगे।

सुधीरा—आज का हमारा यह सम्मेलन माँ काली की स्तुति के साथ समाप्त होना चाहिए।

सब—(गाते हैं)

करालाकाली की जय हो!
भवानी का पाकर वरदान
हमारा जीवन निर्भय हो।
कराला काली की जय हो!
किया असुरों ने अत्याचार,
हाथ में लेकर तब तलवार,
किया तुमने उनका संहार,
वज्र-सी निर्दय निर्भय हो।
कराला काली की जय हो!
बसा जिन आँखों में अनुराग,
उन्हीं में जल उठती है आग,
खेलती हो तुम खूनी फाग,
विश्व को चाहे विस्मय हो।
कराला काली की जय हो!
तुम्हारी आँखों का संकेत,
मिला तो, हम हो गए सचेत,
करेंगे प्राप्त मुक्ति अभिप्रेत,
लड़ेंगे हम निस्संशय हो।
कराला काली की जय हो!

[गाते-गाते सबका प्रस्थान]

[पट-परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—चित्तौड़गढ़ में राजवाटिका ।

समय—प्रभात ।

[कमला अपने नन्हे शिशु को लिये बैठी है । बालक माँ की चोटी के रंगीन फुंदने से खेल रहा है । बूढ़ा माली आता है । उसके एक हाथ में फूलों से भरी चंगेरी और दूसरे में एक सुन्दर गुलदस्ता है ।]

माली—(बालक को गुलदस्ता देते हुए) युवराज ! नकली फूलों से क्या खेलते हो—ये लो असली फूल !

[बालक गुलदस्ता नहीं लेता]

कमला—बालक को वाटिका के फूलों की अपेक्षा माँ की चोटी का फुँदना अधिक प्रिय है ।

माली—(हँसता है) ह: ह: ह: बालक है न ? इसे असली और नकली की पहचान नहीं है । ये फूल भी तो माँ की चोटी के ही फुंदने हैं और इनमें रूप-रंग के साथ सुगन्ध भी है—रस भी है । ये हँसते भी हैं, रोते भी हैं ।

कमला—ये फूल किस माँ की चोटी के फुँदने हैं माली दादा !

माली—लो, बोलो, कैसी भोली बनती हो—जैसे जानती ही नहीं कि अपना देश, अपनी जन्म-भमि, माँ है । उसी माँ की चोटी के ये फुँदने हैं । ठीक कहता हूँ न महारानी जी !

कमला—तुम भी महारानी कहकर मेरी हँसी उड़ाओगे ? चित्तौड़ की तो मैं बेटी हूँ, दादा !

माली—तुम्हारा बूढ़ा माली दादा इस नाते को नहीं मानता । मैं इन युवराज के दादा को भी गुलदस्ते बनाकर दिया करता था । उनके वंशजों के चरण फिर इस वाटिका में पड़ेंगे इसी आशा ने मुझे यहाँ बाँध

रखा है—इसी आशा ने मेरी जर्जर हड्डियों को खड़ा रखा है—नहीं तो यहाँ विदेशियों के लिए हार गूँथने के लिए यह दादा जीवित न रहता।

कमला—ये विदेशी भी तो आदमी हैं, दादा !

माली—आदमी हैं तो आदमी को दास क्यों बनाना चाहते हैं। आदमी मनुष्यों की लाशों पर खड़ा होकर नहीं मुस्कराता। मेवाड़ी सदा स्वतन्त्र रहे हैं—स्वतन्त्र रहेंगे।

कमला—ऐसे विचार केवल तुम्हारे हैं या पिताजी के राज्य में बसन वाले अन्य लोगों के भी हैं।

माली—मैं तो समझता हूँ बेटी, कुछ थोड़े से लोगों को छोड़कर और शेष सभी मेरे-जैसे दीवाने हैं।

कमला—तो दादा, सँभलो, मेवाड़ की मुक्ति की घड़ी आ गई है। राजकुमार का मुण्डन कुलदेवी के मन्दिर में कराने का तो एक बहाना है—में तो असल में मेवाड़ में विद्रोहानल प्रज्वलित करने आई हूँ।

माली—अपने पिता के विरुद्ध !

कमला—अभी तो तुमने कहा था दादा, देश माँ है। माँ के पैरों में बेड़ियाँ पहनानेवाले को क्षमा नहीं किया जा सकता; चाहे वह भाई हो, पिता हो, चाहे पति हो।

माली—पति को भी !

कमला—हाँ पति को भी ! देश-भक्ति पति-प्रेम से भी ऊँचा धर्म है दादा ! एक व्यक्ति के देश-द्रोह का परिणाम हजारों-लाखों-करोड़ों देशवासियों को भुगतना पड़ता है। देश-द्रोही हमारा स्वजन है इस कारण हम उसे क्षमा कर देंगे तो हम भी देश-द्रोही बनेंगे।

माली—देवी कमला !

कमला—दादा, में देवी नहीं एक साधारण नारी हूँ। तुम्हारी गोद में खेली हूँ। आज उच्च कुलाभिमानी क्षत्रिय मुझसे घृणा करते हैं कि पुनर्विवाह करके पाप किया है—लेकिन स्वर्ग में बैठे हुए मेरे प्रथम पति, जिनको देखने का मुझे कभी अवसर भी नहीं मिला, मुझ पर क्रोध नहीं

करते होंगे । मैंने जो कुछ किया है—अपनी माँ के लिए, जन्मभूमि लिए ।

माली—(**चंगेरी के फूल कमला के चरणों में डालता हुआ**) तु साक्षात् स्वतन्त्रता-देवी हो । समस्त मेवाड़ियों की ओर से मैं तुम्हा चरणों में फूल चढ़ाता हूँ ।

कमला—यह क्या किया दादा ! देवता के लिए चयन किये हु सुमन मानवी के चरणों में क्यों चढ़ा दिए ?

माली—प्रस्तर-प्रतिमा में देवता का निवास है तो क्या मानव-मूर्ति में नहीं ?

कमला—व्यक्ति-पूजा, किसी एक मानव पर प्रबल श्रद्धा, मानव पुरुषार्थ को शिथिल करती है दादा !

माली—नहीं बेटी, श्रद्धा से स्फूर्ति मिलती है, निष्क्रियता नहीं ।

[**जाल काका का प्रवेश**

जाल—नमस्ते महारानी जी !

काका—तुम भी हँसा करते हो जाल काका !

जाल—हँसी नहीं कर रहा मैं कमला, बल्कि समस्त मेवाड़ियों हृदय की ध्वनि मेरी मुख रूपी कंदरा से प्रतिध्वनित हो रही है ।

कमला—माली दादा, ये फूल तो तुम्हारी भावुकता ने मानवी चरणों में चढ़ा दिए, देवता के लिए तो अछूते फूल चाहिएँ । तुम्हें फि चयन करने पड़ेंगे ।

माली—हजार बार करूंगा कमला !

[**चंगेरी उठाकर माली चला जाता है**

जाल—और हजार बार ही ये फूल देवता के चरणों से खिसकक मानव के चरणों पर गिरते रहेंगे ।

कमला—क्योंकि मानव में देवता का निवास है ।

जाल—और राक्षस का भी । मानवी में हमीर और कमला भी और मालदेव भी ।

कमला—मानव पत्थर को देवता बना सकता है तो क्या राक्षस को मानव नहीं बना सकता ?

जाल—मानव की कल्पना चेतना-हीन पत्थर में देवता की चैतन्य शक्ति को देखती है, किन्तु चेतनामय मानव की यथार्थ और ठोस दुनिया को वह कल्पना से बदल नहीं सकता । बिच्छू का स्वभाव है डंक मारना, मानव उसकी आदत को नहीं छुड़ा सकता ।

कमला—तो क्या पिताजी सही रास्ते पर नहीं आयँगे ?

जाल—नहीं, बल्कि वह हम से और भी छल कर रहे हैं । उन्होंने तुम से कहा है—महाराणा जी को राजकुमार के मुण्डन-संस्कार के शुभ अवसर पर आने दो और स्वयं दिल्ली इसलिए गए हैं कि वहाँ से अधिक सेना लेकर आयें । महाराणा को दुर्ग में प्रवेश करते ही बंदी बना लें और जनता विद्रोह करे तो विदेशी सैनिकों के बल से दबा दें ।

कमला—तब हमें महाराणा जी को यहाँ आने से रोकना चाहिए और स्वयं भी दुर्ग के बाहर जाने का प्रबन्ध करना चाहिए !

जाल—कमला, तुम भूलती हो कि तुम चित्तौड़-दुर्ग में बंदिनी हो।

कमला—मैं बंदिनी हूँ !

जाल—हाँ, राजमहल में रहते हुए भी तुम स्वतन्त्र नहीं हो, और राजमहल से बन्दीगृह में किस समय पहुँचा दिया जाय इसका भी पता नहीं ।

कमला—तब राजकुमार का क्या होगा ?

जाल—मैं राजकुमार को ले जाऊँगा और उनकी रक्षा का प्रबन्ध कर दूंगा ।

कमला—तब मुझे कोई चिन्ता नहीं है । जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं तब तक कोई बन्दीगृह में नहीं ले जा सकता । मेवाड़ में एक बार फिर चंडिका के दर्शन होंगे ।

जाल—किन्तु तुम्हारे इस बूढ़े काका की प्रार्थना है कि लम्बी लपलपाती जीभ वाली काली बनने में नारी का सौन्दर्य नहीं है । अभी

तुम्हें लक्ष्मी ही रहना चाहिए । तुम्हें यदि बन्दीगृह में डाला जाय तो चुपचाप स्वीकार कर लेना । मुझे विश्वास है महाराणा हमीर के पुरुषार्थ के आघात से बन्दीगृह के सीखचे अपने-आप टूट जायँगे ।

कमला—किन्तु ......

जाल—किन्तु कुछ नहीं, तुम मुझ पर विश्वास करो । चलो अन्दर चलो—मैं तुम्हें सब-कुछ बताऊँगा । मैंने तुम्हारी रक्षा की योजना बना ली है ।

[दोनों का प्रस्थान ।]

[पट-परिवर्तन]

छठा दृश्य

स्थान--चित्तौड़गढ़ के निकट जंगल में पगडण्डी ।

समय--रात ।

[हमीरसिंह और दलपति रण-साज से सज्जित चले आ रहे हैं ।]

हमीर--आज मेरे जीवन-स्वप्न के सत्य होने का दिन आ गया है । एक अज्ञात शक्ति मुझे शीघ्रता से चित्तौड़गढ़ की ओर खींचकर लिये जा रही है ।

दलपति—और मेरी भुजाएँ भी फड़क रही हैं । जब विदेशी सैनिकों को मैं मेवाड़-भूमि पर इठलाते हुए चलते देखता था तब मुझे जान पड़ता था जैसे कोई मेरी माँ के वक्षस्थल पर पाँव रख रहा है । मेरी आँखों में खून उतर आता था, जी चाहता था अभी उनसे भिड़ जाऊँ । दो-चार को यम-लोक पहुँचाकर स्वयं भी उनका अनुसरण करूँ ।

हमीर—सच है दलपति, जन्मभूमि का अपमान किसकी निर्लज्ज आँखें देखना पसन्द करेंगी ? जन्मभूमि के उपकार तो हमारे ऊपर जीवन के उपकारों की अपेक्षा भी अधिक हैं । वह हमें जीवन-भर पय-पान कराती है । जन्म से मृत्यु-पर्यन्त वह हमें अपनी वात्सल्यमयी गोद में लिये रहती है ।

दलपति—किन्तु महाराणा जी···

हमीर—देखो दलपति, तुमने मेरा फिर अपमान किया ।

दलपति--मैंने आपका अपमान । क्या मैं ऐसा मूर्ख हूँ कि अपने ही मस्तक पर आघात करूँगा ?

हमीर—तुमने मेरे हृदय पर आघात किया है ।

दलपति—यह आप क्या कह रहे हैं—आपको किसी ने बहकाया है ।

हमीर--बहकाया नहीं है; मैंने अपने कानों से तुम्हें मुझे गाली

देते सुना है।

दलपति—नहीं, आपको भ्रम हुआ है। जरूर ही इसमें शत्रु का षड्यन्त्र है। वह हमें अलग कर देना चाहता है। अगर हम अलग हुए तो मेवाड़ में दो दल हो जायँगे। एक राजपूतों का, एक भीलों का। इस गृह-कलह की ज्वाला में मेवाड़ की स्वाधीनता का सुख-स्वप्न जलकर राख हो जायगा।

हमीर—लेकिन दलपति इसमें शत्रु का कोई अपराध नहीं है। तुम ही मुझे अलग कर देना चाहते हो।

दलपति—(**आश्चर्य से**) यह आपसे किसने कहा ?

हमीर—तुम्हारे कार्यों ने, तुम्हारे शब्दों ने !

दलपति—(**क्रोध सहित**) प्रभुता पाकर सम्भवत: आपका मस्तक भ्रान्त हो गया है।

हमीर—मेरा नहीं दलपति तुम्हारा !

दलपति—(**अपनी तलवार हमीर के चरणों में रखकर**) तो इस भ्रान्त मस्तक को अपने हाथ से काटकर फेंकिए। कहीं यह मातृभूमि के स्वाधीनता-संग्राम में बाधक न बन जाय। मैं नहीं जानता कि किस कारण तुम्हें मुझ पर सन्देह हुआ है; मैं भाई-भाई की लड़ाई को देश के सर्वनाश का कारण नहीं बनने दूंगा। मैं अपने प्राणों की आहुति दूंगा।

हमीर—(**दलपति को गले लगाकर**) मैंने तुम्हें माफ कर दिया।

दलपति—(**विस्मय से**) माफ कर दिया !

हमीर—हाँ, क्योंकि तुमने मुझे भाई कहा है।

दलपति—लेकिन मैंने अपराध क्या किया है ?

हमीर—यही कि महाराणा कहा।

दलपति—हः हः हः !

हमीर—हः हः हः ! (**दोनों खुलकर हँसते हैं। पीछे से दुर्गा आती है।**)

दुर्गा—हँसने वालो सँभल जाओ, आगे ज्वाला का समुद्र है।

दलपति—माँ !

दुर्गा—चुप रहो सैनिक, तुम्हारे सामने माँ नहीं मेवाड़ की गुप्तचर है ।

हमीर—तो गुप्तचर क्या समाचार लाया है ?

दुर्गा—समाचार उत्साहवर्धक नहीं है । शत्रु हमारे षड्यन्त्र से परिचित हो गया है और स्वयं हम पर जाल बिछाने में निरत है ।

दलपति—(शंकित होकर) कैसा जाल माँ !

दुर्गा—वह चाहता है कि राजकुमार का मुण्डन-संस्कार सम्पन्न करने के लिए आपको आने दिया जाय, किन्तु जैसे ही आप दुर्ग में प्रवेश करें आप कर आक्रमण पर दिया जाय ।

हमीर—एक तरह से तो अच्छा ही हुआ काकी ! अब हमें अपना बाहु-बल परखने का अवसर मिलेगा । स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए जब तक रक्त-दान न हो, रणचंडी न चेते, काली का खप्पर न भरे; तब तक उसका मोल मानव नहीं समझ पाता और उसकी सार-सँभाल करने में भूल करके उसे शीघ्र ही गँवा देता है ।

दलपति—यह तो ठीक है, लेकिन यह भी सोचा आपने कि इससे दुर्ग के भीतर महारानी जी की क्या स्थिति होगी ?

हमीर—अब इस बात को सोचने का कुछ परिणाम नहीं निकलेगा । वह क्षत्रिय-बाला है । वह अपना कर्तव्य समझती है ।

दुर्गा—वह अपना कर्तव्य समझती हैं और अपना कर्तव्य कर रही हैं । यद्यपि शत्रु की आंखें उन पर हैं, वह उनके जीवन का ग्राहक बना हुआ, है किन्तु वह गढ़ में नितान्त अकेली नहीं हैं । उनके उन समर्थकों की संख्या कम नहीं है जो उचित समय पर विद्रोह करने के लिए प्रस्तुत हैं ।

दलपति—यह ठीक है माँ ! लेकिन विलम्ब करना हमारे लिए घातक होगा ।

हमीर—निश्चय ही हमें तुरन्त आगे बढ़ना चाहिए ।

[**सुजानसिंह का प्रवेश**]

सुजान—आगे तो बढ़ना चाहते हो किन्तु यह नहीं जानते कि शत्रु तुम्हारे पीछे ही मौजूद है ।

हमीर—कौन, भैया सुजानसिंह तुम भी आ गए हो ?

सुजान—हाँ, मैं आ गया हूँ और मेरे साथ जान पर खेलने वाले नौजवानों की सेना भी है। तुम यह न समझो कि तुम्हारा मार्ग निष्कंटक है ।

दलपति—तो आप स्वाधीनता के मार्ग में काँटे बिछाने आए हैं ?

सुजान—हः हः हः काँटे बिछाने नहीं, अपने अधिकार के लिए संग्राम करने आया हूँ ।

हमीर—भैया, हमीर तो तुम्हें हर तरह का अधिकार देने को प्रस्तुत है । संग्राम करने की तुम्हें आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी ।

सुजान—तुम्हारे न चाहने से ही क्या संग्राम टल जायगा ?

दुर्गा—कितने दुर्भाग्य की बात है सुजानसिंह जी, जब स्वाधीनता-संग्राम में आपको महाराणा का दाहिना हाथ बनना चाहिए था तब आप उनकी पीठ में छुरा भोंकने आए हैं !

सुजान—छुरा भोंकने में जरूर आया हूँ किन्तु पीठ में नहीं, छाती में । मैं क्षत्रिय हूँ ? ऐसी कायरता नहीं करूँगा। सिसोदिया-वंश के नाम को कलंकित नहीं करूँगा ।

दुर्गा—भाई भाई का रक्त बहायगा तो क्या मेवाड़ का इतिहास कलंकित नहीं होगा, सुजानसिंह जी !

सुजानसिंह—हः हः हः भाई भाई का रक्त बहायगा ? खूब समझा है आप लोगों ने सुजानसिंह को ! सुजानसिंह खून बहायगा—भाई का नहीं—भाई के मेवाड़ के शत्रुओं का ।

दुर्गा—सुजानसिंह की जय !

सुजान—सुजानसिंह की नहीं मेवाड़ की जय बोलो काकी !

दुर्गा—निश्चय ही जब बिछुड़े बन्धु मिल गए हैं तो मेवाड़ की जय होगी ।

सुजान--तो भैया हमीर, मैं तुमसे विदा माँगता हूँ, मेरा कर्तव्य मुझे दूसरी जगह बुला रहा है।

हमीर--दूसरी जगह ?

सुजान--हाँ, दूसरी जगह। तुम्हें शायद मालम नहीं कि मालदेव दिल्ली से एक बड़ी सेना लेकर लौटे हैं और पीछे से मेवाड़ी सेना पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं। मैं जाकर उन्हें मार्ग में ही रोकता हूँ और तुम चित्तौड़-दुर्ग में प्रवेश करने का प्रयत्न करो। भगवान् एकलिंग जी की कृपा से हमें विजय प्राप्त होगी।

हमीर--अच्छी बात है। भगवान् एकलिंग जी की कृपा से हम फिर मिलेंगे।

[सुजानसिंह का एक तरफ और दूसरी तरफ शेष सभी का प्रस्थान।]

[पट-परिवर्तन]

सातवाँ दृश्य

स्थान—कारागार ।

समय—रात ।

[**कमला सीखचों के पास खड़ी बाहर की तरफ देख रही है । प्रहरी सीखचों के बाहर खड़ा है ।**]

कमला—तुम्हारा नाम क्या है प्रहरी ?

सैनिक—राजकुमारीजी, मुझे बलवीरसिंह कहते हैं ।

कमला—कितना अच्छा नाम है तुम्हारा ! तुम में बल भी है, वीर भी हो तुम और सिंह हो तुम ! लेकिन इसके साथ ही विवेक भी होता तो क्या बात थी !

सैनिक—विवेक क्या ?

कमला—हाय हाय, विवेक का अर्थ भी नहीं समझते ! कैसा अभागा है यह देश ! भोले बलवीर, क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे हाथ में तलवार किस लिए है ?

सैनिक—हाँ, हाँ, जानता हूँ । यह तलवार शत्रु से लोहा लेने के लिए है ?

कमला—शत्रु कौन है ?

सैनिक—जो हमारा या हमारे राजा का अपमान करे क्या वह शत्रु नहीं है !

कमला—क्यों नहीं । पर तुम्हारा राजा विदेशियों से मिलकर स्वार्थवश तुम्हारे देश का अपमान कर रहा है, क्या वह तुम्हारा शत्रु नहीं है ?

सैनिक—वह तो राजा है । राजा तो भगवान् का अवतार है ।

कमला—यही अंधविश्वास अनर्थ की जड़ है । राजा भी तुम्हारी

तरह साधारण मनुष्य है—अगर वह भूल करे तो जनता-जनार्दन को अधिकार है कि उसे दण्ड दे।

सैनिक—हरे राम, यह क्या कहती है आप ! हम उनका नमक खाते हैं।

कमला—नमक खाते हो तो अपनी आत्मा को बेचने के लिए नहीं, और तुम यह भी नहीं जानते कि राजा के पास उसका अपना क्या है। प्रजा की गाढ़े पसीने की अर्जित सम्पत्ति उसके पास आती है। वह तुम्हारी वस्तु तुमको देकर तुम पर कोई उपकार नहीं करता। राजा प्रजा का सेवक बनकर रहे तभी उसे आसन पर बैठने का अधिकार है, प्रजा का स्वामी बनकर नहीं। जो राजा प्रजा के अधिकारों और इच्छाओं की अवहेलना करता है, वह तो मनुष्यता का शत्रु है।

सैनिक—राजकुमारी जी, राजा की भलाई-बुराई देखना हमारा काम नहीं है।

कमला—तुम्हारा काम क्यों नहीं है ! राजा के कार्यों का प्रभाव संपूर्ण देश पर पड़ता है। तुम देख ही रहे हो कि महाराव के कारण मेवाड़ में मेवाड़ी प्रजा पर विदेशी सैनिक और कर्मचारी मनमाने अत्याचार कर रहे हैं। हमारी जन्मभूमि एक व्यक्ति की भूल से दासता के बन्धनों में जकड़ी हुई है। हमारा कर्तव्य है कि दासता के मूल कारण को हम समाप्त कर दें।

सैनिक—अर्थात् महाराव को !

कमला—निश्चय ही !

सैनिक—वे आपके पिता हैं !

कमला—और जन्मभूमि हमारी माँ है ! मेरे पिताजी की भी माँ है ! उन्हें अपनी माँ के सम्मान की भी परवाह नहीं है तो मुझे उनकी क्यों होनी चाहिए ?

सैनिक—धन्य हो राजकुमारीजी, आज आपने मुझे नया रास्ता दिखाया। सचमुच देश-द्रोही और अत्याचारी राजा का साथ देकर मैंने घोर पाप किया है, मैं इसका प्रायश्चित्त करूँगा। मैं इस कारागार के

द्वार मुक्त करता हूँ।

[द्वार खोलने लगता है, इतने में जाल आता है।]

जाल—सैनिक, तुम राज-द्रोह कर रहे हो, तुम्हें प्राण-दण्ड दिया जायगा।

[सैनिक आश्चर्य से जाल को देखता है।]

राजकुमारी—जाल काका, यह तुम क्या कह रहे हो ?

जाल—जो महाराव मालदेव का नमक खाने वाले को कहना चाहिए।

राजकुमारी—क्या महाराव ने कोई बड़ी जागीर आपके नाम लिख दी है ?

जाल—हाँ, यही तो बात है। मैं तो बनिया आदमी हूँ। बोल, तू महाराव से बड़ी जागीर देने का वचन दे तो मैं तेरा साथ दे सकता हूँ।

राजकुमारी—धिक्कार है तुमको काकाजी !

जाल—(ज़ोर से हँसता है) हः हः हः ! अरी कमला, इस बूढ़े बनिये को समझना तेरे-जैसी भोली बच्चियों का काम नहीं है।

[नेपथ्य में आवाजें आती हैं। मेवाड़ की जय ! महाराणा हमीरसिंह की जय !]

कमला—यह मैं क्या सुन रही हूँ ?

जाल—वही, जिसे सुनने के लिए मेवाड़ की प्रजा वर्षों से व्याकुल थी।

कमला—क्या सचमुच हमारी विजय हुई ?

जाल—क्यों नहीं होती ? हमीर के बल-पराक्रम का सामना कौन कर सकता है ? मैंने उन्हें युद्ध-भूमि में यम का अवतार बने देखा है। बिजली की भाँति उनकी तलवार चल रही थी। वह अपनी सेना में सबसे आगे थे और शत्रुओं को इस तरह काटते चले आ रहे थे, जैसे कोई

खेत काटता हूँ।

कमला—आज मुझे जीवन का चरम सुख प्राप्त हुआ है।

[**हमीरसिंह और सुजानसिंह का प्रवेश।**]

हमीर—सैनिक, कारागार के द्वार खोल दो!

[**सैनिक द्वार खोलता है। कमला आगे बढ़कर हमीर के पैर छूती है। हमीर कमला को हाथ पकड़कर उठा लेता है।**]

हमीर—अपने जेठ राजकुमार सुजानसिंहजी के चरण छुओ, जिनके त्याग और पराक्रम का ही परिणाम है कि केवल तुम ही इन सीखचों के बाहर नहीं आई हो, बल्कि देश भी बंधन-मुक्त हो गया है।

[**कमला सुजानसिंह के चरण छूती है।**]

सुजान—सुखी रहो, मेवाड़ की स्फूर्ति बनकर युग-युग तक जियो।

हमीर—भैया, मेवाड़ तुम्हारे उपकार को कभी न भूलेगा। तुमने दिल्ली की सेना को मार्ग में ही न रोक लिया होता तो हमें यह शुभ दिन देखने को नहीं मिलता। आज मेरा सुख-स्वप्न सत्य हो गया है।

सुजान—तुम्हारा सुख-स्वप्न तो चरितार्थ हो गया, किन्तु मेरा स्वप्न अभी अन्धकार की ओट में छिपा हुआ है। उसे प्रकाश में लाने के लिए मुझे साधना करनी होगी—अब मुझे विदा दो, भैया!

हमीर—क्या है तुम्हारा वह स्वप्न भैया?

सुजान—मेरा स्वप्न है जातियों की सीमाओं को तोड़कर मानवता का निर्माण, प्रांतीयता की दीवारों को गिराकर राष्ट्रीयता की स्थापना। आज मेवाड़ स्वतन्त्र हो गया है किन्तु उसे याद रखना चाहिए कि वह सम्पूर्ण भारत का अंश है और जब तक भारत के एक भी कोने पर विदेशियों का अस्तित्व है उसकी स्वाधीनता अधूरी है।

[**दलपति का मालदेव को बंदी बनाए हुए प्रवेश**]

कमला––पिताजी ! **(मालदेव के पैरों में गिर जाती है ।)**

मालदेव––उठो बेटी, पापी के पैरों में पड़कर अपने-आपको अपवित्र न करो ।

हमीर––**(दलपति से)** महाराव को बन्धन-मुक्त कर दो !

[**दलपति आश्चर्य से हमीर की तरफ देखता है ।**]

हमीर––हमारा किसी व्यक्ति से वैर नहीं है दलपति ! आज हमारा देश स्वाधीन हो गया है तो इन्हें भी इस ख़ुशी में भाग लेने दो ।

मालदेव––हमीर, तुम मुझे उपकार की तलवार से मार डालना चाहते हो !

हमीर––नहीं महाराव ! मैं आपको जीवित करना चाहता हूँ । आपको वंशाभिमान के अतिरेक ने पथ-भ्रष्ट कर दिया था, किन्तु हमें जानना चाहिए देश तो जाति, वंश और सभी सांसारिक वस्तुओं से ऊँचा है । उसकी मान-रक्षा के लिए हमें सर्वस्व बलिदान करना चाहिए ।

मालदेव––धन्य हो हमीर, तुमने मेवाड़ का ही नहीं, मेरा भी उद्धार कर दिया ।

सुजान––तो भैया, मुझे अब विदा दो ।

हमीर––भैया ! तुम मेवाड़ को छोड़ जाओगे ?

सुजान––हाँ, मुझे जाना ही होगा । मैंने दक्षिण के पार्वत्य-प्रदेश में साधना का दीपक जलाया है, वह बुझ न जाय इसलिए मुझे जाना ही होगा । वैसे मेरा शरीर मेवाड़ की मिट्टी से बना है और मेवाड़ के संकट में वह सदा प्रस्तुत रहेगा ।

हमीर––तो आओ भैया, विदा होने के पहले हम फिर गले मिल लें ।

[**हमीर और सुजानसिंह गले मिलते हैं**]

जाल––संसार देखे कि देश के नाम पर बिछुड़े बन्धु इस तरह मिलते हैं ।

[**पटाक्षेप**]